वीतराग शासन जयवंत हो

बिन खिले मुरझा गये

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **बिन खिले मुरझा गये**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज

संस्करण - तृतीय-2024 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनिश्री विशालसागर महाराज, मुनिश्री विभोरसागर जी
मुनिश्री विलक्ष्यसागर महाराज, मुनिश्री विपिनसागर जी

सहयोग - आर्यिका भक्तिभारती माता जी, क्षु.वात्सल्य भारती माता

संपादन कंपोजिंग - ब्र. आस्था दीदी 9660996425

ब्र. प्रदीप भैया-7568840873

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन पी 958, शांतिनगर जयपुर 94113336017

2. श्री नीरज जैन लखनऊ 9451251308

3. विशद साहित्य केन्द्र रेवाड़ी-9812502062

4. हरीश जैन विश्वासनगर दिल्ली 9136248971

5. नीरज जैन लखनउ 9451251308

6. राजेश जैन खकरोट वाले अंजनीनगर इंदौर 9425316970

पुण्यार्जक

श्रीमती सुलोचना देवी जैन
पुत्र अजय कुमार जैन, पुत्रवधू लक्ष्मी जैन
पौत्र वैभव जैन, बरखा जैन,
पडपौत्र-विशुद्ध, विशिष्ट जैन बाराबंकी

पढ़ो और बढ़ो

मोहेन संवृतं ज्ञानं, स्वभावं लभते न हि।
मत्ता पुमान परमार्थानां, यथा मदन कोद्रवैः।।

मोह से आवृत ज्ञान स्वभाव को प्राप्त कराने में असमर्थ होता है। जिस प्रकार मत्त पुरुष वस्तु तत्त्व का विचार नहीं कर पाता है। आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने इष्टोपदेश ग्रंथ में मोह की यथार्थता का दिग्दर्शन कराते हुए इंसान को जाग्रत करने की प्रेरणा दी है। मोह का नशा व्यक्ति को स्वयं से दूर करता है। जब तक इंसान की मोह–निद्रा नहीं टूटती है तब तक स्वयं से बेहोश होकर पडा रहता है, वह मोह जब भी टूटेगा तो आप्तागम तपोभृत के श्रद्धान से या भेद विज्ञान से ही टूटता है। हमारे पास आराध्य अर्हंत भगवान भी संसार के चक्र में अनंत काल तक भ्रमण किए हैं। जीवन को प्राप्त करके भोगों के क्रिया कलापों में जीवन व्यतीत होता रहा। कभी कदाचित् संत भगवंत का दर्श प्राप्त हुआ। एक ज्ञान की किरण जागी भी किंतु उनसे दूर हटते ही वह भी समाप्त हो गई। कभी कोई ज्ञान कली खिलने को हुई भी किंतु भोग रोग में पड़कर वह भी लुप्त हो गई, वह भी मुरझा गई। कहावत सिद्ध है **''बिन खिले मुरझा गये''** देखा जाता है बीज जब खेत में पड़ते हैं तो कितने में अंकुर भी नहीं निकल पाते वही सड़ जाते कितने हैं जो किसी आपात स्थिति में नष्ट हो जाते है। कुछ हैं जो वृक्ष बनते हैं जिनमें कलियाँ लगती है जो खिलने को आतुर होतीं हैं किंतु उन्हें भी खाद्य पानी प्राप्त न हो तो या किसी रोगों के कारण वे कलियाँ भी मुरझा जाती हैं।

इंसान के जीवन में कभी ऐसे पल आते जब इंसान अपने जीवन में धर्म के हेतु मिलने पर भी कल्याण मार्ग पर अग्रसर नहीं हो पाते। कहा भी है– **''माँ के गरभ में कौल किया था नाम रटूँगा** मैं तेरा। इस झूठे संसार में फँस के भूल गया प्रभु नाम तेरा''।। अर्थात् इंसान कल्याण पथ पर अग्रसर होना चाहता है किंतु विभिन्न कारणों से वंचित हो जाता है उनके लिए यह लघु कृति''बिन खिले मुरझा गये''श्रेष्ठ आलंबन प्रदान करेगी। संसार में रहकर हमें कैसे जीवन व्यतीत करना है जो हमारे लिए इस भव और परभव में सुखद जीवन को प्रदान कर विशद जीवन मंगल कर

आचार्य विशद सागर

श्रुत पंचमी 23.5.23 बुधवार

मेरा भारत महान्

भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा–''मेरा भारत महान् है''। यह पूर्णतः सत्य है कि मेरा भारत महान् है। वह अपनी विशालता के कारण नहीं, अपनी दिव्यता के कारण महान् है। आर्य सभ्यता और उच्चादर्शों के कारण महान् है। अपने उदात्त चिंतन''जियो और जीने दो'',कण–कण में भगवान है।''वसुधैव कुटुंबकम्''की धारणा के कारण महान् है। वैसे तो कई देश भारत से अधिक विस्तीर्ण देश हैं, अधिक समृद्ध देश हैं, भारत से अधिक शक्तिशाली और बलशाली देश भी हैं किंतु महानता प्राप्त नहीं। महानता में सर्व प्रथम भारत का नाम आता है। क्यों? इसलिए कि भारत देवभूमि है, पुण्यभूमि है, अवतारभूमि है,तीर्थंकर भूमि है, कल्याणक भूमि है, साधना भूमि है। भारत भूमि का ऐसा कोई स्थान नहीं, कोई ऐसा भूभाग नहीं, जहाँ पर किसी तीर्थंकर या सिद्धपुरुष ने जन्म न लिया हो या जहाँ पर अपना गमन नहीं किया हो। ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ पर किसी अवतारी पुरुष ने किसी ऋषि, मुनि, संत ने जन्म नहीं लिया हो या अपनी साधना नहीं की हो। ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ पर तीर्थ का निर्माण या यज्ञादि धर्म का अनुष्ठान नहीं हुआ हो।

भारत के लिए माँ कहा गया है, इसका कारण यह है कि आज तक जितने भी तीर्थंकर अवतारी सिद्धपुरुष हुए हैं, उन सभी को भारत माँ की गोद में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भारत में रहने वाला भगवान बनने की भावना से उनकी अर्चा तो करता ही है। प्रत्येक भगवान बनने वाला जीव भी भारत में ही जन्म लेना पसंद करता है। उसका मुख्य कारण है भारत की आर्य सभ्यता। भारत में दो प्रकार के लोग हैं, कुछ आर्य तो कुछ म्लेच्छ। आर्य– जिनका खान–पान, रहन–सहन अच्छा हो वे आर्य कहे जाते हैं। अच्छा का अर्थ यह नहीं कि सुंदर, चमकदार, बेशकीमती हो। आज की दुनियाँ इसी के लिए अच्छा मान रही है।

यदि बेशकीमती, सुंदर, चमकदार को अच्छा कहा जाए तो अंग्रेज लोग सभी आर्य कहे जायेंगे जबकि उन्हें म्लेच्छ कहा गया है,क्योंकि उनका रहन–सहन अच्छा नहीं होता है। अच्छा रहन–सहन वह है,जहाँ

इंसान शील का पालन करें, अहिंसक कार्य एवं व्यर्थ के कार्यों से अधिक परमार्थ के लिए जिएँ, वह आर्य हैं। म्लेच्छ – जो महीनों स्नान नहीं करते, हिंसक एवं मादक भोजन करते, शील आदि नाम की चीज नहीं जानते। एक स्त्री कई पुरुषों से शादी करले। एक पुरुष कई तलाक–शुदा स्त्रियों से भोग करे। आत्मा तथा परमात्मा नाम से भी अपरिचित रहें, उन्हें म्लेच्छ कहा जाता है।

भारत देश इसलिए महान् है, इतिहास साक्षी है कि राम जैसे महापुरुष वन में भी महल की तरह और भरत महल में भी वन की तरह जिए हैं। भारत इसलिए भी महान् है कि कई सतियों ने पति के बिना ही धर्म और परमात्मा को स्मरण किया। उस समय कोई न कोई परमात्मा का भक्त आया और शील की रक्षा की। भारत इसलिए महान् है कि ऐसे त्यागी पुरुषों ने जन्म लिया कि तीन दिन बाद घास की रोटी प्राप्त हुई और किसी भूखे को देखकर वह भी उन्हें दे दी। अरे! ऐसे महापुरुषों ने भारतभूमि पर जन्म लिया, जिन्होंने जीता हुआ राज्य भी वापिस कर दिया। चाहे बाहुबली ने भरत को, राम ने विभीषण को देकर सन्यास धारण किया। पाकिस्तान ने श्रीनगर आदि क्षेत्रों पर कब्जा प्राप्त कर भी वापिस कर दिया।

भारतभूमि ऐसे रत्नों से पूर्ण रही, जहाँ सत्य और क्षमाशील लोगों ने जन्म लिया महात्मा गाँधी जैसे लोगों को एक गाल पर चाँटा मारा तो दूसरा गाल आगे कर दिया। पार्श्वनाथ पर पत्थर बरसे, गजकुमार के सिर पर जलती हुई सिगड़ी रख दी गई, फिर भी उनका प्रतिकार नहीं किया।

भारत भूमि ऐसे रत्नों से भरी है, जहाँ स्वयं प्राण देकर औरों के प्राणों की रक्षा की गई। निकलंक ने धर्म की रक्षा हेतु भाई को बचाने के लिए स्वयं अपने प्राणों की परवाह नहीं की। इंसान तो ठीक शूकर जैसे जीव ने मुनिराज की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे।

भारत देश इसलिए महान् है कि यहाँ श्रवणकुमार जैसे महापुरुष हुए जिन्होंने अंधे माता–पिता की सेवा में सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। उनके लिए तीर्थयात्रा कराने के लिए अपने कंधे पर कावड़ रखकर सारे देश की यात्रा करा डाली। राजा हरिश्चंद्र जैसे महामनः राजाओं ने सत्य की रक्षा के लिए स्वयं ही नहीं सारे परिवार को बेचकर सत्य की रक्षा की, चाण्डाल

के घर में नौकरी कर ली सत्य की रक्षा के लिए। जिस सिर पर मुकुट सुशोभित होता था उस पर काला घड़ा रखकर श्मशान की शोभा बढ़ाई, इसलिए भारत महान् है।

भारतभूमि भोग नहीं योग भूमि रही है, यहाँ पर गृह में रहकर भी योगी बनकर रहे। राजा जनक को, सम्राट भरत को लोग कहते हैं घर में रहकर वैरागी रहे तथा इससे बड़े और वैरागी कौन हो सकते हैं। जो विजय सेठ ने शुक्ल पक्ष और विजया सेठानी ने कृष्ण पक्ष का ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर पति–पत्नि साथ रहकर भी जीवन पर्यंत इंद्रिय विषय सुख से दूर रहकर व्रत का पालन किया।

भारत में ऐसे महापुरुष हुए कि कोई कामुक कुटिल स्त्री कहती कि मैं आपके समान पुत्र चाहती तो वह उसके पैर पकड़ लेते हैं कि आज से मैं आपका पुत्र हुआ और माँ की भाँति सेवा की।

भारत इसलिए महान् है कि यहाँ सर्वधर्म समवाय का वातावरण है। एक धर्मानुयायी दूसरे के साथ भारत की रक्षा में कई सपूतों ने प्राण की बाजी लगा दी। भारत इन्हीं सपूतों और महामनः मनीषियों के सत्कर्मों के कारण, आदर्शों का महाकुंभ कहा गया है। अमृतकुंभ माना गया है और भारतवासी अमृतपुत्र, आदर्श पुत्र विश्व में सर्वोच्च हैं, श्रेष्ठ हैं।

भगवान महावीर, राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी इत्यादि को सिर झुकाने वाले, उनके आदर्शों को अपना जीवन मानने वाले आज भी लाखों करोड़ों लोग हैं। हमारी संस्कृति और परंपरा हमेशा महान् रही है किंतु आज पाश्चात्य सभ्यता की अंधी दौड़ में एवं भोगों की चकाचौंध में इंसान के जीवन–मूल्यों और आदर्शों का क्षरण अति तेजी से हो रहा है। इंसान भारत और उसके आदर्शों की प्रशंसा तो करता है। प्रशंसा सुनकर फूल भी जाता है किंतु कई स्थानों पर देखा जाता है कि तथा कथित पंडित पादरी धर्मप्राण कहे जाने वाले लोग धर्म करते, सुनते और सुनाते हैं तो आँसुओं से आँखे भिगो लेते हैं। जब कभी भाई के त्याग की बात करते तो श्रोता भाव विभोर हो जाते हैं। यहाँ तक कि अदालतों में केश लेकर पहुँच जाते हैं। मैं पूँछता हूँ कि धर्मात्माओं और धर्मीजनों के द्वारा क्या यह उचित है? आज देश की अखंडता और एकता को खंडित किया जा रहा है। धर्म, भाषा,

जाति और क्षेत्र के नाम पर देशवासियों को बाँटा जा रहा है। हमने जमीन को बाँट दिया है। यह हिंदुस्तान है, यह पाकिस्तान है, यह काश्मीर है, यह पंजाब है हमने आदमी को बाँट दिया है। यह हिंदू है, यह मुसलमान है, यह जैन है, यह वैष्णव है आदि। लेकिन बाँटने वालो यदि तुम में शक्ति है तो तुम आकाश को, वायु को, सूर्य के प्रकाश को, चाँद–सितारों को बाँटकर बताओ। तुम जमीन को, बाँट सकते हो धर्म और इंसान को नहीं। कहा भी है–

धर्म नाम पर दुनियाँ वाले, बाँट रहे भगवान को।
धरती बाँटी मजहब बाँटे, मत बाँटों इंसान को।।

भारत अहिंसा भूमि है भारत ने हमेशा अहिंसा का व्यापार किया है और अहिंसा, भाईचारा, प्रेम, सद्भावना का ही आयात अर्थात् आदान–प्रदान किया है। इसलिए भारत को आर्य कहा गया है। आर्य शब्द स्वयं कह रहा है। 'आ'से अहिंसा, 'र'से रक्षा, 'य'से यत्न करना अर्थात् जो अहिंसा की रक्षा यत्नपूर्वक करे वह आर्य है।

दुनियाँ के लोग तो दुनियाँ की बात करते हैं।
दुनियाँ के मोह में पड़कर स्वयं का घात करते हैं।।
'विशद' संत तो आत्मा का बोध जगाते हैं।
संत कल्याण की बात को आत्मसात करते हैं।।

आग

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।
आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी।
शर्तें लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।।
हर सड़क पर हर गली में हर नगर हर गाँव में।
हाथ लहराते हुये हर लाश चलनी चाहिए।।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।
मेरी हर कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही।
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।।

हमारा पतन क्यों हुआ

भारत देश जो कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था। आज वही भारत अन्य देशों के सामने झोली फैलाए खड़ा है, आज अन्य देशों का कर्जदार बना है, इसका कारण यह नहीं कि भारत में धन की कमी है, साधन की कमी है, सुविधाएँ नहीं हैं। ज्ञान की वृद्धि नहीं हैं, पैसा नहीं है, भारत में सब कुछ है लेकिन भारत में गरीबों के साथ सहयोग नहीं बल्कि असहयोग पूर्ण व्यवहार किया जाता है। इस कारण एक इंसान दूसरे की रोजी रोटी छीनने में लगा है, एक भाई दूसरे भाई को नीचे गिराने की सोचता है कि यह व्यक्ति कैसे नीचे गिरे? यहाँ वह कैंकड़े की कथा सिद्ध होती है।

एक बार विदेश में कैंकड़ा सम्मेलन हुआ उसमें विभिन्न देशों से कैंकड़े लाए गये। भारत से भी कैंकड़े ले जाए गये सभी देशों से आए हुए कैंकड़ों के डब्बों पर ढक्कन लगा था किंतु भारत के डिब्बे पर ढक्कन नहीं लगा देख सभी व्यक्ति घबराए और भागने लगे तब लोगों से भारतीय ने कहा– भाई आप लोग क्यों भाग रहे हैं? लोगों ने उत्तर दिया– आपके डिब्बे का ढक्कन खुला है यदि कोई कैंकड़ा बाहर निकल गया तो लोगों का जीना मुश्किल हो जाएगा। तब एक भारतीय ने गर्व से कहा– आप लोग चिंता न करें। ये भारतीय कैंकड़ें हैं यदि एक भी कैंकड़ा बाहर निकलने को होता है तो दूसरा कैंकड़ा उसकी टाँग खीचकर नीचे गिरा देता है और दूसरा कैंकड़ा ऊपर उठता है तो तीसरा कैंकड़ा उसकी टांग खींच देता है शायद यह कैंकड़ों की दशा हो अथवा नहीं, मगर इंसानों की दशा ऐसी जरुर नजर आती है। एक इंसान दूसरे इंसान की टांग खीचने में लगा है नीचे गिराने के लिए राह में गड्ढा खोद रहा है। दूसरी ओर भारत में गरीबी का कारण है 'पूँजीवाद' एक ओर गरीब पेट भरने के लिए दाने–दाने के लिए लाचार है, लोगों को खाने के लिए दानों के लाले पड़ रहे हैं और दूसरी ओर लालों,रत्नों के ढेर लगे हैं। ऊँची–ऊँची कोठियों में रहने वाले धनपतियों ने प्रत्येक वस्तु का संग्रह कर रखा है। लाभ की चाह में बड़े–बड़े गोदामों में अनाज भरकर रखा है। कई बार थोड़ी सी असावधानी के कारण करोड़ों मन अनाज वही पर पड़ा–

पड़ा सड़ जाता है। धन को पेटियों और कोठियों में कैद कर रखा है। पूँजीपतियों ने परिग्रह एकत्र करके गरीब लोगों को घर से बेघर कर दिया, लोगों के तन के वस्त्र छीनकर उन्हें नंगा कर दिया। लोगों के साधन छीनकर साधनहीन कर दिया। भगवान महावीर ने पाँच पाप बताए हैं उनमें सबसे बड़ा पाप परिग्रह है उसे अंत में रखा गया है क्योंकि प्रथम हिंसा है उसमें में तो मात्र हिंसा ही है दूसरा पाप नहीं। दूसरा झूठ है उसमें हिंसा का समावेश हो जाता है, तीसरा चोरी है उसमें हिंसा और झूठ दोनों ही समाहित हैं। चौथा कुशील है, उसमें हिंसा, झूठ, चोरी तीनों ही समाहित हैं तथा पाँचवां पाप परिग्रह है उसमें सभी समाहित हैं। इससे सिद्ध है कि सबसे बड़ा पाप परिग्रह है किंतु परिग्रह वाले को कोई पापी नहीं बल्कि पुण्यात्मा (पुण्यवान) मानते हैं।

यदि कोई व्यक्ति हत्या कर दे तो उसे लोग हत्यारा घोषित करते हैं। उसे समाज में दंड दिया जाता है तथा राजदंड फाँसी की सजा अथवा बीस वर्ष की सजा भोगनी पड़ती है। कोई झूठ बोलता है तो कोई उसका विश्वास नहीं करते। उससे कोई बात नहीं करता उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। कोई चोरी करता है, जेब काटता है तो उसे जेल की सलाखों में डाल दिया जाता है। कोई कुशील करता है तो उसे समाज में स्थान नहीं दिया जाता है और दण्डित किया जाता है, किंतु जो धन को एकत्रित करता है। लोगों का सुख चैन छीनता है उसका लोग सम्मान करते हैं। बड़ी–बड़ी सभाओं में माला पहनाकर सत्कार किया जाता है। अनेक प्रकार की पदवियों से विभूषित किया जाता है लोग खड़े होकर बैठने के लिए आगे स्थान देते हैं। लोग उन्हें प्रणाम करते हैं, उनकी जी हजूरी करते हैं।

यदि गहराई से विचार किया जाए तो यह सत्य होगा कि उन्हीं लोगों के कारण देश में हिंसा और आत्म हत्याएँ बढ़ रही हैं। चोरियाँ और झूठ फरेब उत्पन्न हो रहे हैं। अबलाएँ अपना तथा परिवार का भरण पोषण करने के लिए कुशील करने के लिए मजबूर हो रहीं हैं। पूँजीपतियों ने लाखों करोड़ों लोगों के अरमानों को तिजोरियों में बंद कर रखा है। यद्यपि अर्थ व्यर्थ नहीं होता है यदि उसे छिपा लिया जाता है, कैद कर लिया जाता है

तो व्यर्थ नहीं बल्कि अनर्थ का कारण बन जाता है। अर्थ को तो पुरुषार्थ की संज्ञा दी गई क्या पुरुषार्थ कभी व्यर्थ हो सकता है? नहीं पुरुषार्थ तो परमार्थ का कारण कहा गया है। यदि अर्थ को अनर्थ से बचाना है तो जन–जन की पूर्ति हेतु खुले दिल से अर्थ का स्वार्थ छोड़कर परमार्थ में लगाना होगा। इंसान जीवन में हमेशा लाभ ही लाभ चाहता है। यदि आप भला ही भला करना प्रारंभ कर दें तो गारंटी है कि आपके जीवन में लाभ ही लाभ प्राप्त होगा। कहावत है **''एक हाथ दे, दूजे हाथ ले''** भला को उल्टा करने पर लाभ बन जाता है जो औरों का भला करता है, परोपकार करता है, उसे लाभ ही लाभ प्राप्त होता है।

कई बार लोग दुखी और पीड़ित होते हैं तो अनायास ही बोलने लगते हैं कि आजकल परमात्मा ने दया करना बंद कर दिया है। आज कल न कोई चमत्कार नजर आता है और न ही लोगों की मुरादें पूरी होती नजर आती हैं। इस कारण लगता है कि परमात्मा ने अपना मुख मोड़ लिया है। किंतु सत्य यह है कि परमात्मा ने दया करना बंद नहीं किया है और न ही अपना मुख मोड़ा है बल्कि लोगों ने परमात्मा को याद करना बंद कर दिया है। स्वयं ही परमात्मा की ओर से अपना मुख मोड़ लिया। जब भक्त भगवान को याद करना बंद कर देता है, भगवान से अपना मुख मोड़ लेता है तो परमात्मा की दया स्वयंमेव बंद हो जाती है। कोई परमात्मा की दया नहीं बल्कि हमारी याद ही दया बनकर बरसती है। जिस प्रकार पृथ्वी पर बहने वाला जल वाष्प बनकर पुनः पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि लोगों के द्वारा वाष्पित किया जल उन्हीं के ऊपर दया बनकर बरसता है। शब्द अपना अर्थ स्वयं बोलते हैं। शब्द बड़े अर्थ पूर्ण होते हैं। इसलिए शब्द को ब्रह्म कहा गया है। कभी–कभी शब्दों को उलटने पर अपना भाव प्रकट कर देते हैं।

प्रभु को याद कर और लोगों का भला करके जीने से जिंदगी सही जिंदगी बनती है। वर्ना गंदगी के अलावा और कुछ नहीं है। जिंदगी का लक्ष्य इंसानियत और भाईचारा प्राप्त करना है।

किसी कवि ने कहा–

बाँट दें हर्ष अपना सभी के लिए,
है उचित वश यही आदमी के लिए।
दे सके प्रेम दे ले सके प्रेम ले,
प्रेम संपत्ति है जिंदगी के लिए।।
आज तू है बड़ा ये न अभिमान कर,
यह बड़प्पन है बस दो घड़ी के लिए।।
हृदय मंदिर है इसमें जगह कम नहीं,
खोल दे द्वार इसका सभी के लिए।
बन सभी का तू और तू सबको अपना बना,
दीप की भाँति जल रोशनी के लिए।।

****

एक स्थान पर दो मित्र रास्ते में जा रहे थे रास्ते में बैठे एक व्यक्ति से हाथ टकराने पर।

अरे! तू देखकर नहीं चलता।

मित्र–अबे तू अंधा है क्या?

व्यक्ति–तू होगा अंधा।

मित्र–ज्यादा बकबक करेगा तो एक घूसा मारूंगा तो बत्तीसी बाहर हो जाएगी।

व्यक्ति–हम दो घूँसे मारेंगे तो 64 दाँत बाहर होंगे।

दूसरा मित्र–दाँत तो 32 होते हैं।

व्यक्ति–हम जानते थे तू बीच में अवश्य बोलेगा तो 32 तेरे और 32 इसके हुए न 64...... हँसी

****

भारत गारत क्यों हुआ

संसार चलाने के लिए विश्वास अत्यावश्यक है तो परमात्मा को पाने के लिए व्यापक आस्था, किंतु आस्था किस पर क्यों करें? तो उत्तर मिलेंगे परमात्मा के प्रति, क्यों? ताकि उनके गुणों को पा सकें। उनकी सत्ता और उपलब्धि कर सकें, परमात्मा का आचरण हमारे जीवन में आदर्श बन सके। उनके आचरण रूपी चरणों का नीर हमारी आत्मा का कल्मष धो सके।

वीतरागी आत्म दर्पण जैसे होते हैं, जिनके दर्पण में सबके प्रतिबिंब बनते हैं लेकिन दर्पण भक्त को पकड़ता नहीं। अतः अग्नि के बिंब से गरम और जल के बिंब से दर्पण शीतल नहीं होता। वीतरागी के ज्ञान में सारा लोक झलकता है। लेकिन उनसे राग नहीं करते। यह सत्य परमात्मा की विशेषता है, उन परमात्मा के प्रति विश्वास करना ही सम्यक्दर्शन है, श्रद्धा है, आस्था है। विश्वास अच्छी चीज है, लेकिन अंधविश्वास हानिकारक है। जो बात मैं कहूँ वह आपको कड़वी लगे या मीठी अच्छी लगे या बुरी सहसा उस पर अपने विचार स्थिर न कर लेवें। सर्वप्रथम उसका आदि–अंत सोचकर शांत हृदय से विचार करके अपनी विवेक रूपी कसौटी से कस लीजिए। पश्चात् जिस प्रकार आपका अंतःकरण गवाही दे उस पर अमल कीजिए। मैं आपको अंधविश्वास की सलाह कभी नहीं दूँगा। अंधविश्वास ने ही मनुष्यों की मनुष्यता हड़प कर ली है। अंधविश्वास नहीं विश्वास तो आवश्यक है। अंधविश्वास ने इंसान को खोखला कर दिया। विवेक शून्य होने के कारण ही आज हम अपनी मान–मर्यादा को भूल बैठे हैं।

इंसान स्वार्थी हो गया है उसके अंदर राक्षस प्रवेश कर गया। यही कारण है कि आज कल हमारे प्रति अनेक राक्षसी अत्याचार किए जा रहें हैं। अकेले दुकेलों को जान से भी मार दिया जाता है, दुकान की दुकान लूट ली जाती है। नित्य प्रति सुकुमार बालकों को खोए जाने के समाचार आ रहे हैं, हमारी माताओं बहनों का जीवन संकटमय हो गया है, बलात्कार कितनी ही देवियों की छाती नाक और कान काटे गए है, उनको नग्न करके पीटा गया है। हमारे धार्मिक उत्सवों पर आक्रमण किए जाते हैं। यह सब अत्याचार हम अपनी आँखों के सामने ताण्डव–नृत्य करते हुए देखते हैं किंतु हम उफ तक नहीं करते। तब क्या हम सचमुच में कायर हैं?

अथवा हमारी वीरता को लकवा मार गया है या हमारी रगों का खून सर्द हो गया है।

आज का इंसान, इंसानियत खोता जा रहा है।
स्वयं अपनी हीनता, पर रोता जा रहा है।।
प्रमाद और अज्ञानता ने, डेरा जमा रखा इंसान पर ।
आज इंसान अकर्मण्य, और कायर होता जा रहा है।।

द्रोपदी के अपमान को भीम सहन न कर सका, अभिमन्यु के वध को अर्जुन न देख सका, तब क्यों हम उन्हीं की संतान होकर चुप्पी साधकर बैठे हैं? संसार हमें बेशर्म औ निरूद्यमी और अकर्मण्य कहता है, राह चलते हुए पर आवाजें कसी जाती हैं, मनचले लोग सीटियाँ बजाते हैं। यह सब होते हुए भी हम मौन हैं और ऐसी दशा देखकर आशा नहीं होती कि भविष्य में कुछ उठने का प्रयत्न करेंगे उनका प्रतिकार कर सकेंगे।

हम ठोकरें खाते हुए भी होश में आते नहीं।
जड़ हो गए ऐसे कि कुछ भी समझ पाते नहीं।।

संसार के परिवर्तन से कहिए अथवा हमारी अकर्मण्यता से, हमारे भविष्य के इतिहास में कलंक लग चुका है। एक समय वह था जबकि हम बातें बनाना और रोना नहीं जानते थे। हमें धर्म पर बलिदान होना आता था, वीर पराक्रम करते थे।

द्रोपदी की बेइज्जती देख भीम रोया नहीं था, अभिमन्यु के मरने से अर्जुन घबराया नहीं था, सीता जी के हरे जाने पर रामचंद्र हतोत्साहित नहीं हुए थे। महाराणा प्रताप ने सेना के न रहने पर आत्म हत्या नहीं की। पृथ्वीराज चौहान ने नेत्र न रहने पर हार नहीं मानी थी। इन सबने शत्रुओं को जड़–मूल से नष्ट करने की भीषण प्रतिज्ञाएँ की थीं और पुरुषार्थ किया था। इसीलिए इतिहास उनकी गौरव गाथाएँ गाता है।

यही कारण है कि आज भी भारतीय संतान का सर्वस्य लुट जाने पर भी सबसे ऊँचा मस्तक है। इन्हीं बातों को सुनकर अन्य देश वाले यह बात भली भाँति जानते हैं कि भारतीय अपनी बात के धनी हैं, सत्य के सजग प्रहरी हैं। बहुत से महानुभावों का विश्वास है कि अहिंसा धर्मावलंबी जैनियों

ने भारत को पराधीन और बलहीन बनाया और हिंदुओं में भी कायरता इन्हीं के कारण आई। क्योंकि जो मनुष्य चींटी को मारना पाप समझते हैं, फिर भला वह शत्रु का सामना कैसे कर सकते हैं। यह विश्वास उनका प्रमाणिक है, प्रथम इसी पर विवेचन करना आवश्यक प्रतीत होता है। जो महाशय मार्ग चलते हुए चीटियों को कुचलने में, खटमलों को गरम पानी से मारने में अपनी वीरता समझते हैं उन्हें उनकी ऐसी वीरता मुबारक हो परंतु संसार उन्हें वीर नहीं कह सकता। जूँ ,चींटी, खटमल, जैसे छोटे–छोटे जीव जंतु ना–समझ हैं, विवेकहीन हैं उन्हें मारना तथा निर्बल और निर्दोषी को सताना महापाप है। निर्बल के अपराध को क्षमा करना अहिंसा धर्म है और इसी में मनुष्य की मनुष्यता है। क्योंकि'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा वीरों का आभूषण है अर्थात् अहिंसा धर्म सिंहों का धर्म है, महावीरों का धर्म है, इस धर्म के पालन करने के लिए दिल और जिगर की आवश्यकता है। जिस प्रकार शेरनी का दुग्ध हर इक पात्र में नहीं ठहर सकता,उसी प्रकार अहिंसा धर्म को भी साधारण कायर मानव नहीं पाल सकते।

मोहब्बत का रिश्ता जो कर्ज बन जाए।
वह फरिश्ता जो दिल का दर्द बन जाए।।
वह मोहब्बत नहीं मौत होती है।
जो स्वयं की जिंदगी में मर्ज बन जाए।।

******

संगीत स्वयं बजता नहीं बजाया जाता है।
खुशियों का सरोवर आता नहीं लाया जाता है।
आकाश में फूल उगाने की व्यर्थ की कोशिश है।
इतिहास स्वयं का बनता नहीं बनाया जाता है।

वीर हिंसक या अहिंसक

निर्बल के अपराधों को क्षमा कर देने में वीरता है किंतु अत्याचारियों के अत्याचार सहन करना और शत्रु को पीठ दिखाना कायरता पुरुषार्थ हीनता चिंह है।

जिन महानुभावों का यह विश्वास है कि'अहिंसा धर्म' के कारण भारत वर्ष पराधीन हुआ क्या वे बता सकेंगे कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र, महाबली भीम और अर्जुन क्या हिंसक थे? क्या वे निर्दोष मनुष्यों अथवा पशुओं का प्राण हरण करते थे? यदि नहीं तब फिर उनके समय में भारतवर्ष पराधीन कब था? क्या पृथ्वीराज के हृदय में विशेष दया नहीं थी, क्या उनने अहिंसा धर्म अनुयायी होने के कारण ही शत्रुओं का मान मर्दन नहीं किया था अथवा यवनों ने भी अहिंसा धर्म का पाठ पढ़ लिया था जो इनका राज्य जाता रहा? यदि नहीं तब क्या कारण है कि जब अहिंसा धर्म की पवित्र पताका भारतवर्ष के वायुमण्डल में फहरा रही थी। तब तो भारतवर्ष पराधीन नहीं हुआ और जब हिंसा का सर्वत्र साम्राज्य था तब भारत गारत हो गया। यदि पक्षपात को त्यागकर के विचार किया जाए तो मालूम हो जाएगा कि

दिल के फफोले जल उठे, सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से।।

यदि भारत में पारस्परिक विद्रोह उत्पन्न नहीं हुआ होता, स्वार्थ की भावना नहीं होती, जयचंद्र और भीमदेव जैसे देशद्रोही कायस्थ जैसे विश्वासघाती और कंस जैसे अहंकारी ने इस देश में जन्म नहीं लिया होता तो यह भारतवर्ष परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ा हुआ न होता। खेद है कि भारतवासियों ने ही भारत के साथ विश्वासघात किया। जिन कारणों से महाभारत जैसा भीषण आंतरिक युद्ध हुआ। जिस अविद्या और स्वार्थ के कारण सिकंदर ने पोरस पर फतह पाई। कंजूस, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार और विलासिता ने शहाबुद्दीन से पृथ्वीराज को हराया था। जिस कारण से यह अभागा देश अंत में पश्चिमीय वणिकों के हाथ में आया। यही कारण भारत में अब तक विद्यमान है।

ए फूट तू हिंद की तुर्की तमाम की।
लोगों का चैन खो दिया राहत हराम की।।

विश्व में फैले विनाश के घटाटोप के बीच सिर्फ अहिंसा की जीवन पद्धति ही मानव समाज को महाविनाश से बचा सकती है। अहिंसा का अर्थ भीरूता नहीं वीरता है।

आचार्य भगवन् ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा है कि अहिंसा क्षत्रिय की अहिंसा है किसी कायर की नहीं। महावीर के अहिंसक होने का यह अर्थ कतई नहीं है कि दुश्मन तुम्हारा सिर काटने को आए और तुम सिर झुकाकर बैठ जाओ। गृहस्थ जीवन में विरोधी हिंसा का त्याग नहीं होता। यदि तुम्हारे परिवार पर, तुम्हारे धर्म गुरु पर, तुम्हारे धर्मायतनों पर कोई आतताई आक्रमण करता है और यदि उनकी रक्षा में तुम्हें शक्ति का प्रयोग करना पड़े, हथियार उठाना पड़े तो गृहस्थ जीवन में सिर्फ संकल्पी हिंसा का त्याग होता है। संकल्पी हिंसा से तात्पर्य प्रयोजन रहित हिंसा से है। संकल्प पूर्वक किसी प्राणी को पीड़ा देना या उसके प्राणों का घात करना संकल्पी हिंसा है। अहिंसा का अर्थ कायरता नहीं वरन् करुणा की पराकाष्ठा है। आज देश में जो हिंसा का दौर शुरु हुआ है वह खतरनाक संकेत है। मांसाहार और नशे की प्रवृत्तियाँ जिस गति से बढ़ रही हैं, वह मानव जाति के विनाश का कारण है। मांसाहार घोर पाप है, क्रूर कर्म है, इससे बचें और अपना जीवन सुरक्षित रखें।

आचार्य भगवन् ने कहा है कि आनंद भविष्य में मत ढूँढो अपितु वर्तमान को सुखद बनाने की कला सीख लेना चाहिए। क्योंकि भविष्य कभी आता नहीं है और जब भी आता है तो वर्तमान बनकर ही आता है। मनुष्य का अधिकार सिर्फ वर्तमान पर होता है और उसी में जीने वाला सत्य को, परमात्मा को, प्रेम और आनंद को उपलब्ध हो पाता है। बच्चे हमेशा भविष्य में जीते हैं, बड़े अनागत में तथा युवक वर्तमान में जीते हैं। जीवन का यथार्थ वर्तमान है, बच्चों का अतीत नहीं होता, बुजुर्गों का भविष्य नहीं

होता। लेकिन युवाओं का अतीत भी होता है, अनागत और वर्तमान भी होता है। इसलिए भगवान महावीर ने धर्म को युवा से जोड़ा है। जैनाचार्य भद्रबाहु ने कहा– पंचम काल में धर्मरथ युवा ही खीचेंगे। मुनि धर्म का निर्वाह युवा उम्र में ही संभव है। देखते हो आज–कल जितने भी साधु मुनि बन रहे हैं उनमें सबसे अधिक युवा हैं, युवाओं में जोश तो होता है लेकिन होश नहीं। होश पाने के लिए वृद्धों के अनुभव की आवश्यकता होती है। जहाँ दोनों एक साथ मिल जाते हैं वहाँ कार्य सफल हो जाता है। होश के साथ जोश सहित की गई साधना मुक्ति का सोपान बनती है और रोष के साथ होने वाला कार्य विराधना का कारण बनता है किंतु संतोष के साथ जीवन जिया जाए तो मोक्ष का सोपान बनता है।

जिंदगी का सफर लंबा है, हम सफर कोई नहीं।
कितने गुजरे काफिले, पर मुस्तकिल कोई नहीं।।

* * * * *

इक इशारा काफी है, अपनों को बुलाने के लिए।
माँ की बाहें काफी है, बेटे को सुलाने के लिए।।
अनेक खुशियाँ कम हैं, एक गम को भुलाने के लिए।
एक गम/भूल काफी है, जीवन भर रुलाने के लिए।।

* * * * *

जिंदगी कठिनाईयों में जो जिए हैं।
एकांत की तन्हाईयों में जो जिए हैं।।
वही पुरुष पूज्य होते हैं इस जहाँ में।
चेतना की गहराईयों में जो जिए है।।

* * * * * *

हमें बलहीन किसने बनाया

आज कल भारत वर्ष में त्राहि–2 मची हुई है,आँखों के सामने दुःख क्लेश और अशांति ताण्डव–नृत्य कर रहे हैं। सोने का भारत वर्ष मिट्टी में मिला जा रहा है। जहाँ दूध की नदियाँ बहती थीं वहीं आज खून की नदियाँ बह रही हैं। जहाँ गौ के लिए देवी माँ मानकर पूजा जाता था आज उसकी गर्दन पर खंजर चल रहे हैं।

पाश्चात्य सभ्यता के दावानल ने लोगों की स्वतंत्रता स्वाधीनता को खाक कर दिया है। इंसान मुर्दे की भाँति निर्विचार गतिहीन हो गया है। स्वर्गीय पुष्पोद्यान दुर्गंधमय वायु से दूषित हो गया है। बड़े–बड़े रंग महल श्मशान भूमि की शक्ल में दीख पड़ने लगे हैं। नवयुवक समाज का अधःपतन हो चुका है। तरूण युवतियाँ अपने रूप लावण्य को खो बैठी हैं। नेत्रों की ज्योति कमजोर हो जाने से युवक–युवतियों को अपनी नाक पर काँच की लालटेन/चश्मा लादनी पड़ती है, कॉलेज और दफ्तर जाने में दमे की शिकायत रहने लगी है आशा और उत्साह की जगह उनके हृदय में निराशा और दुश्चिंताओं ने आक्रमण कर लिया है। रोटी, कपड़ा और मकान के प्रश्न ने उनके गलों को घोंट रखा है। जिस प्रकार भी हो सके अपने उदर की पूर्ति करना ही उनका मुख्य उद्देश्य बन चुका है। विचार शक्ति रफू चक्कर हो गई, जरा से परिश्रम से सिर में दर्द होने लगता है। इस पर भी युवक युवतियाँ अल्पकाल में ही कई संतान के माता–पिता बन जाते हैं। एक झोंके में ही चेहरे का तेज उड़ जाता है। हाय! जिस तरुवर पर बसंत ऋतु में ही फलने–फूलने के दिन थे, उनका पतझड़ होता जा रहा है, जिनकी ओर देश और समाज दृष्टि लगाएँ बैठे हैं, वही नवयुवक और युवतियाँ इस्तहारबाजों से प्रमेह उपदंश, सूजाक, ताकत और प्रदर इत्यादि की दवा लेने में ही अपना सर्वस्य समझ रहे हैं। जिन नवयुवकों और

युवतियों को देशोद्धार के लिए अपने पूर्वजों का अनुकरण करना था वही आज गुलाम बनकर दर–दर के भिखारी बन गए हैं। जिस देश में भगवती सीता, मनोरमा, अंजना जैसी वीर वीरांगनाओं ने जन्म लिया। आज उसी देश में विश्व सुंदरी बनने की होड़ में स्त्रियों के अर्धनग्न चित्र दिखाये जाते हैं और बड़ी–बड़ी सभाओं में उपस्थित किया जाता है तथा विज्ञापनों में अर्धनग्न चित्रों के साथ पेश किया जाता है एवं अस्मतफरोशी (वेश्यावृत्ति) सरे बाजार होती है। कितना लज्जाकारी आश्चर्यकारी परिवर्तन है? यह परिवर्तन क्यों हुआ? इसका उत्तरदाता कौन है? यह अपराध किसके सिर मढ़ा जाएगा? यदि मैं भूल नहीं करता हूँ तो विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि भोग में आनंद मनाने वाले जो समाज के, देश के, कर्त्ता–धर्त्ता को मौरूसी पट्टा अर्थात् खानदानी जिन्होंने अपने नाम समझ लिया है, जो सभा और पंचायतों में बैठकर व्यर्थ के गपोड़े बाजी हाँकते हैं, वह और उन युवकों के माता–पिता ही सब बातों के उत्तरदाता है।

दुःख है कि जो सुकुमार अभी गुड्डा–गुड़ियों के खेल खेलते हैं, भले–बुरे का जिन्हें ज्ञान नहीं, धोती बाँधने की जिन्हें तमीज नहीं है। ऐसे नादान और मासूम को साथ में बैठाकर लोग कुत्सित नृत्य देखते हैं तथा विभिन्न प्रकार की चर्चा,वार्ता करते हुए दुष्क्रिया करते हैं जिसका सीधा असर बच्चों पर पड़ता है। एक बार एक परिवार की घटना याद आती है। पति–पत्नि में झगड़ा हो रहा था वो आपस में कुत्ता–कुतिया, कुत्ता–कुतिया कहकर लड़ रहे थे। तभी दौड़ता हुआ मुन्ना आया और पास खड़े होकर जोर–जोर से तालियाँ पीटते हुए हँसने लगा। दोनों आश्चर्यचकित होते हुए पूँछने लगे क्या बात है मुन्ना? मुन्ना ने उत्तर दिया अहा !अहा! हम पिल्ला/ हँसी। हम आपसे पूँछते हैं कि जब माता–पिता एक दूसरे के लिए कुत्ता–कुतिया कहेंगे तो पुत्र क्या स्वयं को पिल्ला से ज्यादा कुछ समझ पायेगा?

बच्चों पर माता–पिता की प्रक्रिया का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है। इस घटना से आप अच्छी तरह अनुमान लगा सकते हैं। अतः बच्चों के साथ में किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए आप स्वयं सोचें। बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं। माता–पिता को कुंभकार की तरह भूमिका निभानी चाहिए। बच्चे सिखाने की अपेक्षा दिखाने से अधिक सीखते हैं। हमारे पास आये दिन लोग आते हैं बच्चे की गर्दन पकड़कर झुकाते हुए कहते हैं कि बेटा! महाराज जी को नमोस्तु कर ले। बेटा भी जिद पकड़ जाता है, नहीं करूँगा। आखिर आपका ही तो बेटा है, आप नमस्कार कराने की जिद करते हैं ,वह न करने की जिद करता। मैंने कहा कि वह ऐसे नमोस्तु नहीं करेगा, वह सज्जन बोले वह तो क्या उसका बाप भी करेगा? हमने कहा–ऐसे तो नहीं करेगा पर जैसा मैं कह रहा हूँ वैसा करो तो अवश्य कर लेगा। आप करके देखो और पिता को नमोस्तु करते देखकर बच्चा भी नमोस्तु करने लगा। इसलिए कहा है कि बच्चे दिखाने से सीखते हैं न कि सिखाने से।

बचपन के संस्कारों का जहरीला परिणाम विवाह की बात तो दूर रही हमारे संस्कारों में जन्म से ही ऐसी विषैली–स्प्रिट भरी जाती है। क्यों बेटा कैसी बहू लायेगा गोरी या काली? बेटा यों तो तोतली वाणी में कह देता है गोली। पिता जी हँसी में कहते हैं'तेरी माँ की उल्लू का पट्ठा'। माँ बाप ही–ही करके हँस देते हैं, बच्चा भी तालियाँ बजाकर नाचने लगता है। बच्चों को हँसी–हँसी में खोटी बात सिखाई जाती है और इतना मुँह लगा लेते हैं कि उन्हें तमीज भी नहीं रहती है कि पिता से क्या कहना क्या नहीं कहना चाहिए?

एक स्थान पर एक सेठ का पुत्र स्कूल से अपना परीक्षाफल लेकर लौटा। पिता ने पूछा–क्यों पप्पू परीक्षा में पास हो गये? तब बच्चा लापरवाही से उत्तर देते हुए कहता है हाँ हो गये। पिता ने पूछा– कितने अंक प्राप्त किए? पुत्र ने कहा– 300 में से 300। पिता ने आश्चर्य करते हुए कहा–

300 में से 300 तो किसी के नहीं आते तुम्हारे कैसे आ गए?

पुत्र ने कहा– पहला पेपर हिंदी का उसमें 3, दूसरा पेपर गणित का उसमें 0, तीसरा पेपर विज्ञान का उसमें 0 तीनों मिलाकर 300 हुए। पिता ने कहा– नालायक कहीं के क्या यह पास होना कहलाता है? क्या ये 300 में से 300 अंक पाना कहलाता है? अरे! देख पड़ौसी का लड़का कितने अच्छे अंकों से पास हुआ और तेरे बराबर जब जवाहरलाल नेहरु थे तब हमेशा (फस्ट क्लास) (प्रथम स्थान) में पास होते थे और तू पास भी नहीं हो पाया है। तब मुँह लगा बालक कब चूकने वाला था। बालक पिता से कहता है,हाँ–हाँ हमें पता है, जब जवाहरलाल नेहरु हमारे बराबर थे तो प्रथम स्थान में पास होते थे, किंतु तुम्हारे बराबर थे तो देश के प्रधानमंत्री थे तुम तो उनके चपरासी भी नहीं बन पाए। ये लाड़, कुसंस्कारों का परिणाम है।

यह बच्चों को मुँह लगाने का दुष्परिणाम एवं अच्छे संस्कार न मिलने का नतीजा है। आजकल बचपन से ही बजाय अपनी माता के बच्चों को धाय तथा विलायती डिब्बे का दूध पिलाया जाता है। भगवान महावीर, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र आदि के दर्शन एवं चित्र न दिखाकर मस्जिदों में ले जाकर मुल्लाओं की फूँक लगवाई जाती है। विवाह शादियों में तथा बीमारियों में पीर देवी–देवता एवं पैगंबरों की पूजा की जाती है। फिल्मों और महफिलों में जनखे भाँड और रंडियों के नाच दिखाकर उन्हें जनखे और ऐय्याश बनाने की पूर्ण चेष्टा की जाती हैं। बचपन से ही काम कला को भड़ा के ऐसे–ऐसे विषैले संस्कार डालकर रूधिर को गंदा कर दिया जाता है। बचपन की तो बात क्या गर्भ में ही बच्चों को वासना के संस्कारों से भर दिया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता और बढ़ते हुए दूरदर्शन के आकर्षण ने शील की हत्या करके रख दी। गर्भ में पल रही संतान पर लोगों के क्रियाकलापों का प्रभाव पड़ता है। गर्भवती माँ दूरदर्शन पर चल रहे कुत्सित नृत्य देखकर वासना से

वासित हो जाती है। उन्हीं परिणामों से सहित शरीर में बहने वाला रक्त बच्चे के अंदर पहुँचता है, आगे आकर वह संस्कार बच्चे के जीवन में फलीभूत होते हैं एवं अधिक टीवी देखने से आँखे कमजोर होती है। अतः छोटे–छोटे बच्चों को चश्मा लग जाता है। भोजन में भक्ष्याभक्ष्य का विचार नहीं करते, कई बार तैजस आहार वह भी दिन रात का विचार किए बिना करते हैं। असंयम का जीवन रहता है। अतः संतान असंयम प्रकृति में आनंद मानती है एवं आज–कल कई लोग आते हैं कि महाराज– मेरा बेटा कहना नहीं मानता है, जिद करता है, रोता है, चिड़चिड़े स्वभाव का है। हम आपसे पूँछते हैं कि इसका जिम्मेदार कौन है? वास्तव में इसके जिम्मेदार माता–पिता व सारा परिवार है। जब बेटा गर्भ में पल रहा होता है तब माता की कमजोरी की हालत होती है, थोड़ा सा भी कार्य करने में थक जाती है किंतु परिवार जनों के भय से काम करना पड़ता है। अंदर से चिड़चिड़ापन उत्पन्न होता है। खाने में कुछ रुचता नहीं है, शरीर शिथिल पड़ जाता है लेकिन परिश्रम बराबर करना पड़ता है। तब माँ उस समय क्रोध करती है, जिद करती है, उन्हीं परिणामों सहित शरीर में बहने वाला रक्त बच्चे के अंदर संचार करता है और बच्चे के परिणाम भी उसी प्रकार के हो जाते हैं। बच्चे जिद्दी एवं चिड़चिड़े हो जाते हैं। कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि गुस्से में आकर माँ ने कुछ खाया नहीं पड़ी रहती है अति कमजोरी आ जाती है। इस कारण बच्चे भी कमजोर एवं आलसी और चिड़चिड़े होते हैं।

स्वयं की जिंदगी के जिम्मेवार इंसान स्वयं होते हैं।
राह में शूल बोने वाले इंसान के नाम पर अभिशाप होते हैं।।
बच्चों को इंसान या शैतान बनाना आपके हाथ में है।
बच्चों की जिंदगी बनाने बिगाड़ने के जिम्मेदार माँ बाप होते हैं।।

हिंदू शास्त्रों में कथन आता है की अभिमन्यु जब गर्भ में थो तब श्री

कृष्ण ने अभिमन्यु की माँ को चक्रव्यूह की रचना सिखाई थी। गर्भ में रहने वाले बालक ने भी चक्रव्यूह की रचना सीख ली। इससे सिद्ध होता है कि गर्भ में माँ के आचरण का बालक पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसी कारण माँ को दोहला उत्पन्न होता है यदि बालक पुण्यवान हो तो शुभ और यदि पापात्मा है, तो अशुभ, रूप में फल उत्पन्न होता है। जैसे कि रानी चेलना के गर्भ में जब कुणिक था तब रानी चेलना को पति का सीना फाड़कर लहू बहाने का दोहला उत्पन्न हुआ था और जब वारिषेण गर्भ में था तब हाथी पर बैठकर रिमझिम बरसात में जंगल में सैर करने का इत्यादि तथा जब शांतिसागर जी महाराज की माँ को दोहला आया था कि सहस्रदल कमल से जिन प्रभु की पूजन करना। यह गर्भ में रहने वाले पुत्र/कमल का प्रभाव है। जन्म होते ही माताएँ बालक को दूध पिलाने में शर्माती हैं या वासना से वासित चित्त वाली स्त्रियाँ यह सोचकर कि सीने का ओझ न समाप्त हो जाये तो बच्चों को दूध नहीं पिलाती बल्कि बॉटल के संस्कार पड़ जाते हैं। उस बॉटल को ही वो अपनी माँ मान लेता है। बड़ा होने पर शराब की बोतल लेकर आता है तो माता-पिता देखकर झक्क रह जाते हैं कि यह क्या हुआ? तब यही उत्तर मिलता है कि बोतल के संस्कार आखिर माँ ने दिए। पहले दूध की बोतल दी थी अब शराब की लेकर आया है क्या फर्क पड़ता है? नशा करने वाले का तन मन जीवन सब कुछ खाक में मिल जाता है। जीवन तबाह हो जाता है।

श्री चतुरसेन जी के शब्दों में- यही कारण की हमारे शरीर में उत्साह नहीं, बल नहीं, साहस नहीं, वीरता नहीं, हमारी नस्ल बरबाद हो गई, जिंदगी घट गई, तन्दुरूस्ती मिट्टी में मिल गई, ठठरी की हड्डी, पापभरी देह पर बचपन के संस्कार हमें जीवन पर्यंत पनपने नहीं देते। जोधपुर नरेश यशवंतसिंह शाहजहाँ की आज्ञा से हिंदु धर्मद्रोही औरंगजेब से लड़ने के लिए गये। किंतु सेना न रहने के कारण वो अपनी राजधानी लौट आये।

उनकी प्रधान रानी शिशोदिया राजकुमारी को जब यह मालूम हुआ कि पतिदेव युद्ध छोड़कर चले आए हैं। तब उसने यह कहकर कि ''मैं कायर पति का मुँह नहीं देखना चाहती'' किले के फाटक बंद करवा दिए। कारण पूँछने पर उत्तर दिया कि अगर वह विजय प्राप्त करके आयेंगे तो आरती उतारूँगी अगर वीर गति को प्राप्त हो जायेंगे तो मैं भी उनके साथ सती हो जाऊगी''। वीर पुरुष को वीर पत्नी से मिलने के ये दो ही उपाय थे। उस समय यशवंत सिंह को संबोधन करके कहा था-''बेटा! इसमें तुम्हारा अपराध नहीं है''जब तू बालक था तब तेरे रोने पर बाँदी/धाय माँ ने चुप करने के लिए अपने स्तन का दूध पिलाया था। तभी मैं डरती थी कि तुझमें बाँदी का दूध असर न कर जाये। सो वही हुआ आज तुझे वही बाँदी का दूध युद्ध से भगा लाया है। यदि तूने केवल मेरा ही दूध पिया होता तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता''।

कामशास्त्र का नियम है कि पिता शुद्ध वीर्यवान हो, मात भी स्व पतिव्रत धारण करने वाली होवे तो उनकी संतान निरोगी और बलवान होगी। परंतु यह सब अब करे कौन? अब तो पन्द्रह सोलह वर्ष की उम्र हुई बच्चा स्कूल के ऊँचे दर्जे में पढ़ता है। दिमागी मेहनत का जोर उधर गौना भी होकर आ गया। बच्चे की माँ को पोते का मुँह देखने का शौक चर्रा उठा। आँचल पसारकर गिड़गिड़ाने लगी-''हे महावीर स्वामी! मेरी बहू को बेटा दे तो छत्तर चढ़ाऊँगी, हे बुद्धी माता! हे काली माई! हे शय्यद हुसैन! हे चामुण्डा माता! अब तो पोते का मुँह दिखा दे। यही नहीं इसकी तैयारी भी होने लगी। दोनों जोड़ी एक कोठरी में बंद कर दी गई। इधर दिमागी मेहनत पढ़ने का जोर, परीक्षा में फेल होने का डर, उधर पोते बनाने की लालसा इन सब में बच्चा पिस रहा है। जिंदगी में घुन लग गया जो अंदर खोखला करता जाता है। पुरुष होकर भी अपुरुष का जीवन जीने लगता है।

बिन खिले मुरझा गये

भाईयो और बहिनों! निर्वीर्य लोग वैद्यों के पास पुत्र माँगने जाते हैं। ज्योतिषियों से ग्रहादिक पूँछते हैं, देवी-देवता के आगे नाक रगड़ते हैं। लोग पुत्र क्यों चाहते हैं? इसलिए न कि कुल का उद्धार हो? परंतु याद रहे निर्वीर्यों की संतान कुलकलंकी होती है। आज-कल लड़के लड़कियों में माँ बाप बनने का होश नहीं और बन जाते हैं माँ बाप। वे अपने बच्चों के सामने क्या-क्या कर्म करते हैं, हमको तो लिखते हुए शर्म आती है। फिर उनकी संतान सात, आठ वर्ष की अवस्था में ही कैसे कृत्य करती है? यह सब आप नित्य प्रतिदिन देखते हैं। वह बच्चों के प्रति इतने असावधान रहते हैं कि उन्हें पता भी नहीं रहता बच्चे कहाँ जा रहे हैं? क्या कर रहे हैं? स्कूल पढ़ने जाते हैं कि मित्रों के साथ सिनेमा देखने जाते हैं कि किसी खण्डहर में या होटल में बैठकर सिगरेट या शराब पीते हैं या कोई दुष्कृत्य करते हैं। यह सब कहाँ फुर्सत है देखने और जानने की। आज बढ़ती हुई आवश्यकताओं की एवं उनकी पूर्ति करने के लिए मानव चकरधन्नी बन गया है, जो निरंतर उसी में घूमता रहता है। जब कोई विशेष घटना घटने की बात आती तब पता चलता है, अरे! लड़का बिगड़ चुका है या लड़की बिगड़ गई है। तब तक बहुत देर हो जाती है, फिर पश्चाताप के अलावा और कोई उपाय नहीं रह जाता एवं कभी-कभी यह भी होता है।

बालक जो देखते हैं, वही कार्य किया करते हैं।
लोग बच्चों की ओर, ध्यान नहीं दिया करते हैं।।
माता-पिता बच्चों की, प्रथम पाठशाला है प्यारे भाई!।
बच्चे कथनी में नहीं, करने में ही जिया करते हैं।।

माता-पिता बालक को बालक समझकर उसकी तरफ असावधान रहते हैं। वे बालक के सामने ही अनेक कुचेष्टाएँ करते हैं। यह उनका अज्ञान है, बालक तो दर्पण है। जैसे माता-पिता के आचरण होंगे वैसे ही बालक पर असर होगा।

''माता-पिता अपने बच्चों को अमुक कार्य न करने का बोध देते हैं, किंतु वे स्वयं उस कार्य को करते हैं और यह आशा रखते हैं कि बच्चे आँखों

की अपेक्षा, कानों पर अधिक विश्वास रखेंगे''। ऐसा करते हुए वे इस बात को भूल जाते हैं कि उपदेश की अपेक्षा दृष्टांत का विशेष महत्व है। कितने ही वर्षों तक लड़के को प्रमाणिक और सत्यवादी बनने का शिक्षण दिया गया हो, परंतु यदि उसका बाप स्टेशन पर टिकिट का भाड़ा बचाने के लोभ में बाबू को उसके देखते हुए उसकी उम्र कम बतलावें तो एक क्षण में उस शिक्षण पर पानी फिर जाता है। उस लड़के को सत्यवादी बनाने के लिए सिखाए गये वर्षों के पाठ उसके दिल पर उतना असर न डालेंगे, जितना वह बिना सिखाये आँखों से देखा हुआ पाठ असर करेगा। एक बार एक सेठ जी कर्ज वापस लेने के लिए किसान के पास गये।

कर्ज माँगने के लिए आने वाले सेठ को देखकर पिता पुत्र से कहकर अंदर हो जाते हैं कि सेठ जी पूँछे पिताजी कहा गए तो कह देना बाहर गए। किंतु यह नहीं ध्यान दे पाते आगे कुछ और पूँछे तो क्या कहेंगे। सेठ ने किसान के पुत्र से पूँछा- पिता जी कहाँ गये हैं?तब पुत्र ने कहा-वह बाहर गए हैं, पुनः सेठ ने पूँछा-बाहर कहाँ पर गये हैं। पुत्र कह देता है कि हम पूँछकर आते हैं। पुत्र ने अंदर जाकर पिताजी से पूँछा- आप कहाँ पर गये हैं? और वह झूठ भी उनके सिर पर मढ़ी जाती है। सिद्धराज चावड़ा काठियावाड़ में एक बड़ा भारी वीर पुरुष हुआ है। उसकी माता बड़ी भाग्यशालिनी थी। उस समय उसके पिता वनराज बाहर से पधारे और रानी से अनुचित हँसी करने लगे। रानी ने कहा-''यहाँ कोई दूसरा पुरुष कहाँ है? मुझे तो दिखाई नहीं देता'' रानी ने तब सिद्धराज की ओर संकेत करके कहा''इधर देखो यह पालने में लेटा है'' राजा ने उसे बच्चा समझ रानी से छेड़छाड़ कर दी। यह देख सिद्धराज ने जिसकी उम्र केवल दो माह की थी अपना मुँह फेर लिया। रानी चौंकी अरे बाप रे! राजा ने मेरी इज्जत हरण कर ली और इस लड़के ने देख लिया। अब तो जहर खाना ही ठीक है रानी ने ऐसा ही किया।

इंसान की जिंदगी, मौत के कगार पर खड़ी है।
आज इंसान के हृदय में, वासना की धूल चढ़ी है।।
सम्मान सहित जीने का, नाम जिंदगी है।
इंसान के लिए इज्जत, जिंदगी से बड़ी है।।

विषयालोलुपी संभव है। इस दृष्टांत का महत्व न समझें, किंतु सिद्धराज एक ऐसा नामी वीर हुआ है कि मारवाड़ के किसी राजा ने विचार किया कि मारवाड़ में भी ऐसा सिद्धराज पैदा किया जाए। यह बात एक भाट ने भी सुनी। वह इस बात से प्रसन्न होकर राजाओं के पास जाकर इस विचार की प्रशंसा करने लगा। राजा लोग भाट पर प्रसन्न हुए और बोले ''क्या माँगता है माँग ले''। भाट ने उनमें से एक राजा को माँग लिया। राजा और भाट दोनों जंगल में जाते हैं। वहाँ राजा पूँछता है अरे भाई! सिद्धराज की माता के बिना कैसे सिद्धराज पैदा करेगा? भाट ने उत्तर दिया श्रीमान् को इससे क्या, मैं सुंदर से सुंदर कन्या के साथ आपका विवाह करूँगा फिर सिद्धराज पैदा होगा। राजा हँसकर बोला–''तेरी यह बात तो ठीक है पर उस कन्या में सिद्धराज की माता जैसे गुण भी है क्या''? भाट बोला–कैसे गुण?''राजा ने वह जहर पीने वाली कथा कही। भाट सुनकर अवाक् रह गया। बोला ऐसी माता तो मिलनी मुश्किल है''। तब राजा ने कहा–तो ऐसा वीर पुत्र होना भी मुश्किल है''। माता–पिता वत् सुत सुता

जहाँ के जैसे नदियाँ नाले, वहाँ के वैसे भरका (गड्ढा।)
जिसके जैसे बाप मताई, उनके वैसे लड़का।।

कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि जैसे माता–पिता के आचरण होंगे वैसा ही संतान पर असर होगा। किंतु अब ऐसे शुद्ध संस्कार कहाँ भरे जाते हैं। अब तो छोटे–छोटे बच्चों के मष्तिष्क में विषय–वासनाओं के संस्कार डाले जा रहे हैं। इसका फल यह होता है कि आपकी संतान बचपन से ही विषयी, लम्पटी और अधर्मी बन जाती है। उनकी जड़ में उत्पन्न होते ही कीड़ा लग जाता है। जब वह फलते–फूलते अपने प्रताप से भू–मण्डल को कँपाते उससे पहले ही मुरझाकर संसार से उठ जाते हैं।

फूल तो दो दिन, बहारे जाँ फिजा दिखला गए।
हसरत उन गुंचों पे हैं, जो बिन खिले मुरझा गए।।

जो बच्ची पहले बालिका लिखी गई थी वही दस, पन्द्रह वर्ष के पश्चात् विधवा लिखी जा रही है। कितना अन्यायपूर्ण दृश्य है।

बाल–विवाह और वृद्ध–विवाह का परिणाम बड़ा भयंकर है। यह रोग दिन पर दिन नया रूप धारण करता चला जा रहा है। हर्ष है कि इस कुप्रथा को रोकने के लिए रायसाहब हरविलास जी शारदा ने व्यवस्थापिका सभा में एक प्रस्ताव पारित किया था। परंतु लड्डूओं में आनंद मनाने वाली समाज ने इसका घोर विरोध किया था। हे कलिकाल! तेरी विचित्र माया है।

दुःख है कि आज भारतवर्ष में विधवा–विवाह चारों ओर फैला हुआ है। जिस भारतवर्ष में स्त्रियाँ शील रक्षा के लिए शत्रुओं से लड़ी, जीते जी आग में कूँद पड़ी अपने प्राणों की बलि देकर शील रक्षा की। आज उसी देश में उन्हीं वीर बालाओं की संतान को पुनर्लग्न की आवश्यकता पड़ती है। हे भगवान! यह कैसा आश्चर्यजनक परिवर्तन है। क्या भारतीय ललनाएँ, अपना शील खोकर पुनः विवाह कर अपना मुँह दिखा सकेगी। हे परमात्मा! यह होने से पहले उनके जीवन में धर्म की जागृति भर देना। जिससे यह दुरित कार्य पावन पवित्र भारत भूमि पर न हो। भारतीय नारियों की पवित्रता सदा कायम बनी रहे। जो माता–पिता अपनी सहमति पूर्वक विधवा विवाह करते कराते हैं वह भोग पत्नी कहलायेगी। क्योंकि वह भोगोपयोग सेवन में ही काम आती है अन्य किसी काम में उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता है तब उनके लिए शर्मिंदा होना पड़ता है। उस समय अपनी गलती महसूस होती है एवं गोत्र को भी गर्हित माना जाता है। जाति के आधार पर स्त्रियों को दो प्रकार से माना जाता है। 1.जिसका विवाह नहीं हुआ वह दासी कहीं जाती है। वह केवल भोगाभिलाषी होती है। 2. भोग पत्नी विधवा विवाहित दोनों मात्र भोगोपभोग के काम आती है। यथार्थ में दोनों में कोई भेद नहीं है अर्थात् दासी के समान ही है अतः समझदार और धर्मप्रेमी स्त्री पति का वियोग होने पर विधवा रहकर परमात्मा के सहारे जीवन व्यतीत कर लेती हैं। यह भारतीय सभ्यता की पहचान है, यह भारत का इतिहास है। भारतीय भोग के नहीं योग के पुजारी रहे हैं। यह भी इतिहास है कि पति की आज्ञा पर सीता ने जंगल में जीवन बसर किया और की तो बात क्या? विजया सेठानी ने गृह में पति होने पर भी संकल्प की रक्षा के लिए अखण्ड आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन किया। किंतु भौतिकता की चकाचौंध में मानव अंधी दौड़ लगा रहा है। लड़कियाँ लड़कों के कपड़े पहनकर अपने मित्रों के साथ घूमती हैं। ब्वाय

फ्रेंड उनके लिए कभी जींस तो कभी टाउजर जैसे कपड़े पहनाकर जुल्फें सँवारकर थियेटर और बाईस्कोप ले जाते हैं वहाँ अश्लील गजलें और गाने सिखाऐ जाते हैं एवं कुत्सित नृत्य करने में आनंद मानते हैं। बचपन में ही उनकी कामवासना को इतना उत्तेजित कर दिया जाता है कि वे दस वर्ष की अवस्था में ही रजस्वला होने लगती हैं। ब्याह होने के पश्चात् पति का संयोग होता है, एक झोंके में ही यौवन का सारा नशा काफूर हो जाता है, कई लड़कियाँ तो विवाह के पूर्व ही अपनी लाज गवाँ बैठती हैं। माँ कहती है अजी देखो तो मेरे बच्चे को क्या हो गया? पीला पड़ता जाता है किसी सैयद–वैयद की तो छाया नहीं है? और न जाने बहू को क्या हो गया है न खाती है न पीती है? पिताजी बोल उठे मौसम खराब है हवा तब्दील करने शिमला भेज देता हूँ।

आज शराफत की जिंदगी को खो रहे हैं लोग।
स्वयं की जिंदगी में शूल बो रहे हैं लोग।।
इंसानियत कैसे कायम रह सके प्यारे भाई।
जब विलासता के दीवाने हो गये हैं लोग।।

लिखना व्यर्थ है–''मर्ज बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की। अंत में बच्चे का राम नाम सत्य बुल गया''। बिचारी बट्टुआसी बहू रह गई। दया धर्म की हंसी उड़ाने वालो। यदि तुम्हारे मस्तक में आँख और आँखों में लज्जा का अंश बाकी है, तो सोचे क्या यह सब कर्म किसी कसाई से कम है। कसाई तो एक समय में ही कत्ल कर डालता है। विधवा विवाह और वृद्ध विवाह करके दिन–रात खून की नदियाँ बहा रहे हो। कुसंस्कारों के द्वारा अपनी संतान का तिल–तिल कर घात कर रहे हो। अपनी ना समझी और बुद्धि हीनता के कारण मोह से मोहित होकर हिताहित का विवेक खो रहे हो। यही कारण है कि आज संतान संस्कार हीन कामी और कमजोर हो रही है।

हमारी कायरता और उसके मुख्य कारण

विचारशील पाठको! अब आप स्वयं सोच लेवें कि आधुनिक भारतीय पूर्वजों की मान–मर्यादा कैसे पा सकते हैं व ''कौल''अकबर के शब्दों में–

तिफ्ल में बू आए क्या माँ बाप के एतवार की।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की।।

जिन बालकों को धाय तथा विलायती डिब्बे का दूध पिलाया जाता है वह बालक भी विलायती और कायर हो जावें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? जब हमारी माताओं को नए–नए कपड़े बनाने फैशन निकालने, बेटा बेटी के ब्याह में जनखे नचाने से ही अवकाश नहीं मिलता। तब हमारी कमर में युद्ध के समय प्रस्तुत होने के लिए तलवार बाँधने को स्वर्ग से देवता थोड़े ही आएंगे। आज हिंदु बालाओं को जनखे नचाने और नए–नए फैशन निकालने का शौक बढ़ रहा है तो कल उन्हीं की संतान नाटकों में शर्ट करके बाजार में तबले बजाकर अपना जीवन समाप्त कर देगी। जो देश अथवा समाज विलासिता में फंस जाता है वह क्या कभी अपना अस्तित्व रख सकता है?

एक बार एक राजा अपने पड़ौसी देश को बर्बाद करके बदला लेना चाहता था। उसने सोचा क्या करना चाहिए। राजा ने एक दार्शनिक से सलाह ली।

तब दार्शनिक ने कहा– वहाँ के नगरवासियों में शराब की लत डाल दें तो देश दस वर्ष में बर्बाद हो जाएगा। पुनः पूछा और जल्दी नष्ट करना चाहते हैं तो क्या करें? तब दार्शनिक ने कहा– लोगों को माँस खाने की आदत डाल दी जाये, अगर देश को और जल्दी नष्ट करना है तो क्या करे? तब दार्शनिक ने कहा– साथ ही साथ स्त्री और वेश्याओं को सड़कों पर उतार दें तो देश दो वर्ष में नष्ट हो जाएगा।

आज भारत देश में इन्हीं तीन चीजों का प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इनकी वृद्धि हो रही है, इसका परिणाम क्या होगा? परमात्मा जाने! मोहम्मदशाह रंगीले का समय था। दिल्ली विलासिता के रंग में डूबी हुई थी। छोटे–बड़े, अमीर–गरीब सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफीम की पीनक में मजे लेता था। शासन विभाग में, साहित्य क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था में, कला–कौशल में, उद्योग–धंधों में, आहार–व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप रही है। राज्य कर्मचारी विषय वासना में, कविगणों के प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलावत्थू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमें और इत्र, मिस्सी और उबटन करने के रोजगार में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है? इसकी किसी को खबर नहीं थी। कहीं बटेर लड़ रहे हैं। कहीं तीतरों की लड़ाई के भीड़ लिए बढ़ी जा रही है, कहीं चौरस बिछी हुई है। ऐसे समय में लाहौर के शासक का खरीता (संदेश) देहली दरबार में पहुँचा। जिस समय वहाँ नादिरशाह की चढ़ाई का हाल पढ़ा गया। उस समय मोहम्मदशाह के दरबार में शराब का दौर चल रहा था। मदिरा पीकर शाह से लेकर दरबारी तक मदमत्त थे। खरीता सुनकर एक दरबारी ने हँसकर कहा–''अजी हुजूर असल बात यूँ है कि लाहौर वालों के मकान बहुत ऊँचे हैं इसी से उन्हें बड़ी दूर की सूझती है। न कोई नादिरशाह है न उनकी इतनी हिम्मत ही है कि वह हुजूर जैसे शाह का सामना कर सकें ''। उस समय इस दरबारी की बात का सबने अनुमोदन किया और शाह की आज्ञा से वह खरीता शराब में घोलकर पी डाला गया था।

अंत में मोहम्मदशाह को अपनी अकर्मण्यता के कारण नादिरशाह के हाथ बंदी होना पड़ा। लालकिले पर अधिकार करके नादिरशाह ने हुक्म दिया कि''मुगलिया खानदान की तमाम बेगमात मेरे आगे आकर नाचें''।

यह नादिरशाही हुक्म सुनते ही बेगमों के मखमली गद्दों पर चलने से पैर में छाले पड़ जावे। बगैर छिला अंगूर खाले तो कब्जियत हो जावे, वह चाँदनी रात में नंगे बदन निकले तो बदन काला पड़ जावे। वह क्यों कर गैर मर्द के सामने नाचने को प्रस्तुत हो जाती परंतु होल हुज्जत करना बेकार था। नादिरशाह का हुक्म साधरण हुक्म नहीं था। अंत में लाचार होकर बेगमों को नादिरशाह के सामने जाना पड़ा। नादिरशाह को नींद आ गई थी, सिराहने खंजर रखा हुआ था, बेगमें पसोपेश में थी, आँख खुलते ही नाचना होगा। नादिरशाह की आँख खुली, तेवर बदलकर बोला''चले जाओ मेरे सामने से, तुम्हारा नापाक साया पड़ने से कहीं मैं भी बुजदिल न बन जाऊँ। आह! तुम अपने ऐशो–आराम में फँसने से इतनी बुजदिल हो गई हो कि तुम्हें अपनी समस्त अस्मत (इज्जत) का भी ख्याल नहीं है। भला जो बेगमें गैर मर्द के सामने जान बचाने की गर्ज से नाचने को तैयार हो सकती हैं, उनकी औलाद सल्तनत क्या खाक करेगी? बस मुझे मालूम हो गया कि, मुगलिया खानदान हिंदोस्तान की बादशाहत नहीं कर सकेगा। आज क्या हम इतने गिर चुके हैं? आज कि स्थिति देखकर कहा गया है।

आश्मां से रक्त झरता, है बताओ क्या करें।
देखकर के दिल दहलता, है बताओ क्या करें।।
भर रही हैं आह अबलाऐं, जहाँ मर्दों के बीच।
जिगर क्या पत्थर पिघलता, है बताओ क्या करें।।
बेरहम इंसान कितना, आज का यूँ हो गया।
जख्म खाकर न बदलता, है बताओ क्या करें।।
भोर होते ही हजारों, कत्ल होते भूमि पर।
बाद में सूरज निकलता, है बताओ क्या करें।।

धर्म और इंसानियत का, उठ रहा देखो धुआँ।
आज इंसा विष उगलता, है बताओ क्या करें।।
हरेक चेहरे पर उदासी, छा रही है ऐ विशद।
हर तरफ तूफान चलता, है बताओ क्या करें।।

आज–कल लोग जहाँ एक ओर तरक्की का दम भर रहे हैं वहीं दूसरी ओर सुरा और सुंदरी के जिस्म का व्यापार खुलकर चल रहा है। कुछ धनपति अपनी दौलत के दम पर ऐश कर रहे हैं तो दूजी ओर कुछ लोग रक्त के आँसू बहा रहे हैं। कहा भी है–

कभी शूल की तो कभी फूल की वेदना सह रहे हैं।
कोई हुक्का तो कोई बोतलों के जाम में बह रहे हैं।।
कोई पीते गम के आँसू और लहू अपना ही प्यारे भाई।
यह कोई मजाक नहीं हम हकीकत कह रहे हैं।।

आज की दुनियाँ में स्त्री भोग व्यापार बन गया है उस व्यापार में कोई पीछे नहीं है। इस भौतिकवादी युग में दूरदर्शन के द्वारा नग्न नृत्य को प्रोत्साहित किया जा रहा है। उसे देखकर युवा स्त्रियाँ इतने चुस्त कपड़े पहनती हैं कि सारा शरीर स्पष्ट खुला सा नजर आता है। यही कारण है कि आज हिंदू ललनाओं को मार्ग में चलते हुए गुण्डे तंग करते हैं। वह उन गुण्डों का मुँह तोड़ उत्तर देने को प्रस्तुत नहीं। उन्होंने तो मेले, तमाशे देखना ही अपना कर्त्तव्य समझ लिया है। उन्हें क्या मालूम स्त्री जाति में भी वीर नारियाँ हुई हैं जो शत्रुओं की छाती पर चढ़कर उनके पापों का प्रायश्चित देकर बतला गईं हैं किंतु हिंदू अबला को बुरी दृष्टि से देखना हँसी खेल नहीं है। किंतु अब तो स्वयं अपनी रक्षा नहीं हो सकती। पुरुषों को प्रत्येक कार्यों पर दृष्टि रखनी पड़ती है। कहीं चलते हुए चद्दर का पल्ला लटक रहा है तो रेल में बैठते समय सिलीपर जूते पट्टियों के नीचे गिर गए। पति देवता ने अपने

हाथ से जूते उठाए, रेल चल दी तब याद आया मुसाफिर खाने में पानदान रह गया, कहीं हाथ में से पंखा गिर गया। गरज यह कि उनके प्रत्येक कार्य अनोखे हैं। यह सब क्यों हुआ? उनको विलासिता के अंधेरे कूप में गिराने के लिए उत्तरदाता कौन है?

या तो भोगी पुरुष इसका दोषी कहा जाएगा या फिर कर्त्तव्यहीन और अकर्मण्य माता–पिता जो स्वयं पाश्चात्य सभ्यता की नकल करने में लगे हैं और स्वयं को मार्डन मान रहे हैं नये युग का दम भर रहे हैं इसलिए कामोद्दीपक वेशभूषा एवं आहार–विहार का सेवन करते हैं। हम आपसे पूँछते हैं कि स्त्रियों को क्लब में जाकर भौंड़े नृत्य करवाते हैं। स्त्रियों को बराबर में बैठाकर थियेटर कौन दिखाते हैं? बाइस्कोप की सैर कौन कराते है? बिजली से चलने वाली सर्कसों में, स्प्रिंगदार मोटरों में बिठाकर झटके कौन खिलवाते हैं? इन सब प्रश्नों का एक जन्मदाता है, विचारी स्त्री का क्या अपराध है? पुरुष ही अपनी काम–पिपासा तृप्त करने के लिए स्त्रियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते रहते हैं। कई एक सज्जन बड़े फैशन वाले हैं और उनकी धर्मपत्नी को एक प्रकार फैशन की प्रोफेसर कहा जाए तो कुछ अनुचित न होगा। कौन सा ड्रेस अब ''आउट ऑफ फैशन'' हो गया है किस ऋतु में कैसा रंग बहार देगा। कमीज आज–कल कैसी तराश की पसंद है, मखमली, किन्नीकी, धोतियों का तो फैशन चल रहा है इत्यादि बातें वह अच्छी तरह जानती है। मोहल्ले भर की बूढ़ी बड़ी इस विषय में सलाह लेने आती है। एक दिन मैंने उनसे कहा–''यार खद्दर पहिना करो'' वह बाले मुझे तो कुछ इंकार नहीं किंतु हमारी पत्नी नहीं मानती। ''मैंने कहा–पत्नी नहीं तुम ही नहीं मानते स्त्रियाँ तो बेचारी भोली भाली होती हैं। चलो पत्नि को तो मैं समझा लूँगा। इस उत्तर को सुनकर वह बोले–तो आपकी मंशा उसे जोगन बनाने की है''। मैं तो उत्तर सुनकर अवाक् रह गया।

न कोई तेरा मीत होगा न कोई तेरा मेहमान होगा।
न सुखी हिंदुस्तान होगा न पाकिस्तान होगा।
प्रत्येक इंसान के अंदर से आह निकलेगी।
भ्रष्ट जब तक इस धरती पर इंसान होगा।।

अब आया रहस्य समझ में। स्त्रियाँ जितनी बन–ठनकर रहेगी उतनी ही हमारी कामवासनाओं को सहायता मिलेगी। इसी कारण पुरुषों ने स्त्री जाति पर कुचक्र चलाया है। जब तक घर में आवे तभी ऐसा ढंग होना चाहिए। जो हमारे मन को आकर्षित कर सके, नेत्रों को तृप्त कर सके। विचारी स्त्रियाँ असमर्थ हैं पराधीन हैं उन्हें पुरुषों की योग्य–अयोग्य सभी आज्ञाओं का पालन करना पड़ता है। पुरुषों ने उन्हें अपने विलासिता के षडयंत्र में ऐसा फँसा लिया है कि वह मुद्दत से इनके अत्याचारों को सहन करते–करते आदी हो गई हैं। दिनभर घर का काम करें, रात्रि को पति देवता जब आएँ तो उनके पैर दबाए, सिर में तेल की मालिश करें, स्त्रियों को उपलक्ष्य में गाली और घूँसों का उपहार मिलता है। यदि किसी पुरुष के अत्याचार सहन करते–करते जी ऊब भी उठा तो पुरुष ऐसे समय में एक आध साड़ी या छोटा–मोटा जेवर खरीद लाते हैं। विचारी सब कुछ भूल जाती हैं। हाय रे! भोलापन यह विलासिता में पड़कर अपने सब अधिकारों को भूल बैठी है। स्वार्थी पुरुषों ने उनको शिक्षा भी दी है तो ऐसी कि पुरुष चाहे शराब पिये, तुम्हारे जेवर वगैरह बेचकर ऐय्याशी में खो दें तुम्हारा नाम भी न लेवें, किंतु तुम उसे देवता तुल्य समझो कितना अंधेर है, स्वार्थ की कैसी जीती जागती तस्वीर है? उनका संसार में सिवाय चौका बुहारी करने, रोटी बनाने और बच्चा जनने के और भी कुछ कर्त्तव्य है इसका उन्हें ज्ञान तक नहीं रहा है। ज्ञान भी कैसे रहे? जो विषय–वासनाओं और विलासिता के अंधेर् कूप में गिर पड़ता है। क्या वह कभी आत्म गौरव एवं प्रतिष्ठा रख सकता है? नहीं।

अपनी आदमियत को, स्वयं खो रहा है आदमी।
दिनकर का उदय होने पर, भी सो रहा है आदमी।।
आम की चाह में बबूल, बीज बो रहा है आदमी।
इस नरभव को विषयों में, खो रहा है आदमी।।

भजन तर्ज– कर चले हम फिदा.......

शत् हमारा नमन गुरु चरण साथियो।
कर लिये हमने गुरु पद वरण साथियो।।टेक।।
श्रद्धा जमती गई भक्ति बढ़ती गई।
अंत गुरुवर को उर में बसा ही लिया।।
सारा जग छोड़कर हम यहाँ आ गये।
जीवन अर्पण चरण में स्वयं कर दिया।।
करना कर्मों का हमको पतन साथियो..कर लिये...।।1।।
कर्म करने के दिन आते बहुत हैं मगर।
गुरु भक्ति के दिन रोज आते नहीं।।
सेवा व्यापार तो रोज कर ही रहे।
साथ में कुछ भी तेरे यह जाये नहीं ।।
अतः भगवन का कर लो भजन साथियो कर लिये...।।2।।
जो भी कथनी और करनी तेरी यह रही।
होगा इसका वयां अंत के काल में।।
करो वह जो किया है नहीं आज तक।
वरना गिरना पड़ेगा काल के गाल में।।
सद्धरम से ही होगा चमन साथियो..कर लिये...।।3।।
खोजकर पग थके तीनों ही लोक में।
नहीं पाई शरण सच्चे जिनदेव की।।
आखिर मिल ही गई शरण गुरुदेव की।
'विशद'इसमें लगी अब लगन साथियो..कर लिये...।।4।।

सादा जीवन उच्च विचार

सादा जीवन उच्च विचार के विचारों से विख्यात महाराजा जयसिंह ने कोठे की राजकुमारी के साथ विवाह किया था। उस कोठे की राजबाला का स्वभाव उसका आचरण और पहनावा साधारण रानियों के समान सरल और आडम्बर हीन था। परंतु समृद्धिशाली अम्बेर राज के रनवास में रहने वालियों के बीच में राजा–रानियों के समान अत्यंत मूल्यवान वस्त्र और आभूषणों के धारण की रीति प्रचलित थी। कोठे की राजकुमारी इनको पहले से ही अच्छा नहीं मानती थी। एक समय अम्बेर के महाराज जयसिंह कोठे की राजकुमारी के साथ बैठे हुए थे। उन्होंने बातों ही बातों में कहा कि राजरानियों की अपेक्षा हमारे राज की नीच जाति की स्त्रियाँ भी अच्छे सुंदर रमणीय वस्त्र और आभूषण पहनती हैं। अम्बेर के महाराज कुछ काल के उपरांत एक काँच का टुकड़ा लेकर रानी के पहने हुए वस्त्र को काटने लगे। कोठे की राजकुमारी ने विचारा कि इससे तो मेरा घोर अपमान है। उसने उसी समय अपने पास से तलवार निकालकर क्रोधित हो वज्र के समान गंभीर वचन से कहा कि'' मैंने जिस वंश में जन्म लिया है वह राजवंश कदापि इस प्रकार की घृणा और उपहास के योग्य नहीं हो सकता। इस बात को आप स्मरण रखें कि परस्पर के प्रति सम्मान दिखाने से केवल दंपत्ति का सुख ही नहीं मिल सकता, धर्म की भी रक्षा होती है। फिर उस वीर बाला ने कहा कि महाराज यदि विलासिता चाहते हो तो वेश्याओं के यहाँ जाओ या मुगलों की चौखटे चूमों, मैं वीर बाला हूँ, वीर वेश पहनना जानती हूँ और तलवार के साथ। आओ सामने अब आप भली भाँति समझ जाएंगे कि अम्बेर के राजकुमार काँच के टुकड़ों को चलाने में चतुर नहीं है जितनी कोठे की राजकुमारी तलवार के हाथ चलाने में निपुण होगी।

विलासी महाराज भौंचक्के से रह गए। वीर पत्नी का वेश, वेश देखकर विलासिता नष्ट हो गई। चरणों में गिर गए और बोले देवी! क्षमा करो मैंने तुम्हें समझने में भूल की। वास्तव में तुम्हारे जैसी वीर बालाओं से ही हिंदू जाति का और धर्म का गौरव है। वर्ना हमारे जैसे विलासी तो कभी के हिंदू जाति को रसातल में भेज चुके होते। भारत के गौरव को विषयी लोगों के हाथों में बेंच चुके होते और भारत की आर्य सभ्यता को अनार्थों के हाथ में सौंपकर अज्ञान के सघन अंधकार में डूब गये होते।

अहा! धन्य है जो वीरांगना है, वीरनारी है, वीर दुहिता है, वीरवती है। वह फैशन क्या जाने? हाय! आज स्त्री–पुरुष घंटों चोटी/बाल संवारने में समय व्यतीत करते हैं। वह तलवार के हाथ क्या सीखेगे? पौरूष और वीरता कैसे प्राप्त करेंगी? शास्त्रों में स्त्री के छह रूप बताए है कहा है–

कार्येषु दासी कर्णेषु मंत्री, रूपेषु लक्ष्मी क्षमया धरित्री।
स्नेह च माता शयनेषु रम्भा, षट्कर्म युक्ता कुल धर्मपत्नि।।

अर्थात् स्त्री गृहस्थी के कार्य करने में सदा तत्पर रहती है। अतः दासी कहा गया है। दासी तो मात्र नौकरी के भाव से कार्य करती है किंतु पत्नि अपना गृह मानकर श्रेष्ठ करती है और गृहस्थ जीवन में आने वाली समस्याओं में पति के लिए मंत्रणा,कार्य देकर मंत्री का कार्य करती है तथा रूप में लक्ष्मी की भाँति निर्मल हृदय वाली होती है तथा क्षमाशील होती है। अतः पृथ्वी की भाँति निर्मल हृदय वाली कहा गया है। जिस प्रकार पुरुष अनेक भद्दे और गंदे कार्य करते हैं किंतु पृथ्वी सभी को क्षमा करती है। उसी प्रकार स्त्री पति की हर गलती को क्षमा कर पति को परमेश्वर के रूप में मानती है और स्नेह में माता के समान प्रेम देती है तथा शयन करने में रंभा के समान पति के लिए भोग का साधन बनकर रहती है। किंतु अवसर पड़ने पर सारथी और सेनापति का दायित्व भी निभाती है तथा हाथ में तलवार लेकर शत्रु के सिर चढ़कर बोलती है। किंतु सारे गुणों में प्रवीण होकर भी संस्कारों के अभाव में मिट्टी का पुतला बनकर जीवन व्यतीत कर देती है।

हमारा उत्थान किस प्रकार हो सकता है?

हाँ! यदि आज भारत की देवियाँ अपने अपमान का बदला लेना चाहें तो ले सकती हैं। जिस प्रकार रणक्षेत्र में चतुर महारथी चाहे तो शत्रुओं के कलेजों को कुचलता हुआ विजय प्राप्त कर सकता है और चाहे तो पीठ दिखाकर भाग सकता है। बस इसी तरह संतान की बागडोर माँ के हाथ में होती है। वह अपनी इच्छानुसार जैसा चाहे वैस बना सकती है। भारत की देवियाँ जो कि भगवान महावीर स्वामी, अकलंक देव, मर्यादापुरुषोत्तम रामचंद्र, छत्रपति शिवाजी की जननी कहलाने का सौभाग्य रखती हैं। जिसमें सती अंजना, अनसुइया, सीता, राजुल, मनोरमा, त्रिशला, लक्ष्मीबाई, पद्मिनी, दुर्गावती और कमलापत रानी जैसी जगत पूज्यनीय देवियों ने जन्म

लिया है। यदि वह चाहे तो हमें पूर्ण बलवान बना सकती हैं। इसमें आश्चर्य की क्या बात है? क्योंकि माता को बेटे के जीवन की प्रथम पाठशाला माना गया है और एक माँ को 100 शिक्षक के बराबर माना गया है।

माँ अपने बेटे को राम भी बना सकती है और रावण भी, कृष्ण भी बना सकती है और कंस भी, पार्श्वनाथ भी और कमठ भी बना सकती है। इस पवित्र कार्य के लिए बलवान बनाने के लिए उन्हें इंद्रिय-दमन करना होगा। फैशन का जड़मूल से नष्ट करना होगा। विलासता का मुँह काला करना होगा। जिस प्रकार एक चतुर माता गोद के बच्चे के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अपने खान-पान का उचित प्रबंध रखती है, कितनी ही चीजों से परहेज रखती है। उसी प्रकार उन्हें अपनी संतान के समस्त संस्कार पवित्र रखने होंगे। तभी भारतवासी बलवान बन सकेगें। फिर देखे कौन माई का लाल है जो भारतवासियों पर अत्याचार कर सकेगा। भारतवासी वीरों के अंदर में ज्ञान प्रकाश करना है। देश भक्ति और आत्मरक्षा हेतु भारतवासियों के अंतर में वीरता जागृत करना है।

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।
आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी।
शर्तें लेकिन थी की ये बुनियादी हिलनी चाहिए।।
हर सड़क पर हर गली में हर नगर हर गांव में।
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।।
सिफर्क हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही।
हों कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।।

आज दुनियाँ में तन के वीरों की कमी नहीं है। मन के वीरों की कमी अवश्य नजर आती है। न तो वीरों को आराम गौरव की शिक्षा दी जाती है और न मातृ भूमि का स्नेह सिखाया जाता है और न भोजन शुद्धि की ओर ध्यान दिया जाता। आज वीरों को पशुओं का माँस खिलाकर पुष्ट किया

जाता है तो शरीर का माँस तो बढ़ जाता है किंतु बुद्धि पशुओं का माँस खाने से पशुओं जैसी हो जाती है। इंसान भी बुजदिल, डरपोंक, कायर हो जाता है। कहा भी है-''जैसा खाओ अन्न वैसा होवे मन। जैसा पीओ पानी वैसी बोलें वाणी''।। क्योंकि जिन पशुओं का माँस खाया जाता है वह भी डरपोंक प्रकृति के होते हैं। प्यारे बंधु! क्रांति की आवश्यकता है किंतु हिंसक नहीं अहिंसक क्रांति के द्वारा सारे देश में खलबली मचा दी थी। आज भी आवश्कता है आचरण और वाक् पटुता की तथा सही सोच निर्णय लेने की। जिससे इंसान के अंदर अपना स्वाभिमान जाग्रत हो और इंसान धर्म परायण एवं सामाजिक बन सके।

मेरे बागवान

गुरुवर क्या मिल गये, दो जहान मिल गये।
उजड़े हुए चमन को, बागवान मिल गये।।

तेरे कदम निशान बने, मंजिलें मेरी।
पा मंजिलें स्वयं से ही, अंजान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।1।।

मन नहीं करता अब कभी, स्वर्गों की कामना।
मेरे लिए तो आप ही, भगवान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।2।।

बस मेरी जिन्दगी का सफर, अब हुआ खतम।
तेरे कदम थमे, मेरे मुकाम हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।3।।

क्षमामूर्ति कहो या विशदसागर जी कहो।
ये नाम आपके मेरी पहचान बन गये।।
उजड़े हुये चमन को, बागवान मिल गये।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।4।।

हमारी शिक्षा और दीक्षा

दुनियाँ में मनुष्य समाज ने बड़ी भूल की है महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'स्वदेश' पुस्तक में लिखा है कि आजकल भारतवर्ष का जो इतिहास पढ़ाया जाता है जिसे रट कर लड़के परीक्षा देते हैं। वह भारत का इतिहास आधी रात के सन्नाटे में दिखाई दिये स्वप्न की कहानी है। न जाने कहाँ कौन आए? लड़ाई–भिड़ाई मार–काट का शोर मचाया, पिता–पुत्र और भाई–भाई में राज–गद्‌दी के लिए चोटें चलने लगीं। एक दल आता है तो दूसरा दल जाता है। वह सिधारता है तो तीसरा आता है। पठान, मुगल, पोर्च्युगीन, फ्रांसीसी, अंग्रेज सबने मिलकर उस दुःस्वप्न को उत्तरोत्तर जटिल बना डाला है। किंतु इस प्रकार रक्तरंजित, चंचल स्वप्न का पर्दा डालकर देखने से भारत का यथार्थ रूप दिखाई नहीं दे सकता। इस पृथ्वी पर भारत निवासियों का स्थान कहाँ हैं? इसका कुछ भी उत्तर इतिहास नहीं देता। इन्हें देखने से तो यही जान पड़ता है कि भारतवासी कहीं है ही नहीं। भारत में जो लोग खून खराबी, मार–काट, लूट–पाट कर गए हैं वही जो कुछ हैं सो हैं।

'मगर क्या उस दुर्दिन में उस मार–काट खून–खराबी के सिवा और कुछ था ही नहीं? आँधी के समय आँधी हीउस समय की प्रधान घटना रही है। यह बात आँधी और बादलों के लाख–लाख गरजने पर भी नहीं मानी जा सकती। उस समय उस आँधी पानी के दिन भी इस धूल–धूसरित आकाश के तले घर–घर सुख और दुःख का काम जारी था। वह काम आँधी के मारे चाहे दीख पड़े पर, हमारे लिए वही जानने की चीज है। हमें इस समय उसी को जानने की आवश्यकता होती है। किंतु हमारे लिए वहाँ प्रधान ज्ञेय होने पर भी विदेशियों के लिए वह आँधी प्रधान घटना है। उस समय आँधी की धूल उनकी आँखों में ऐसी भर गई कि वह और कुछ देख भी नहीं सकते, इसका कारण यह है कि हमारे घर के बाहर हैं। इसी से हम विदेशी लेखकों के लिखे भारत के इतिहास में उसी धूल और आँधी का वर्णन पाते हैं। अपने घर का हाल कुछ नहीं जान पाते''।

यही कारण है कि हम लोग लड़कपन में ही भारत वर्ष को छोटा समझते हैं और आप भी छोटे बनते हैं। अंग्रेज का बच्चा जानता है कि उसके बाप दादाओं ने अनेक युद्धों में जो लक्ष्मी प्राप्त की है। अनेक देशों पर कब्जा करके वहाँ अपने देश का बणिज व्यापार फैलाया। इसी से वह अपने रणगौरव, धनगौरव और राज्यगौरव के योग्य बनना चाहता है और हम जानते हैं कि हमारे बाप दादा बिल्कुल असभ्य कायर और मूर्ख थे। उन्होंने न किसी युद्ध में विजय वैजयन्ति उड़ाई न किसी देश पर अधिकार जमाया और न अपने देश की उन्नति की। हमको यही जताने के लिए शायद यह भारत का इतिहास है। हमारे बाप–दादों ने क्या किया? सो तो हम कुछ नहीं जानते।

''हम इसके लिए दोष किसको दें? लड़कपन से ही हम जिस ढंग से शिक्षा पाते हैं। उससे शिक्षा में पहिले ही दिन से ही देश के साथ जो हमारा हार्दिक संबंध है वह विछिन्न होता चला जाता है। परिणाम यह होता है कि हम धीरे–धीरे देश के दुश्मन बनते चले जाते हैं।''

एक समय में दो विदेशी बादशाहों का युद्ध हुआ। विजयी बादशाह ने परास्त हुए देश में अपने मंत्रियों को इसलिए भेजा कि वह बचे हुए? प्रमुख विरोधियों को चुन–चुनकर मार डालें किंतु मंत्री ऐसा न करके कुछ काल के उपरांत विजयी बादशाह के पास लौट आया। बादशाह मंत्री के इस व्यवहार से अत्यंत क्रुद्ध हुआ। बादशाह मंत्री को दंड देने का विचार करने लगा।

मंत्री बादशाह के अभिप्राय को समझ गंभीरतापूर्वक बोला– श्रीमान् आप मुझे चाहे प्राण दंड दे दें। क्योंकि मैंने जो कार्य किया है वह आपकी बुद्धि के परे है, किंतु मेरे देशवासी मेरी चातुर्यता का गुणगान किए बिना न रहेंगे। यदि मैं आपकी आज्ञानुसार विरोधियों को मरवा डालता तो ध्यान रहे विरोधी दल कभी शाँत न होता। एक न एक दिन उनकी संतान इस अत्याचार का बदला लेती। सभी जगह दमन नीति से कार्य नहीं चलता। मैंने वह कार्य किया है कि वह देशवासी जीते जी मृतक समान रहेंगे, वह पुस्तान पुस्त दासत्व की बेड़ी में जकड़े रहेंगे। कहा भी है–

मारना चाहो किसी को तो मार दो ऐहशान से।
क्या मिलेगा गर किसी को मार दोगे जान से।।
जान से मारा गया वापस कभी आता नहीं है।
अहसान का मारा गया फिर सिर उठा पाता नहीं है।।

राजा के उत्सुकता पूर्वक पूँछने पर मंत्री पुनः बोला– श्रीमान् मैंने उस देश में कितने ही ऐसे शिक्षालय खुलवा दिये हैं जिनमें आपके धर्म, रीति–रिवाज, न्याय, वीरता सभी बातों का गुणगान होगा। उस देश के पूर्वजों तथा रहन–सहन, रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार इत्यादि की सभी बातों की बुराई होगी। इन शिक्षालयों में बालक पढ़ेंगे वह आपके प्रत्येक कार्य के अनुयायी और अपने देश के शत्रु होंगे। आपके अहसान तले दबे रहेंगे। यही पॉलिसी भारतवर्ष के लिए भी उपयोगी समझी गई। जहाँ बालकों को प्रातः उठते ही महान् आत्माओं का पवित्र जीवन पढ़ना था, कुछ धार्मिक नित्य नियम करना था। वहाँ वह बेचारे मुँह से सिगरेट लगाकर सी.ए.टी. कैट माने बिल्ली, आर.ए.टी. रेट माने चूहा इत्यादि रटकर मुहल्ले भर को सिर पर उठाने को मजबूर होते हैं या फिर कागज कलम तथा स्केल लेकर कभी त्रिभुज, चतुर्भज, षट्कोण, वृत्त आदि के चित्र बनाते या कभी नदियों, पहाड़ों, कंदराओं, घाटियों के चित्र बनाकर अपने आप को योग्य मान बैठते हैं या हाथी, घोड़े, बिल्ली, कुत्ते के नमूने तैयार करके प्रसन्न हो लेते हैं।

आज किसी विद्यार्थी से पूँछा जाए कि बताओ सबसे बड़ा जंगल कहाँ है? तो वह चट अफ्रीका के जंगल में कूद जाएंगे। किंतु उन्हें क्या मालूम कि भारतवर्ष में भी ऐसा जंगल है जहाँ पर राम और लक्ष्मण ने 14 वर्ष का वनवास का समय व्यतीत किया था। जहाँ पांडवों ने अपने अज्ञात वास के दिन पूरे किये थे। जहाँ आदिनाथ से महावीर तक, बाहुबली और बाल्मिकी जैसे संतों ने साधना की थी। जहाँ कि भामाशाह जैसे नर रत्न पैदा हुए है। इनका जन्म कांवडया संज्ञक ओसवाल जैन कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम मारमल्ल था और वह महाराणा उदयसिंह के प्रधान रहे थे। पश्चात् महाराणा प्रतापसिंह के समय भामाशाह मालवे में रामपुरे की तरफ

चले गए। मालवे पर चढ़ाई करके पच्चीस लाख रुपये, बीस हजार असर्फी दंड स्वरूप वसूल की। इधर महाराणा प्रताप ने सेना न होने के कारण वीरान जंगलों में भटकते फिरते थे। उन्हें घास की रोटी तक नसीब न होती थी। किंतु मेवाड़ को हिंदूधर्म द्रोही यवनों के चुंगल से छुड़ाने की उनके हृदय में प्रबल इच्छा थी। तब ऐसे समय में जैन वंशोत्पन्न भामाशाह ने देश भक्ति तथा स्वामी भक्ति से प्रेरित होकर कर्नल जम्स टाड के कथनानुसार महाराणा को धन भेंट किया था। वह इतना था कि कुछ और मिलाने से महाराणा 24 हजार सैनिकों को 12 वर्ष तक रख सकते थे। भामाशाह के इस अपूर्व त्याग के विषय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि–

जो धन के हित नारि तजै,
पति पूत तजै पितु शीलहि सोई।
भाई सो भाई लरैं रिपु से पुनि,
मित्रता मित्र तजैं दुःख जोई।
ता धन को बनियाँ है गिन्यो न,
दियो दुःख देशके आरत होई।
स्वारथ अर्थ तुम्हारोई है,
तुमरे सम और न या जग कोई।।

आह! कैसा स्वार्थ त्याग है। जिस धन के लिए औरंगजेब ने अपने पिता को कैद कर लिया। अपने बड़े भाई को निर्दयतापूर्वक मरवा डाला। जिस धन के लिए बनवीर ने अपने भतीजे मेवाड़ के उत्तराधिकारी बालक उदयसिंह को मरवा डालने के लिए अनेक प्रयत्न किए। जिस धन के लिए मारवाड़ के लिए अनेक प्रयत्न किए। जिस धन के लिए मारवाड़ के कई राजाओं ने अपने पिता और भाईयों का संहार किया। जिस धन की चाह में भरत ने बाहुबली से युद्ध किया उसी धन को भामाशाह देश को अर्पण करता है। कितना ऊँचा त्याग है? देश तथा हिंदू जाति के लिए कितना गहरा अनुराग है। वह कोरा त्यागी ही नहीं किंतु वीर था। भामाशाह के दिए हुए रुपयों का सहारा पाकर महाराणा प्रताप ने फिर बिखरी हुई शक्ति को

बटोरकर रणभेरी बजा दी जिसे सुनते ही शत्रुओं के हृदय दहल गए। फिर शीघ्र ही महाराणा प्रताप ने अपने वीर सैनिकों की सहायता से सं. 1643 में चित्तौड़ और मण्डलगढ़ को छोड़कर समस्त मेवाड़ पर अधिकार कर लिया। इस विजय का सेहरा वीर भामाशाह के उन्नत मस्तक पर बाँधा गया।

आज भी मेवाड़ वासी उसे मेवाड़ के नाम से उन्हें याद करते हैं। ऐसी ही कई एक विभूतियाँ भारत में उत्पन्न हुई हैं। जिन्होंने देश और समाज के हित में अनेक कार्य किए। किंतु लोग उन्हें पहिचान नहीं पाते। यूँ कहें कि भारत में भारतीयों का नहीं, विदेशियों का गौरव गाया जाता है। अतः भारतीय उनसे अनभिज्ञ रहते हैं। कहावत है ''इंसान को स्वयं का चेहरा नहीं दिखता।'' वीरों का जिक्र छिड़ते ही भारतीय विद्यार्थियों की नेपोलियन बोनापार्ट का गुणगान करते समय छाती फूल उठती है कि उन्हें क्या मालूम कि यहाँ भी पृथ्वीराज जैसे बलवान हुए हैं जिसने मोहम्मद गौरी को युद्ध में 16 बार बंदी बनाकर छोड़ दिया था। जो युवक शेक्सपियर और मोलियर के नाटक पढ़ने से नहीं अघाते। उन्होंने क्या कभी भारतीय ग्रथों को उठाकर देखने का कष्ट किया है? उठाकर भी कैसे देखे? उन्हें तो सिखाया ही यह जाता है कि भारतीय पहले जंगली थे, असभ्य, नग्न फिरा करते थे, शिवाजी लुटेरा था, पहाड़ी चूहा था इत्यादि।

ता.30.1.28 की शाम को दिल्ली हिंदु कॉलेज में जर्मन से आए हुए प्रोफेसर ''डब्लू शुब्रिंग'' ने अपने व्याख्यान में कहा था कि ''जैन धर्म के संस्कृत सिद्धांत एवं अध्यात्म ग्रंथों में बहुत कुछ सामग्री है इनका स्थान संसार के साहित्य से बहुत ऊँचा है आदि।

अब इनके व्याख्यान का हिंदी अनुवाद करने के लिए कहा गया तब वहाँ कई डबल एम.ए. किए जज और कितने ही ग्रेजुएट बैठे थे। इन सबने यह कहकर इंकार कर दिया कि प्रोफेसर साहब के विचार बहुत ऊँचे हैं, इनकी खोज गहरी है, जिन शास्त्रों का उन्होंने उल्लेख किया है। हमने आज तक उनका नाम तक नहीं सुना। उनका इतना कहना था कि लोग हँस पड़े। उसी समय एक अजैन प्रोफेसर ने खड़े होकर कहा कि जिस जाति में ऐसे–ऐसे पढ़े लिखों को भी अपने धर्म का ज्ञान नहीं है। वह जाति

कुछ अपना स्वत्व रख सकेगी। मुझे तो इसमें आश्चर्य है। जिस धर्म में जिनसेन, समंतभद्र, उमास्वामी, अकलंकदेव, कुंदकुंद स्वामी, पात्र केशरी जैसे अद्‌भुत विद्वान हुए। जिन्होंने अपना अमूल्य समय लगाकर हर प्रकार की असुविधा होने पर ताड़पत्रों पर जयधवल, महाधवल, आप्तपरीक्षा, मोक्षशास्त्र, गोम्मटसार, प्रमेयरत्नमाला और प्रमेयकमल मार्तण्ड जैसे महान् ग्रंथ रचे। जिनको देखकर संसार के सभी विद्वान चक्कर खाते हैं उन्हीं को आज हम पढ़ना व्यर्थ समझते हैं।

भारत पराधीन कैसे हुआ? हमारा पतन क्यों हुआ और हमें बलहीन एवं शक्तिहीन किसने बनाया? इन सब प्रश्नों का समाधान हमारी विलासिता बचपन के जहरीले संस्कार, हमारी शिक्षा और दीक्षा आदि उपर्युक्त शीर्षक विषयों से हो जाती है फिर भी जिन महानुभावों का विश्वास है कि अहिंसा धर्मावलंबी कायर होते हैं। यह देश समाज आदि की रक्षा के लिए आताताइयों से युद्ध करना पाप समझते हैं। उन्हें ''जैनी अहिंसा'' क्या है? प्रथम इसका मनन करना चाहिए। आगे के पृष्ठों में इसी विषय का स्पष्टीकरण करना आवश्यक प्रतीत होता है।

गुणगान शायरी का होता है, कायर का नहीं।
धर्म आर्यों का होता है, अनार्यों का नहीं।।
मान और सम्मान सभी चाहते हैं, प्यारे भाई।
सम्मान वीरों का होता है जहाँ में, कायरों का नहीं।।

अहिंसा वीरों का आभूषण है, कायरों का नहीं

भगवान महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण परम अहिंसक थे। उन्होंने किसी इंसान की तो बात क्या किन्हीं कीड़ों और पतंगों को भी नहीं सताया तो क्या वे कायर थे? नहीं। यह सभी महापुरुष वीर थे, महावीर थे। भगवान नेमिनाथ ने पशुओं का करुण–क्रंदन सुनकर उन्हें अभय प्रदान किया और संसार की विचित्र दशा को देखकर वैराग्य धारण कर केवलज्ञान जगाया और जन–जन के प्रभु होकर प्राणी मात्र के कृपा पात्र हुए। उन्हीं के चचेरे भाई श्री कृष्ण ने पशुओं (गायों) के साथ में रहकर क्रीड़ा की उन्हें गले लगाया उन्हें इतना स्नेह प्रेम दिया कि पशु उनके न मिलने पर दुःखी होने लगते थे। दूसरी ओर सात्यिकी रूद्र (शंकर) ने शत्रु कहे जाने वाले सर्प और बिच्छु आदि जीवों को कंठ का हार बनाया। शत्रु को भी गले लगाया। भगवान पार्श्वनाथ ने कमठ को अभय प्रदान किया। भारत भूमि पर जब चारों ओर चीत्कार की आवाज आ रही थी। पशु तो ठीक मनुष्यों की बलि दी जाती थी। अबला स्त्रियों को पति के साथ जलती हुई आग में झोंक दिया जाता था। बच्चों को पशुओं की भाँति बेचा जाता था। दास प्रथा अपने पैर फैलाए आनंद मना रही थी। इस स्थिति में भगवान महावीर, बुद्ध के अंतर में करुणा जागी और प्राणी मात्र को अभय दिलाया। अब हम जानना चाहते हैं कि यह महापुरुष वीर–महावीर थे या कायर, जिनका नाम श्रद्धा भक्ति के साथ लिया जाता है सारे विश्व में जिन की पूजा होती है। उनकी जयंती मनाई जाती है, लोग उनके गुणगान करते हुए नहीं थकते हैं। अनेक सभाओं और जुलूसों के द्वारा उनके गुणों का प्रचार प्रसार करते हैं।

दूसरी ओर हम देखते हैं, इतिहास बताता है कि कुछ राजा लोग हुए हैं जिन्होंने अपनी वीरता के द्वारा कई राज्यों पर अधिपत्य जमाया जैसे सिकंदर, मोहम्मद गौरी, औरंगजेब, रावण, कंस, जरासंध इत्यादि राजाओं ने अपनी वीरता से अनेक राजाओं को परास्त कर उन्हें मौत के घाट उतारा और अपना राज्य स्थापित कर विशेष क्रांति खड़ी की तो क्या आज कोई

उनका नाम लेने वाला भी है? आज उनके पुतले जलाएँ जाते हैं। जो उनका नाम था, उस नाम से भी लोग चिड़ते हैं, उस नाम पर लोग थूकते हैं। आज वह नाम भी कोई रखने को तैयार नहीं है अब आप विचार करें कि वीर कौन हैं? और कायर कौन है?

प्यारे बंधु! मूक और निरीह प्राणियों का घात जिस युद्ध में जिस वीरता में हो वीरता नहीं वह कायरता है। वीरता तो वह है जिसमें मूक प्राणियों की रक्षा में अपने जीवन को दाव पर लगाया जाता हैं। वीरता का युद्ध लड़ा गया था भरत और बाहुबली के द्वारा, जिसमें बाहुबली ने भरत को तीन युद्ध (जल्ल, मल्ल, नेत्र) में हराकर भी संयास धारण कर परम अहिंसक बनकर सारे विश्व के आदर्श बने। राम ने लंका को जीतकर भी विभीषण को राजा स्थापित कर राज्य वापिस किया और आदर्श बन गये। बाहुबली, राम, महावीर, गांधी आदि महापुरुष ही परम अहिंसक हुए। जैन सिद्धांत उस अहिंसा की बात करता है जहाँ सामान्य इंसान की तो बात क्या विद्वानों की भी पहुँच नहीं है आचार्य अमृतचंद्र स्वामी ने कहा है–

अप्रादुर्–भावः खलु ,रागादीनां भवत्य हिंसेति।
तेषा–मेवोत्पत्तिर्–हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।। पु.44।।

इससे सिद्ध होता है कि अहिंसा मात्र पर प्राणियों की रक्षा का नाम नहीं, बल्कि स्वयं के आत्मिक परिणामों को प्राप्त होना अहिंसा है। उस अहिंसा को पाने के लिए वीतरागता की ओर बढ़ना होगा और पर पदार्थों से पूर्ण रूपेण निवृत्ति प्राप्त करनी होगी। जब तक राग–द्वेष रूप परिणामों में जियेगा तब तक पूर्ण अहिंसक नहीं हो सकता है और अहिंसक हुए बिना धर्म प्रकट नहीं होगा। **भगवान महावीर का नारा सार्थक नहीं होगा।** भगवान महावीर का नारा है ''अहिंसा परमो धर्मः'' स्वयं का सहारा बनकर बेसहारा बनना है।

इंसान जब संसार में आता है तो सहारा लेकर आता और जाता है तो भी सहारा लेकर जाता है। जब आता है तो माँ का सहारा लेता है, जाता है तो बेटों के कंधों का सहारा लेकर जाता है। इसलिए इंसान की आदत सहारा

खोजने की पड़ गई है। सहारे भी खोजता है तो मृत और जड़ सहारे खोजता है। इंसान जिंदगी में न जाने किस-किस का सहारा खोजता है। भूख लगती तो रोटी का सहारा लेता है। प्यास लगती है तो पानी का सहारा लेता है। थक जाता है तो पलंग का सहारा लेता है। बुढ़ापे में लाठी का सहारा लेता है। कोठी और बेटा-बेटी को सहारा बनाता है। अरे! इंसान तो वह है जो सहारा होकर जीता है और अंत में स्वयं बेसहारा बनकर जाता है। जो स्वयं सहारा खोज रहा हो वह औरों को क्या सहारा दे सकेगा? यदि सहारा ही चाहिए तो उसका सहारा खोजो जो स्वयं बेसहारा है अर्थात् किसी सहारे से रहित स्वयं के सहारे जी रहा है। ऐसे परमात्मा को सहारा बनाओ तो फिर स्वयं भी बेसहारा खड़े होकर सारी दुनियाँ को सहारा बना सकते हो। आचार्य मानतुंग स्वामी ने भक्तामर स्तोत्र में कहा है।

वालम्बनं भव जले पततां जनानां।

परमात्मा का आलम्बन लेने वाला भवसागर से पार हो जाता है। संसार के मायाजाल से छूट जाता है। एक बार एक मछुआरा मछली पकड़ने तालाब में गया। उसने जाल फेंका तो बहुत सी मछलियाँ जाल में फँस गई। किंतु पास में ही एक मछली खिल-खिलाकर हँस रही थी। तब जाल में फँसी हुई मछलियों ने उससे पूछा हम और तुम साथ-साथ खेले किंतु तुम बच गई हो क्या बात है? तब बाहर हँसती हुई मछलीयों ने कहा कभी-कभी समझदारी से काम लिया जाता है तो वे सारे काम सफल हो जाते हैं। मछली ने कहा- जब मछुआरे ने जाल फेंका था तब तुम सब दूर भाग रही थी और मैं उसके पैरों के पास पहुँच गई थी। इसलिए तुम दूर भागने से जाल में फँस गई और हम मछुआरे के पैरों के पास जाने से बच गये यही हाल संसार का है। जो इंसान प्रभु के चरणों से दूर जाता है वह संसार चक्र में फँस जाते हैं। प्रभु के चरणों में पहुँचने वाला संसार चक्र के किनारे पहुँच जाते हैं।।

पारा कसौटी पर कभी भी कसता नहीं है।
प्रभु चरणों में जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं है।।
परमात्मा के चरणों की महिमा निराली है बंधु।
परमात्मा के चरणों में रहने वाला संसार में फँसता नहीं।।

गुरु और प्रभु के चरण पकड़ने वाला जीवन में आचरण पकड़ प्राप्त कर लेता है और तारण-तरण बन जाता है। बेसहारा बन जाता है। भगवान महावीर स्वामी समवशरण में विराजमान थे। चतुर्निकाय के देव उनकी सेवा में निमग्न थे। गौतम स्वामी मुख्य गणधर के रूप में भगवान की दिव्यदेशना को झेलकर भव्य जीवों को श्रवण करा रहे थे। तभी गौतम स्वामी के अंदर भाव आया और उन्होंने भगवान से पूछा-हे भगवन्! मुझे केवलज्ञान क्यों प्राप्त नहीं हो रहा है? तब भगवान की दिव्य देशना से उत्तर मिला- गौतम तुम्हें राग लगा है इसलिए केवलज्ञान प्राप्त नहीं हो पा रहा है। तब गौतम ने कहा-भगवान मुझे किसी से राग नहीं है। मैंने सारा राग उसी समय छोड़ दिया था जब दीक्षा धारण की थी। मैंने अपने माता-पिता, भाई-बंधु, परिवार, धन-दौलत को उसी समय त्याग दिया था जब घर छोड़ा था अब मुझे किसी से भी राग नहीं है।

भगवान ने कहा-गौतम तुम्हें मुझसे राग लगा है। गौतम स्वामी चौंक कर कहते हैं- भगवान आपने ही तो कहा था कि संसार और संसार के पदार्थों से राग को छोड़कर प्रभु से अनुराग करो।

भगवान ने कहा- तब कहा था जब तुम संसार के दल-दल में फँसे हुए थे किंतु अब तुम स्वयं समर्थ हो गए हो। अब राग नहीं वीतरागता की आवश्यकता है। जिस प्रकार छोटा सा बालक हो तो उसे उंगली पकड़कर चलाया जाता है। लेकिन बड़ा होने पर भी उंगली पकड़कर चलता रहे तो क्या बालक की समझदारी है?अर्थात् नहीं।

गणधर स्वामी को समझ में आया और उन्होंने स्वयं का ध्यान किया और जैसे ही भगवान का निर्वाण हुआ। भगवान के मोक्ष जाते ही गौतम स्वामी बेसहारा हो गए, स्वयं में खो गए और अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त कर बेसहारा होकर संसार में पतित जनों के सहारा बन गये।

स्वयं से स्वयं में जो स्वयं खो गये।
कर्म आतम के वह तो सभी धो गये।।
छोड़कर के सहारा जगत के विशद।
बेसहारा वह स्वयं के स्वयं हो गये।।

भगवान महावीर कहते हैं जो स्वयं को पा जाता है, स्वयं में छा जाता है। वह परमात्म पद को पा जाता है इसलिए सहारा नहीं बेसहारा होना चाहिए। कहा भी है–

मत ढूंढ सहारे ए दिल सहारे छूट जाते हैं।
जोश लहरों को आता है तो किनारे टूट जाते हैं।।

हम सहारा नहीं बेसहारा बनकर परम शुद्ध दशा को पाकर सिद्ध–भूमि पर बेसहारे बनकर रहें। यही हमारी आत्मा की परम परिणति है। नियति है स्वभाव है।

संसार चक्र से बचने हेतु बुलंदी का नजारा चाहिए।
अब संसार भ्रमण नहीं जिंदगी का किनारा चाहिए।।
बहुत खोजे सहारों के सहारे दुःख भरी दुनियाँ में।
अब संसार से छूटने के लिए बेसहारों का सहारा चाहिए।।

****

विशद वाणी

फूल खिलाये नहीं जाते स्वयं खिलते हैं।
सूर्य चाँद चलाये नहीं जाते स्वयं चलते हैं।।
चित्त का चिंतन बदलने पर प्यारे भाई।
इंसान के चेहरे बदले नहीं जाते स्वयं बदलते हैं।।

****

फूल में फूलों नहीं शूल में कूलो नहीं

भगवान की बात तो दूर है वो आदमी कभी दुनियाँ में इंसान भी नहीं बन सकता। जो ईंट का जवाब पत्थर से देता है,थप्पड़ का जबाब मुक्के से देता है और गाली का जबाब गोली से देता है, धरती का भगवान तो वह है जो ईंट का जबाब फूल से देता है। गाली का जबाब गीत से देता है और थप्पड़ का जबाब हाथ जोड़कर देता है। घृणा करने वालों से भी प्रेम का व्यवहार करता है, जो सामने वाले को क्षमा नहीं कर सकता और अपने अपराध की क्षमा माँग नहीं सकता है। वह इंसान कभी दुनियाँ में ऊँचाई को प्राप्त नहीं कर सकता है। जिस परिवार में एक गलती करे और दूसरा उसे माफ करने के लिए तैयार हो जाए तो वह घर सदा स्वर्ग है। गलती करने वाला गलती मानने के लिए तैयार हो जाए तो उस घर में हमेशा शांति कायम रहेगी। लेकिन जिस घर में इससे उल्टा हो, गलती करके भी अपनी गलती मानने को राजी न हो और सामने वाला किसी भी शर्त पर माफ करने को तैयार नहीं हो, उस घर का क्या होगा? वह घर, वह परिवार बर्बाद हो जायेगा। उसे नरक बनने में कोई नहीं रोक सकता।

किसी को बेवजह सताना उपसर्ग नहीं तो क्या है?
संसार में भगवान है कि नहीं ये कुतर्क नहीं तो क्या है?
आये दिन जहाँ कलह और झगड़े हुआ करते हैं।
आप बताओ उनका घर नरक नहीं तो और क्या है?

हम लोगों से कहते हैं–लड़ लो, झगड़ लो। अपने को रोक न सको तो पिटपिटा लो मगर झगड़े के दो घड़ी बाद, घंटे भर बाद उसे भूल जाओ। सामने वाले से क्षमा याचना कर लो। हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र बोल लो। बस, वह झगड़ा झक मारकर नौ दो ग्यारह हो जायेगा, भाग जायेगा। भगवान न करें अगर कभी घर में झगड़ा हो जाये, झगड़ा हो सकता है। जहाँ चार छह लोग रहते हैं।

वहाँ झगड़ा होना कोई नई बात नहीं है। घर में चार बर्तन होंगे तो थोड़ी बहुत तो आवाज तो होगी ही। श्री कृष्ण के घर में झगड़ा होता था। इतना बड़ा महाभारत झगड़ा नहीं तो और क्या है? भगवान आदिनाथ के घर में भी झगड़ा होता था भरत और बाहुबली में झगड़ा हुआ कि नहीं? रामजी के घर में भी झगड़ा होता था। कैकयी और मंथरा के कारनामें झगड़ा नहीं तो और क्या है? घर की बात तो क्या विश्व में, देश में, प्रांत में, शहर में, समाज में सभी जगह झगड़ा होता है और यदि तुम्हारे घर में झगड़ा हो जाये तो कोई बड़ी बात नहीं है। तो मेरी यह बात हमेशा याद रखना लड़ लेना, झगड़ लेना, सुन लेना, सुना देना, मगर लड़ने-झगड़ने के बाद बोलचाल बंद मत करना। अंदर में गांठ नहीं बाँधना अगर बोलचाल बंद हो गई तो वाकई में गड़बड़ हो जायेगा। क्योंकि बोलचाल बंद होने पर क्रोध बैर का रूप ले लेता है और वह बैर बहुत दुःखदायी होता है। क्रोध उतना दुःखदायी नहीं जितना कि दुःखदाई बैर है। कमठ और पार्श्वनाथ का प्रसंग, सुकुमार का, सुकौशल का, गजकुमार मुनि का, प्रद्युम्नकुमार का प्रसंग बताता है कि बैर कितना दुःखदायी है। एक क्षण का बैर अनेक भवों तक चलता है। वह भी एक तरफा, अगर पार्श्वनाथ भी क्रोध करने लग जाते, बैर रखने लग जाते तो हालत क्या होती? अगर सामने वाला क्रोधी स्वभाव का है, तेज स्वभाव का है तो तुम शांति का परिचय दे देना। चमार नहीं बनना।

एक बार एक स्थान पर साधुजी विराजमान थे। पास में उनका शिष्य बैठा हुआ था। धर्म चर्चा चल रही थी, तभी शिष्य से बैर रखने वाला चमार वहाँ आकर उसे गालियाँ देने लगा। शिष्य शांत भाव से बैठा धर्म चर्चा में लगा रहा। उसने गालियाँ देते हुए कहा-''एक बाप का हो तो यहाँ आकर देख। मैं तेरी चमड़ी उधेड़ दूँगा।'' इतना सुनते ही शिष्य को भी क्रोध आ गया। तब शिष्य ने कहा-अब यदि आगे बोला तो तेरी जीभ खींच लूँगा और फाड़कर दो कर दूँगा। बहुत देर हो चुकी है और पुनः गुरुजी वहाँ से उठकर कुटिया में जा चुके थे। द्वार बंद कर ध्यान करने में लीन हो गये।

शिष्य ने कई बार गुरुजी को पुकारा किंतु कोई उत्तर नहीं मिला। परेशान होकर वह वहाँ से चल दिया। दूसरे दिन शिष्य ने गुरुजी के पास जाकर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए पूँछा-गुरुजी पहले तो आप इतनी देर तक वह चमार बकता रहा गालियाँ देता रहा, तब तक आप वहाँ बैठे रहे, किंतु मेरे जवाब देते ही आप वहाँ से उठकर कब अंदर चले गये, मुझे कुछ पता ही नहीं चला और फिर मैंने बहुत देर तक दरवाजा खुलवाने के लिए निवेदन किया किंतु आपने फिर फाटक क्यों नहीं खोला? तब गुरुजी ने उत्तर दिया-चमार तुम्हारे अंदर घुस गया था। इसलिए तुम्हारे पास ना तो मैं बैठ सका और न ही अपनी कुटिया में आने दिया था। तुम जब तक शांत रहे तब तक मैं बैठा रहा।

अर्थात् चमार तो चाण्डाल है ही तुम उसे गालियाँ देकर स्वयं ही चमार बन गये थे। अतः मेरे पास बैठने लायक नहीं रहे थे। कहने का अर्थ है कि शिष्य क्रोध करने से संत के पास बैठने लायक नहीं रहा। जब तक क्षमा धारण करता रहा तब तक संत के पास था। संत शिष्य के पास थे,अतः क्षमा धारण करना ही इंसानियत है। यदि किसी ने तुम पर क्रोध किया तो तुम भी क्रोधित हो गये तो जीता कौन? क्रोधी जीता या तुम जीते। उस क्रोधी का प्रभाव तुम्हारे ऊपर पड़ गया। इसलिए वह जीत गया औ तुम हार गये। क्रोधी के क्रोध करने पर भी तुम उत्तेजित न हो, शांत बने रहो तो तुम जीते और वह हार गया। यदि कोई तुम्हें यद्वा-तद्वा कह दे, भला बुरा कह दे तो कह देने दो, उसके बुरा कहने से तुम बुरे नहीं हो जाते। तुम तो वही रहोगे जो तुम हो, लेकिन तुम जरा सी बात पर विचलित हो जाते हो। किसी ने तुम्हारी जरा सी बुराई कर दी, तुम्हारा अपमान कर दिया। तुम्हें दो कड़वे शब्द कह दिये, तुम आपे से बाहर हो जाते हो, आग-बबूला हो जाते हो। कोई पूँछता है क्या हुआ? क्यों अंगार बन रहे हो? तो तुम कहते हो उसने मुझे ऐसा कह दिया। अरे भाई! कह दिया तो कह दिया अब तुम कोई

लखनऊ के नवाब तो नहीं हो कि तुम्हें कोई कुछ कह नहीं सकता। अब तो लखनऊ के नवाब के बेटे भी तांगे खींच रहे हैं। यह तो संसार है। यहाँ कोई न कोई कुछ न कुछ बोलेगा जरूर और बोलेगा भी ऐसा जो सहन न हो। दिल के आर पार हो जाएँ। मगर तुम उन कटु बोलों में भी दिल को खराब मत होने देना। निंदा सुनकर घबराना नहीं। जो तुम्हारी निंदा कर रहा है, बुराई कर रहा है उसे तो पाप लग रहा है। मगर यदि तुमने उस निंदा को शांत भाव से सहन कर लिया तो तुम्हारा पुण्य बढ़ जायेगा। निंदक तो तुम्हारे पाप हल्के कर रहा है। कहा भी है–

निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,निर्मल करे सुभाय।।

इसलिए अपनी निंदा को सुन लो और मुस्करा दो कभी प्रभु से प्रार्थना करने का मन करके तो उस प्रार्थना में केवल यही कहना हे भगवन्! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मेरे कान मेरा विरोध कर सकें। प्रभु के चरणों में बैठकर ऐसी जीवंत प्रार्थनाएँ करो जो जीवन में काम आएँ, जीवन के लिए हों। अभी तो तुम भगवान के चरणों में बैठकर यही कहते हो कि हे प्रभु! तू ऐसा है, वैसा है, इतना महान् है, इतना ऊँचा है, इतना पावन है, पवित्र है, शक्तिशाली है। अरे भाई! ये क्या बकवास लगा रखी है, प्रार्थना के नाम पर? भगवान की ऊँचाई और पवित्रता जग जाहिर है। तेरे कहने से बढ़ और न कहने से घट थोड़े ही जायेगी। तू तो अपने बारे में कह कि तू कैसा है? भगवान का भक्त होकर भी इतना कम्बख्त है, भोगों में आसक्त है ये बता तो कुछ तेरा उद्धार होगा, कल्याण होगा। भगवान के चरणों में बैठकर अपने कुकृत्यों की, पापों की, आलोचना कर, जाने–अनजाने में हुए अपराधों के लिए प्रतिक्रमण कर, विकारों और कषायों पर विजय पाने के लिए श्री चरणों की शक्ति माँग। पुण्य और धर्म का अर्जन करने के लिए श्री चरणों की शक्ति

माँग, तो यह प्रार्थना होगी, आलोचना और प्रतिक्रमण होगा। अभी तो प्रार्थनाओं के नाम पर वही बरसों पुरानी, दूसरों की चुराई हुई, उधार प्रार्थनाओं को दोहराते चले जा रहे हो।''जय–जय नाथ परम गुरु होय, लड़का माँगे लड़की होय''। स्वयं के द्वारा तैयार की हुई प्रार्थना ही स्वयं के काम आती है अतः प्रार्थना के स्वरों में भगवान से निवेदन करो कि हे प्रभो! मैं अपनी निंदा, बुराई, विरोध सहन कर सकूँ इतनी शक्ति प्रदान करो संसार में रहना है तो औरों की सुनना सीख लूँ, इंसान बड़ा विचित्र है दूसरों को सुनाने को हमेशा तैयार रहता है। सुनाने में आनंद मनाता है। लेकिन सुनने में आहें भरता है, दुःखी होता है। हम कहते हैं कि जिसने सुनने की आदत डाल ली वह कभी दुःखी नहीं होता। क्योंकि संसार में सुनाने वाले की कमी नहीं है। लोग बेवजह ही सुनाने लगते हैं। इसी कारण से तो सुनाना बड़ी बात नहीं है। यदि संसार में सुख से जीना है तो कड़वाहट को पीना सीखना होगा। क्योंकि औषधि कड़वी होती है किंतु बहुत गुणकारी होती है। उसे बिना इच्छा के ही पिया जाता है।

संसार में जो भी महान् हुए हैं। वे कड़वे घूँटों को पी–पीकर ही तीर्थंकर अवतारी पुरुष हुए हैं। यदि आपको तीर्थंकर अवतारी बनना इष्ट है तो कड़वाहट पीकर जिओ। तीर्थंकर बनने के पहले शंकर बनना होगा। जिस प्रकार वैष्णव पुराण में कहा गया था कि समुद्र मंथन के समय जहर तो शंकर जी ने स्वयं पिया था और अमृत देवों को दिया था ऐसे पुरुष ही तीर्थंकर बनते हैं। आपको ज्ञात होना चाहिए जिन्होंने अमृत पिया वह तो मात्र देव रहे किंतु शंकर जी ने अमृत छोड़ जहर पिया था अतः वह महादेव कहलाए।

यदि अपने जीवन में सुख शांति और आनंद चाहते हो तो अपने दिल में थोड़ी सी जगह खाली रखना। पता नहीं कब किसके घर परिवार में, समाज में, मित्रों के बीच कोई कषाय की आग भड़क जाए और आपके

जीवन की खुशियाँ धूँ–धूँ करके जल जाएँ। क्योंकि कषाय की आग बहुत खतरनाक होती है। यह न गंगा जल से बुझती है और न ही हिमालय की बर्फ से बुझती है। यह आग न दमकलों से बुझती है और न ही अग्निशामक यंत्रों से बुझती है। कषायों की आग को बुझाने के लिए अपने दिल में क्षमा, सहनशीलता, क्षमता, सहिष्णुता और शांति के शीतल जल की आवश्यकता है। अतः जिंदगी में कुछ सहना और शांत रहना सीखिए। संसार में कहने वालों की कमी नहीं। सहने वालों की कमी है तो हम कहते हैं यदि शांति की चाह है तो आज से ही और अभी से मन में गाँठ बाँध लो, प्रतिज्ञा कर लो, सौगंध ले लो कि कोई कितना भी कहता रहे। हमको सहन करना है।

आज इंसान को इंसानियत का ज्ञान नहीं है।
आज अपनों को अपने की पहिचान नहीं है।।
खरी खोटी और व्यंग्य कसने में तो सभी माहिर हैं।
औरों के कटु शब्द सहन करना आसान नहीं है।।

पं. गोपालदास जी बरैया, मुरैना विद्यालय के प्राचार्य रहे बहुत बड़े विद्वान थे। वह जितने शांतप्रिय थे उनकी पत्नी उतनी ही क्रांतिमती थी। वह शाँत जल थे। पत्नी अग्नि थी। आये दिन उनकी पत्नी आग की भाँति भड़कती रहती थी। बादल सी गरजती थी। किंतु पंडित जी शांत भाव से सहन करते रहते थे तो घर में शांति का वातावरण रहता था। यदि पंडित जी भी इसी प्रकार भड़कते तो बहुत बड़ा दावानल बन जाता।

एक बार एक पंडित जी विधान करवाने गये और शाम को जल्दी आने के लिए बोल गये थे किंतु किसी कारणवश आने में देर हो गई। ठंड के दिन थे, पत्नी इंतजार करते परेशान हो गई। रात में पंडित जी ने द्वार पर दस्तक दी। पत्नी ने बाल्टी भर पानी साथ में लिया और चल दी द्वार

खोलने को। द्वार खोलते ही सारा पानी पंडित जी के ऊपर डाल दिया और चिल्लाकर कहा–देखो ठंड में इंतजार करने का आनंद कैसा होता है? ऐसे अवसर पर भी पंडित जी ने हँसते हुए कहा–भाग्यवान हमने तो सुना था। 'जो बादल गरजते हैं वह बरसते नहीं'। किंतु आज गरजने वाले बादल भी बरस गए। यह कहावत भी फैल गई। सुनकर पत्नी को हँसी का फब्बारा छूट गया और शर्मिंदा होकर अंदर चली गई। ऐसे महापुरुषों का नाम इतिहास के सुनहरे अक्षरों में लिखा जाता है और उनका जीवन भी शांति और आनंदमय व्यतीत होता है।

जिसने कड़वे घूँट हमेशा, स्वयं ही पिये हैं।
जीवन में अमृत निकालकर, औरों को दिये हैं।।
उन्होंने ही समझा है विशद, जीवन का राज।
जो स्वयं ही क्षमा और वात्सल्यमय, जीवन जिये हैं।।

यदि आपके जीवन में पुण्य योग से सारी सुख सुविधाएँ प्राप्त हो जावें तो भी कभी उस दशा को नहीं भूल जाना। जहाँ एक ओर संसार के लोगों को पेट भरने के लिए दानों के लाले पड़े हों और दूसरी ओर आपके यहाँ दानों के ढेर लगे हो तो अहंकार मन में आ जाता है। क्योंकि संसार की दशा बड़ी नाजुक और कमजोर होती है। पता नहीं एक ही झोंके में कब किस महान् दीवार को ढहाकर इंसान के लिए क्षण भर में दाने–दाने के लिए लाचार कर दे। आपको याद होंगे लातूर के भूकंप के दिन या गुजरात की दशा अथवा सुनामी लहरों की घटना करोड़ों में खेलने वालों को कड़ोरने वाला भी नहीं मिला। मलवे के नीचे ही उनका यह चमकता तन दफन हो गया। इसलिए कहा है–

गजल

महलों में बसने वाले, क्या तुझको ये खबर है।
दर्दे दिलों की होती, दुनियाँ में क्या बसर है।।
गम से भरा है जीवन, किल्लत है बेबसी है।
मायूस जिंदगी है चेहरे पे न हँसी है।
खुशियों की जिंदगी में आती नहीं लहर है।।दर्दे..1।।

किस्मत के मारे कोई, मोहताज हैं कफन के।
सपने संजोये बैठे, रहने को जो चमन के।।
दुर्भाग्य के नतीजे से, क्यों तू बेखबर है।।दर्दे...2।।

जीने को जिंदगी के, जो हो रहे हैं कायिल।
पाकर के जिंदगी ये, वे हो रहे हैं गाफिल।।
सौभाग्य के बदलते, सबका यही हसर है।।दर्दे...3।।

दौलत के नशे में, खूँखार हो रहे हैं।
औरों की जिंदगी में, जो शूल बो रहे हैं।।
अंजाम की तरफ यूँ, उनकी नहीं नजर है।।दर्दे....4।।

दो दिन की जिंदगी ये, हँसकर गुजारना है।
बिगड़ी विशद है जिनकी, उसको सँवारना है।।
वह भी तो आप जैसा, रखते विशद जिगर है।।दर्दे...5।।

उच्च पुरुष जो होते हैं वह हमेशा उच्चता के कार्य करते हैं और दुःखी प्राणियों के लिए शीतल बनकर के घाव पर मलहम का कार्य करते हैं कहा भी है–

उच्च गगन में मेघ सम, झर–झर बरसे नीर।
उच्च पुरुष संसार में, हरते सबकी पीर।।

ज्ञानी पुरुष संपूर्ण वैभव प्राप्त करके भी अपनी उच्चता नहीं छोड़ते। फूलों के बीच रहकर फूलते नहीं बल्कि खुशबू और मकरंद प्राणियों में बिखेरते रहते हैं। जयपुर के दीवान अमरचंद्र और भामाशाह का नाम भी

इतिहास में पढ़ा जाता है। भामाशाह ने राज्य के खातिर अपने भंडार खोल दिये थे और कहा था मेरे तन और धन का एक–एक कण देश और राज्य के खातिर लग जाये तो मैं अपने जीवन को धन्य मानूँगा और दीवान अमरचंद की दानशीलता तो जग जाहिर है। एक बार वह गरीबों में दान दे रहे थे। तभी एक विद्वान ने देखा और दोहे के रूप में कहा–

कहाँ सीखी दीवान जी, ऐसी नोनी देन।
ज्यों–ज्यों कर ऊपर करें, त्यों–त्यों नीचे नैन।।

लोग अपनी प्रशंसा सुनकर फूल जाते हैं किंतु उनकी महानता का विचार आप करें। उन्होंने उत्तर दिया था।

देनहार कोउ और है, देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मो पे करें, ता सो नीचे नैन।।

दीवान जी तो दान के पर्याय बने हुए थे। एक बार एक व्यक्ति गरीबी से परेशान होकर दीवान जी के यहाँ पर आया। उस दिन उनके घर पर विशेष रिश्तेदार संबंधियों का आगमन था। द्वार पर द्वारपाल बैठा था। गरीब ने आकर दीवान जी से मिलने हेतु निवेदन किया। तो द्वारपाल ने दो घंटे बाद आने को कहा। दो घंटे बाद पुनः पूछने पर द्वारपाल ने अवधि बढ़ा दी। बेचारा गाँव से चलकर आया था। भूखा–प्यासा इंतजार करते हुए थक गया। तब तक द्वारपाल की ड्यूटी चेंज हो गई। दूसरे द्वारपाल को देखकर अंदर जाने की अनुमति माँगी। पुनः दो घंटे बाद मिलने की अनुमति माँगी। पुनः दो घंटे बाद मिलने की बात कही तो गरीब ने कहा–आप दीवान जी से कहके आईए आपके साढू जी आये हैं। आपसे मिलना चाहते हैं। दीवान जी ने तुरंत ही अंदर आने की अनुमति दी, आ जाने दीजिए। घर में आये हुए मेहमानों के मन में जिज्ञासा थी। साढू जी आये हैं अवश्य ही हम भी उनसे मिलना चाहते हैं। किंतु गरीब व्यक्ति को देखकर सब हँसने लगे। अरे! ये दीवान जी के साढू भाई हैं। तब दीवान जी ने कहा–हाँ ये मेरे साढू भाई है। क्योंकि संपत्ति और विपत्ति दो बहिनें हैं। संपत्ति का संबंध मुझसे हुआ और विपत्ति का संबंध इस बेचारे भाई के साथ हुआ है। अब आप बताइए, हम दोनों साढू हुए कि नहीं। सभी निरूत्तर होकर शर्मिंदा हो गए। ऐसी होती है महान् लोगों की महानता कि वह एक दरिद्र को भी अपना भाई बना लेते हैं।

नारायण श्री कृष्ण को सभी जानते हैं। उनके बचपन का मित्र सुदामा अपनी गरीबी के दिनों में सहायता लेने जब कृष्ण के यहाँ गये तो सुनते हैं कि कृष्ण अपने मित्र से मिलने के लिए दौड़ पड़े और पैरों पर सिर रखकर रो पड़े। कवि ने अपनी कविता में कहा है– पानी परात को हाथ छुअत नहिं, नैनन के जल सो पग धोए।।

अर्थात् जल और थाली को तो छुआ नहीं, अपने नैनों के जल से ही चरणों का प्रक्षालन कर दिया। इस प्रकार की महानता पाने वाले लोग संसार में कम ही होते हैं और जो हैं तो अपना इतिहास रच जाते हैं। आदर्श पुरुष बन जाते हैं। आपको अपनी भावनाओं को विस्तार देने की आवश्यकता है। व्यापक चिंतन और व्यापक सोच देने की आवश्यकता है। दरियादिल बनने की आवश्कता है।

फुलवारी कोई उजाड़े, तो माली उसे बचाए।
जब माली बाग उजाड़े, उसे कौन बचाए।।
हर माली बाग लगाए, सिंचन कर उसे सजाए।
जो माली बाग उजाड़े, न माली वह कहलाए।।
फुलवारी कोई उजाड़े, तो माली उसे बचाए।
माली तो बाग सजाए, फिर शूल क्यों उसे चुभाए।
जब फूल शूल बन जाए, फिर माली क्या कर पाए।।
है फूल की चोट निराली, घायल हो उससे माली।
माली घायल हो जाए, फिर माली क्या कर पाए।।
जब फूल दूसरा आए, उस पर क्यों चोट लगाए।
फिर फूल देख मुरझाए, फिर माली क्या कर पाए।।
वह फूल देख फुलवारी, भरती कैसी किलकारी।
फुलवारी फूल उजाड़े, तब कौन आए फिर आड़े।।
कोई फूल को फूल नशाए, तो माली उसे बचाए।
माली को फूल सताए, जीना हराम कर जाए।
आकुल व्याकुल हो जाए, फिर माली क्या कर पाए।।

हास्य नाटिका- पंडित जी

पात्र– दाड़ी वाले पंडित जी	**कलुआ**
मंदिर का माली	**मुलुआ**
चौकीदार	**बलुआ**
यजमान	**अन्य महिलाएँ**
यजमान की पत्नि	**बुढ़िया**
नगरवासी	**कड़ोरीलाल**
छलिया नाई	**छलिया नाई की पत्नि**

प्रथम दृश्य

सूत्रधार– अपने गृह नगर में पंडित जी की आजीविका नहीं चली तो पंडित जी ने सोचा कोई गाँव में जाकर कुछ दक्षिणा लाना चाहिए, जिससे गृहस्थी एवं बच्चों की आजीविका अच्छी तरह से चल सके और चल देते हैं हाथ में माला लिए हुए ॐ नमः, ॐ नमः, ॐ नमः बोलते हुए पंडित जी ......नगर के मध्य पधारे। माली(व्यवस्थापक) ने पंडित जी को ठहरने की समुचित व्यवस्था की एवं भोजन हेतु श्रावक के यहाँ ले जाकर भोजन कराया। उसके बाद

पंडित जी– माली भाई नगर में कोई कथा–वाचन होना चाहिए।

माली– अवश्य पंडित जी महाराज।

पंडित जी– तो समस्त ग्राम के प्रमुख लोगों को बुलाया जाए। जिससे कथा वाचन का लाभ सभी को प्राप्त हो सके।

माली– जो आज्ञा पंडित जी।

(माली नगर के प्रमुख लोगों को सूचना देता है।)

सभी नगर प्रमुख मिलकर पंडित जी के पास उपस्थित हुए और पंडित जी को प्रणाम करते हुए बैठ गए।

नगरवासी– पंडित जी की जय–जयकार करने लगे और प्रणाम करते हुए पूछा पंडित जी आप कब पधारे और कहाँ से पधारे?

पंडित जी– आशीष देते हुए जीते रहो वत्स! हम दुनियाँ की जानी मानी गुलाबी नगरी राजस्थान की राजधानी जयपुर से आये हैं।

नगरवासी– पंडित जी कैसे पधारना हुआ?

पंडित जी– बस यूँ ही यजमानों की याद आई और चले आये।

नगरवासी– पंडित जी आप हमारे नगर में पधारे हैं। हम लोगों का बड़ा सौभाग्य जागा है, पंडित जी आपके पवित्र मुखारबिंद से कोई कथा–वाचन हो जाए तो बहुत अच्छा होगा।

पंडित जी– बहुत उत्तम, बहुत उत्तम कथा अवश्य होनी चाहिए। कथा की तैयारी की जाए।

नगरवासी– जो आज्ञा पंडित जी महाराज।

(नगरवासियों द्वारा कथा की तैयारी की गई तथा चौकीदार को नगर में मुनादी(नियोता) करने का आदेश दिया।)

चौकीदार–(पंचों के सामने) हुजूर! मेरे लिए याद फरमाया।

पंच– हाँ चौकीदार, पंडित जी महाराज का आगमन हुआ है। नगर के बीच धर्मशाला में कथा का वाचन का होगा इसकी सूचना सारे नगर में करना है। जो आज्ञा!

चौकीदार– सूचना, सूचना, सूचना अपने नगर में गुलाबी नगरी जयपुर से पंडित जी पधारे हैं। उनके द्वारा धर्मशाला में कथा–वाचन होगा। सभी नगरवासियों को सूचित किया जाता है कि कथा वाचन में आकर धर्म लाभ लें और पंडित का कल्याण करें, न न न सभी अपना कल्याण करें।

नगरवासी धर्मशाला में एकत्र होकर पंडित जी के लिए श्रीफल भेंटकर कथा वाचन के लिए चलने का आग्रह करते हैं।

नगरवासी– पंडित जी की जय हो! पंडित जी कथा–वाचन के लिए पधारिए।

चौकीदार– सावधान, कदरदान, मेहमान खड़े हो जाएंगे, पंडित जी महाराज पधार रहे हैं।

पंडित जी– सभी श्रावक–वृंद अपने स्थान पर बैठ जाएँ।

अब मंगलाचरण पढ़ते हैं। अतः सभी लोग हाथ जोड़कर बैठ जाएँ और प्रभु का स्मरण करें।

मंगलाचरण

मंगलं भगवान वीरो, मंगलम् गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्याी, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।
नमन् चरण में कर रहे, गुरुवर के कर जोड़।
कदम–कदम बढ़ता चलूँ,मोक्ष महल की ओर।।

पंडित जी– बोलिए अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी भगवान की जय, 1008 महावीर भगवान की जय, परम पूज्य आचार्य भगवन् श्री विशदसागर जी महामुनिराज की जय, समस्त मुनि संघ की जय, लक्ष्मी मैया की जय।

महावीर का यह संदेशा, सबसे बड़ा है जग में पैसा।
जिसने भी पैसे को पाया, उसके द्वारे हर कोई आया।।
लक्ष्मी मैया खुश हो जावे, उसके गुण को हर कोई गावे।
हम भी लक्ष्मी पाने आये, सब भक्तों को कथा सुनावें।।

कथा– एक व्यक्ति भीख मांग रहा था। वहाँ उसे नारद जी मिले भिखारी ने चरण स्पर्श किये और कहा मैं भीख माँगकर थक गया हूँ। कुछ कृपा करो नारद जी, नारद जी को दया आ गई उन्होंने कुबेरपति को पत्र लिख। भिखारी से कहा– जा कुबेर के पास, वह तेरा पात्र भर देगा। वह पात्र लेकर कुबेर के पास गया। नारद जी की चिट्ठी कुबेर को लेनी पड़ी। इसलिए कुबेर ने भंडारी को आदेश दिया इसके पात्र में जो चाहिए भर दिया जावे। भरते–भरते उसका खजाना खाली हो गया पर पात्र नहीं भरा। कुबेर के सेवकों ने कहा– महाराज गजब हो गया नारद जी को विनती करो। अब चिट्ठी लिखने में ध्यान रखें। कुछ भी रहने नहीं दिया। भिखारी पात्र कोई जादू की माया है। कुबेर ने आकर देखा तो सारा खजाना खाली था और पात्र नहीं भरा था। कुबेर ने जाकर नारद से कहा– आप चिट्ठी लिखने से पहले विचार तो किया करो। यह पात्र अभी तक नहीं भरा। नारद जी दंग रह गये कि यह कैसा पात्र है जो भरता ही नहीं है? वह भिखारी के पास गए और कहा–जरा पात्र बताओ इसमें क्या है? जरा उल्टा कर और भिखारी ने उल्टा किया तो वह पात्र नहीं था। मानव की खोपड़ी थी। जो पूरी नहीं भर पा रही थी, खोपड़ी भरती नहीं है सारा जगत् भर जाए पर मेरी और आपकी (मनुष्य) की खोपड़ी भरती ही नहीं है।

नगरवासी–पंडित जी की प्रशंसा कर रहे थे। धन्य हो पंडित जी धन्य हो।

आपका जीवन सार है, हम तो उधार हैं।
आपका क्या कहना, हम सबको तो यहीं रहना।
आप सुना रहे हैं, हम सुनकर उड़ा रहे हैं, न न
अचानक बुढ़िया माँ का रोना प्रारंभ हुआ।

पंडित जी– बूढ़ी माँ आप क्यों रो रहीं हो। कथा तो मार्मिक है अच्छी है ना?

बुढ़िया– हाँ, पंडित जी कथा तो नोनी/ अच्छी है।

पंडित जी– फिर रोने क्यों लगीं हो?

बुढ़िया– पंडित जी आज से छह महीने पहले।

पंडित जी–छह महीने पहले।

बुढ़िया– हाँ, पंडित जी।

पंडित जी– किंतु कथा तो आप अभी सुन रही हो।

बुढ़िया– हाँ, पंडित जी हमारे पास एक बकरा था। वह छह महीने पहले मर गया था। पंडित जी आपको देखकर उसकी याद आ गई।

पंडित जी– क्यों?

बुढ़िया– पंडित जी बकरे की दाढ़ी बिल्कुल आपके जैसी थी। सो आपको देखकर बकरे की याद आ गई और रोना आ गया। रोते हुए बुढ़िया ने कहा।

सभा में हँसी.....

दूसरा दृश्य

पंडित जी– चलकर अन्य ग्राम में प्रवेश करते हैं।

ॐ नमः, ॐ नमः, ॐ नमः, ॐ नमः
मैं तो जयपुर का हूँ वासी, मेरे पीछे फैल है काशी।
मेरे बिन यह सारी दुनियाँ, भाई रहती सदा उदासी।।
मैं हूँ पंडित जग में चोखा, मुझको कई लोगो ने रोका।
आया गाँव तुम्हारे भाई, ये है कथा का पावन मौका।
कथा हम बाचेंगे–––2

पंडित जी को देखकर नगरवासी एकत्रित हो गये।

भीलों का सरदार– अरे! पंडित बाबा कहाँ से आयो रे।

पंडित जी– कैसे बोलते है रे! अच्छे से बोल।

सरदार–अच्छो कैसो होत है।

पंडित जी– समझाते हुए, पंडित जी साहब कहाँ से पधार रहे हैं।

सरदार–पण्डत जी कहाँ से पधार रये हैं।

पंडित जी–हम राजस्थान की राजधानी जयपुर से चलकर आय हैं। भक्तों को कथा सुनाता है तुमको कथा सुनाएगा।

सरदार–हओ! पण्डित बाबा कथा कहाँ हुइये?

पंडित जी– तेरे घर आँगन में चौक बना लेना और ध्यान रखना सारे नगर के लोगों को बुला लेना। सभी कथा सुनने आयेंगे।

सरदार–हओ पण्डित बाबा।

पंडित जी– और सुन जूँ कथा के लिए यह सामग्री मंगा लेना बनिये के यहाँ से धनियाँ, मिरची, हल्दी, घी, तेल, नारियल, केसर, आरती, धागा, धोती, कुर्ता, मौजा, जूता, टोपी, चावल, लौंग, पान, सुपाडी, चूना, तंबाकू, कत्था, बण्डल, चाय, मिठाई आदि।

सरदार–पण्डत जूँ जो आदि काय तो आदो?

सुनो है आदि का है?

पंडित जी–आदि का मतलब और कुछ रह गया हो तो सोच के ले आना।

सरदार–अवै और कछू रै गओ अब तो घर और घर वाली भर रै गई और तो सब कछू हो गओ (सभा में हँसी)

भील सरदार चौकीदार को नगर में सूचना हेतु बुलाते हैं।

चौकीदार–हुजूर मोखो टेरो तो का।

सरदार–हओ कथा बाँची जाने है पण्डत बाबा जू आओ हैं सो सबखो बुलावे की कै दे।

चौकीदार–हओ हुजूर!

सरदार–पत्नी के लिए आवाज देते हुए अरे! ओ घसीटा की मताई सुन। पण्डत बाबा जू आयो है। सो आँगन में चौक पूर लइये। कथा बाँची जाने है।

पत्नि–हओ कब आओ पण्डत बाबा जू।

सरदार–आज दुपरे आओ तो कथा होने हैं।

पत्नि–ठीक है।

चौक पूरते हुए आओ तो कथा संपूर्ण तैयारियाँ हो गई।

सरदार पंचों के साथ पंडित जी को आमंत्रण के लिए पहुँच रहे हैं।

पण्ड्त बाबा जू ,पण्ड्त बाबा जू ,पण्ड्त बाबा जू कथा करबे चलो।

पंडित जी–खाली हाथ आ गये पहले नारियल तो लाते।

सरदार नारियल लाते हुए

समर्पण– अरमान सजाकर लाया हूँ, मुझको धन अर्पित कर दोगे।
इस हेतु आपको पंडित जी, नरियल ये समर्पित करता हूँ।।

सरदार–नारियल फोरने हैं।

पंडित जी–हाँ

सरदार– कहाँ पे

पंडित जी–मूढ़ पे

सरदार–कौन की मूढ़ पे

पंडित जी–अरे! पंडित जी को निमंत्रण दिया जाता है नारियल से।

सरदार–सो निमंत्रण मैं दे हूँ, कै नाऊ देहै, कै कोउ और.....।

पंडित जी–कोउ और भी दे सकत है का।

सरदार–मोय पतो नइया, को देत नाऊ देत कै ऊ की....।

पंड्ति जी–अरे! तू ही लाके दे दे और ये तो बता तेरा नाम क्या है?

सरदार– मोरो नाव कड़ोरा।

पंडित जी–अच्छा तो कड़ोरे हमारा यह बैग लेकर चलो।

कड़ोरा–हओ पण्डत बाबा जू।

चल देते हैं यजमान कड़ोरे के घर, कथा स्थल पर पहुँचकर

पंडित जी–कड़ोरे जो हम बोलेंगे वही तुम्हें बोलना है और हम जो करें सो करना है।

सरदार–हओ पण्डत बाबा जू।

पंडित जी–यजमान (कड़ोरे) चौक में बैठो।

यजमान–चौक पे बैठो।

पंडित जी–तुमको बैठना है।

यजमान–तुमको बैठना है।

पंडित जी–मूर्ख है क्या?

यजमान–मूर्ख है क्या?

पंडित जी–चुप रहो।

यजमान–चुप रहो।

पंडित जी–एक घूंसा मारेंगे।

यजमान–एक घूंसा मारेंगे।

पंडित जी–कंधे पकड़कर/बैठ जा नीचे।

यजमान–कंधे पकड़कर/बैठ जा नीचे।

पंडित जी–यजमान को नीचे गिराते हुए/मूर्ख बैठ जा नीचे।

यजमान–पंडित जी को नीचे गिराते हुए/मूर्ख बैठ जा नीचे।

और पंडित जी तथा यजमान एक दूसरे से लिपटे हुए एक दिशा से दूसरी दिशा तक लुढ़कते जाते हैं। सभी दर्शक तालियाँ बजाकर हँस रहे हैं। धन्य हो! पण्डत जी आज तक न तो कभी कथा सुनी है और न देखी है। तभी यजमान की पत्नि का रुदन देखकर लोग पूँछते हैं। अरे! इतनी खुशी के मौके पार आप रो रही हो क्या बात है? यह खुश होने और हँसने का अवसर है। सभा में तालियाँ

कड़ोरे की पत्नि–मोय का पता हतो कि इतनी बड़ी कथा हाने है। मैं पूरे आंगन में चौक बना लेती हमें तो दुःख होर ओ है कि बिना चौक में भी कथा हो रओ है।

तीसरा दृश्य

सूत्रहार–पंडित जी घूमते-घूमते गंगा यात्रा पर जल देते हैं। जो दक्षिणा प्राप्त हुई थी। सुरक्षा हेतु सिर पर बँधे हुए साफा में बाँध रखी थी। आगे जाकर एक स्थान पर बैठकर दक्षिणा से प्राप्त द्रव्य/रुपया गिन रहे थे। तभी एक नाई वहाँ से निकला उसने रुपया गिनकर सिर पर बाँधते हुए देख लिया तो उसने चाल चल दी और घर पहुँचने पर नाई ने अपनी पत्नी को समझा दिया। मैं पंडित जी को भोजन के लिए आमंत्रण करके आता हूँ और दक्षिणा हेतु एक रुपया माँगूगा तो तुम रोते चिल्लाते हुए कहना चोरी हो गई और नाई चल देता है पंडित जी के पास।

नाई–पंडित जी महाराज पाय लागी।

पंडित जी–खुश रहो वत्स! 'दूधो नहाओ पूतो फलो' भक्त का नाम क्या है?

नाई–आपकी कृपा से दिया हुआ 'छलिया'।

पंडित जी–बड़ा प्यारा नाम है, कैसे आना हुआ?

छलिया–आज विवाह की साल गिरह पर दान की भावना हुई। आपके जैसे महान् पंडित जी के दर्शन लाभ हुआ तो आपके लिए भोजन के लिए आमंत्रण देने आया हूँ प्रभू!

पंडित जी–अच्छा–अच्छा बहुत अच्छा। लेकिन ध्यान रखना दक्षिणा में एक रुपया अवश्य देना होता है।

छलिया–अरे! पंडित जी महाराज सब आपका ही तो है। आपको ही देना है मेरा क्या?

पंडित जी–अच्छा ठीक है भोजन की तैयारी करना हम दस बजे भोजन करने आयेंगे।

छलिया–हुजूर पंडित जी! सेवा का लाभ मिले कुछ देर पहले पधारें तो ठीक होगा।

पंडित जी–अच्छा तो चलते।

छलिया–पंडित जी का बैग हाथ में लेते हुए साथ चल देता है। घर की ओर द्वार पर आवाज देते हुए अरे! रामू की माँ सौभाग्य जगे हैं, पंडित जी महाराज पधारे हैं। खोलो ना फाटक, फाटक खुलते ही–

छलिया की पत्नी–प्रणाम पंडित जी महाराज।

पंडित जी–जुग–जुग जीओ मेरे भक्तों।

छलिया की पत्नी–धन्य हुए भाग्य हमारे, बाबा जी आये मेरे द्वारे। संत है बड़े महान्, करते हैं जग का कल्याण

जय हो बाबा की–3

पंडित जी–खुश होकर आसन ग्रहण करते हुए।

छलिया–प्रणाम करके पैर दबाना प्रारंभ करता है। थोड़ी देर बाद पंडित जी मैं अभी आया भोजन की तैयारी चल रही है।

पंडित जी– आराम करने लगे।

नाई/पत्नी –आवाज देते हुए। अरे! ओ रामू के बापू भोजन तैयार हो गया है।

छलिया–पंडित जी से निवेदन करते हुए पंडित जी भोजन के लिए पधारें।

पंडित जी–अच्छा चलते हैं पैर धोकर भोजन के लिए बैठ गये। भोजन करते हुए प्रशंसा कर रहे। वाह! यजमान क्या भोजन तैयार किया आनंद आ गया।

छलिया–आपका ही तो आशीष है।

पंडित जी–भोजन के पश्चात् बैठकर यजमान अब बस जाने का है दक्षिणा करो।

छलिया–अरे! रामू की माँ! देख संदूक में तीस रुपये रखे हैं जरा एक रुपया तो ला पंडित जी महाराज को दक्षिणा देने को।

नाई पत्नी–अभी लाई। वापिस आकर रोते चिल्लाते हुए अरे! भगवान हम तो लुट गये। इसमें तो एक फूटी कोड़ी भी नहीं रही। कौन आके मेरे घर की कुड़की करके ले गयो है। हे भगवान!

छलिया–नहीं ऐसा नहीं हो सकता वहीं देख कहीं रखें होंगे।

नाई पत्नी–अरे! रामू के बापू तुम खुद देख लो। हम तो लुट गये पता नहीं कौन बैरी आके हमारी सारी दौलत लेके चलो गयो। हे दइया!

आस पड़ौस के लोगों का एकत्र होना सभी पूँछ रहे हैं क्या हो गया भाई/

छलिया–पता नहीं संदूक में तीस रुपया जोड़ के रखा था कौन ले गया?

मुलुआ–अरे! जाके थाने में रिपोर्ट लिखाओ।

कलुआ–कब चले गये रुपैया।

छलिया–कल तो रामू की माँ रख के आई थी।

बलुआ–तो कल से कौन–कौन घर में आया है?

छलिया–स्मरण/करते हुए कल तो कोई नहीं आया मात्र आज पंडित जी साहब आये हैं। सो तो पंडित जी के बारे में कुछ सोचा नहीं जायेगा।

लोग आपस में बात करते हैं, जब कोई आया नहीं तो कहाँ जायेंगे, रुपया उड़ थोड़े ही जायेंगे/

कलुआ–भाई पंडित जी से पूँछ लो।

छलिया–राम! राम! पंडित जी थोड़ी यह काम कर सकते हैं।

कुछ महिलाएँ आपस में बात कर रहीं आज के जमाने में थोड़े ही कुछ भरोसा है। कौन है दूध का धुला फिर देखने में हर्ज ही क्या है? देख तो लिया जाए पंडित जी को उसमें हर्ज ही क्या है?

छलिया–पंडित जी आप तो महान् हैं, क्षमावान हैं, धैर्यवान हैं, गुणवान हैं, विद्वान हैं, सब लोग बातें कर रहे हैं। उनके मन का भ्रम मिट जावे आप अपनो बैग दिखा दो। लोग बैग की सामग्री निकालते हुए। नाई ये! बैग में तो कुछ भी नहीं है। राम! राम!

महिलाएँ–अरे! कमीज बनियान में भी तो कुछ है नइया माय वोई दिखा दो जेब में भी कुछ नहीं पाया। मूढ पकड़ते हुए छलिया अब तो परमात्मा ही जाने क्या होगा? पंडित जी क्षमा करना आपकी पगड़ी और देखना चाहते हैं।

पंडित जी–चुपचाप आँख बंद किये बैठे हैं। हृदय की धड़कन तेज हो रही सैकड़ों लोगों में पंडित जी की सुनने वाला भी कौन हैं?

छलिया–पंडित जी के सिर का साफा उतारता है तो खन्न से रुपयों की थैली नीचे गिर गई।

लोग अनेक प्रकार से बातें करने लगे। भाया काय का जमाना आ गयो रे!। सभी भिन्न–भिन्न प्रकार की बातें करते हुए जाने लगे।

छलिया ने थैली पत्नी को पकड़ाते हुए एक रुपया निकालकर पंडित जी को दिया और प्रणाम करके पूँछा–पंडित जी दुबारा कब पधारोगे?

पंडित जी–निराश होकर जब तीस रुपया फिर से एकत्र कर लेंगे तब फिर आयेंगे।

जयपुर पहुँचकर/पंडित जी– की पत्नि सभी पड़ौसियों को पंडित जी के आने की सूचना देती है। इस भावना से प्रसन्न रहती है कि पंडित जी बहुत पैसा कमाकर लाय रहे होंगे। यह सोचकर पंडित जी के स्वागत में छपन्न भोग तैयार करती है और पंडित जी के आगमन की राह देखती द्वार पर खड़ी हो जाती है।

पंडित जी– पंडित जी गृह नगर पहुँच जाते हैं।

ग्रामीण–जय राम, पंडित जी।

पत्नि–पुष्पहार से स्वागत करती हुई।

बहारों फूल बरसाओं, मेरा महबूब आया है।

मेरा महबूब आया है, नोट थैली भर लाया है।

पंडित जी घर पहुँचकर अपना सारा हाल बताते हैं।

धिक्कार हो छलबाज नीति संत विद्वानों को भी नहीं बक्सते हैं

उन्हें भी चूना लगा देते हैं और बदनाम कर देते हैं। शायद यह पंचम काल की ही करामात है। जिसमें इंसानियत का घात है।

हर बात को शब्दों में कहना आसान नहीं।
शब्द तो शब्द कोई अपना मेहमान नहीं।।
हमारी चाहत रहती है सोते जागते।
आप सदा खुश रहो और कोई अरमान नहीं।।

एक बार गुरुजी ने छात्रों से पूछा–

गुरुजी–बताओ कौआ कैसा होता?

छात्र–कौआ काला होता।

गुरुजी–हाथी कैसा होता?

छात्र–जिसकी बड़ी सूड़ होती।

गुरुजी–मोहित गधा कैसा होता? मोहित सिर नीचे करके चुपचाप...।

गुरुजी–मोहित मेरी और देखो और बताओ गधा कैसा होता ?

मोहित–गुरुजी गधा आपके जैसा होता....हँसी

******

डॉक्टर साहब

पात्र–मोतीराम (रेल कर्मचारी), उसकी पत्नि
डॉक्टर साहब, करीम पेशेंट का पुत्र
भोला, भोला की पत्नि, ग्राम वासी

प्रथम दृश्य

मोतीराम रेल कर्मचारी रिटायर होने के बाद खाली पड़ा रहता। उसकी पत्नि कहती कुछ करो पेंशन से घर कैसे चले?किंतु वह परेशान था क्या करे कुछ समझ नहीं आ रहा। खेती करने में परिश्रम करना पड़ता जो उसके वश की बात नहीं। दुकान के लिए पूँजी चाहिए। वह भी नहीं, परेशान बेचारा चिंतित रहता और पत्नी सुबह–शाम ताने देती। एक दिन उसे बुखार आया तो वह डॉक्टर के पास चैक कराने के लिए चल देता है।

जैन अस्पताल

रेल कर्मचारी–डॉ.साहब बुखार आ रहा है बहुत हाथ–पैर दर्द करते हैं और सिर जल रहा है कुछ दवाईयाँ तो दे दीजिए।

डॉक्टर–हाथ की नाड़ी देखते हुए सिर में भी दर्द है क्या?

कर्मचारी–हाँ, डॉक्टर साहब सिर दर्द भी करता है।

डॉक्टर साहब–ठीक है, बैठो कुर्सी पर और इंजेक्शन भरकर हाथ में लगाते हैं तथा चार पुड़ियाँ देते हैं। इन्हें सुबह शाम खाना है ठीक हो जाओगे। पचास रुपया जमा करो।

कर्मचारी–भौचक्का रह गया। पचास रुपया कुछ भी तो नहीं किया है। सोचता हुआ....

डॉक्टर साहब–पचास रुपया जमा करो जल्दी, हमको और भी पेशेंट देखना है।

कर्मचारी–पचास रुपया देते हुए चल दिया।

घर पहुँचकर सोचते हुए कुछ भी किया नहीं और पचास रुपये ले लिये यह काम अच्छा है कल से मैं भी डॉक्टर बनूँगा। घर पहुँचकर एक बोर्ड बनवाकर तैयार किया।

डॉ. मोतीराम अस्पताल

विशेषता–हमारे यहाँ मरीज को ऐसी दवा दी जाती है कि हमेशा के लिए ठीक हो जाता है। उसे फिर कभी डॉक्टर के पास जाना नहीं पड़ता। डॉ. साहब/मोतीराम एक कुर्सी डालकर कुछ पुराने इंजेक्शन और दवाईयाँ रखकर बैठ गये।

करीम–डॉ.साव मेरे बेटे को बुखार चड़ो है।

डॉक्टर–क्या उदार? हम उदार का काम नहीं करते।

करीम–नहीं, बुखार चड़ो शरीर तप रओ है।

डॉक्टर–पहले पच्चीस रुपये फीस जमा कराओ

करीम–पहले दवाई तो करो बाद में पैसे देंगे।

डॉक्टर– नहीं पहले फीस जमा करनी पड़ती है।

करीम–फीस के रुपये जमा करात है।

डॉक्टर–इंजेक्शन में पानी भरकर इतनी जोर से लगाते हैं कि इंजेक्शन आर–पार निकल जाता है और जोर से दबाते हैं तो पानी का फब्बारा छूट जाता है।

करीम–अरे! यह क्या हो रहा है?

डॉक्टर–अरे! देखा सारा बुखार भागता नजर आ रहा और कुछ गोलियाँ देते हुए इन्हें लेना है। और सुनो ये दवाई इसे पानी में हिलाकर पीना है।

करीम–हओ डॉक्टर साब करीम ने घर जाकर अपनी माँ को पानी की होज में बिठा दिया और लगा हिलाने के लिए पता चला कुछ देर में माँ बेहोश हो गई।!

(कुछ दिन बाद करीम को दस्त लग रहे थे वह पहुँचे । डॉक्टर के पास)

करीम–डॉक्टर साहब, डॉक्टर साहब

डॉंक्टर–क्या है?

करीम–डॉक्टर साहब कल से बहुत दस्त लग रहे हैं रुक नहीं रहे हैं।

डॉंक्टर–(कुछ सोचते हुए) अच्छा तो ठीक है। तुम जाओ एक मीटर का लाल कपड़ा, एक मीटर लकड़ी तथा रस्सी लेकर आओ।

करीम–सेठ के यहाँ जाकर सेठ जी आधा मीटर लाल कपड़ा, एक मीटर लकड़ी, दो मीटर रस्सी दे दो।

सेठ–कपड़ा तो ले जाओ किंतु लकड़ी रस्सी नहीं मिलेगी। करीम–नहीं सेठ हम तो तीनों लेंगे।

सेठ कहीं से लकड़ी रस्सी लेकर देते हैं। डॉक्टर के पास पहुँचकर।

करीम–डॉक्टर साहब यह लो कपड़ा, लकड़ी और रस्सी।

डॉंक्टर–लकड़ी में रस्सी से कपड़े को बाँधकर लगा दिया और झंडी की तरह दिखाते हुए पूँछा–क्यों दस्त रुके कि नहीं?

करीम–अभी नहीं रुके।

डॉंक्टर–मेरे झंडी हिलाने पर इतनी बड़ी **ट्रेन** रुक जाती है तो तेरे दस्त क्यों नहीं रुक रहे? ऐसा कैसे हो सकता है? अवश्य ही रुक जाएँगे। (सभा में हँसी)

दूसरा दृश्य

सूत्राधार–एक अनपढ़ ग्रामीण था जो छोटे से ग्राम में रहता था। वह अचानक ही बीमार पड़ गया। घरेलू उपचार से ठीक नहीं हुआ तो उसने सोचा कहीं बाहर जाकर अच्छे डॉक्टरों को दिखाना चाहिए। वह मुंबई जाने को तैयार हुआ। मित्रों ने कहा–भाई भोला मुंबई का मामला है, वहाँ सम्हलकर रहना और हाँ डॉक्टर से सारी बात विस्तारपूर्वक समझ लेना परहेज इत्यादि के बारे में बारीकी से समझ लेना, बाद में कोई परेशानी न हो।

भोला ने कहा–ठीक है आप लोगों की बात का विशेष ध्यान रखूँगा और भोला मुंबई के लिए रवाना हुआ।

मुंबई में भोला ख्याति प्राप्त डॉक्टर जैन से मिला। डॉक्टर ने हालचाल पूछा, जाँच पड़ताल की, नाड़ी–परीक्षण कर ऐक्सरा किया और दवा दी तथा कहा–ये चार गोलियाँ हैं, सोने से पहले ले लेना। ध्यान रखना खटाई का त्याग करना होगा।

भोला–हुजूर! चारों गोलियाँ एक साथ खानी हैं या एक–एक करके खानी है कृपा कर स्पष्ट बता दीजिए।

डॉँक्टर ने कहा–कैसे भी खाओ, फर्क नहीं पड़ता।

भोला ने पूँछा–सर गोलियाँ दूध के साथ खानी हैं या फिर पानी के साथ या चासनी के साथ।

डॉँक्टर ने कहा–दूध के साथ ले सकते हैं।

भोला ने अगला प्रश्न पूछा–साब! दूध ठंडा होना चाहिए या गर्म किया हुआ होना चाहिए?

डॉँक्टर ने अनमने मन से कहा–न एकदम ठंडा होना, न गरम बल्कि कुनकुना होना चाहिए।

भोला ने पुनः पूँछा–साब दूध कम गरम किया हुआ होना चाहिए या उबला हुआ?

डॉँक्टर ने कहा–उबालकर ठंडा हुआ श्रेष्ठ होता है।

भोला ने बगैर किसी विलंब के प्रश्न माला आगे बढ़ाई और पूॅछा–हुजूर,एक बात और बता दें कि दूध भैंस का होना चाहिए या गाय का? पौष्टिक दूध कौन सा रहेगा?

डॉक्टर ने झुझलाते हुए कहा–अरे! भाई जो मिल जाए वही अच्छा होगा, वही पौष्टिक होगा।

भोला ने कहा–नहीं हुजूर दरअसल मैं सारी बात विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहता हूँ ताकि बाद में कोई गड़बड़ी न हो। आप मेहरबानी करके बता दें कि पौष्टिक कौन सा रहेगा?

डॉक्टर ने कहा–ठीक है, गाय का दूध ठीक रहेगा, क्योंकि वह सुपाच्य और हल्का होता है।

पुनः भोला ने कहा–हुजूर काली गाय का ठीक रहेगा या सफेद गाय का।

डॉक्टर ने कहा–कोई भी हो जो तुम्हारे घर हो।

भोला ने लगे हाथ एक और प्रश्न पूछ लिया।

भोला बोला–हुजूर! दूध गिलास में लेकर पीना है या कटोरे में डालकर पिया जाए।

डॉक्टर ने गुस्से में कहा–मूर्ख! अब यह भी बताना पड़ेगा। बकवास मत करो, जरा–जरा सी बात पूँछना पागलपन है।

भोला ने हाथ जोड़कर कहा–हुजूर! गुस्सा मत होइए। मैं ठहरा गाँव का गँवार। दरअसल मैं सारी बात विस्तारपर्वक समझ लेना चाहता हूँ ताकि बाद में कोई गड़बड़ी न हो। आप स्पष्ट करें कि दूध गिलास से पीना है या कटोरे से।

डॉक्टर ने चिल्लाकर कहा–न गिलास से पीना है न कटोरे से बल्कि बाल्टी से पीना है समझ में आया। हँसी/

भोला ने कहा–बिल्कुल समझ गया हुजूर। बाल्टी जिसमें भैंस पानी पीती है पर हुजूर ने बाल्टी की बात कही तो एक प्रश्न और उठ खड़ा हो गया।

डॉक्टर ने माथा ठोका और कहा–अब कौन सा प्रश्न खड़ा हो गया तेरी खोपड़ी में शीघ्र बता?

भोला बोला–डॉक्टर साब! मेरी भैंस तो बाल्टी भर पानी पीती है ,क्या मुझे भी बाल्टी भर दूध पीना है? हँसी/

डॉक्टर जोर से हँसा और कहा–मूर्ख बे–मौत मर जायेगा, पी मत लेना।

भोला ने कहा–हुजूर! इसलिए तो मैं सारी बात विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहता हूँ ताकि बाद में...। डॉक्टर साब! आप वाकई में दयालु हैं, रहम दिल हैं, कृपावत् हैं। एक बात और बतायें दूध खड़े होकर पीना है या बैठकर?

डॉक्टर का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया, वह आग बबूला हो गया। उसके मन में आया कि इसका हाथ पकड़कर, धक्का मारकर क्लीनिक से बाहर निकाल दूँ। लेकिन तभी अपने को संतुलित करके बोला–देखो भाई! फालतू प्रश्न मत पूँछो। मुझे और भी मरीज देखने हैं, अतः तुम जाओ, कल पुनः मिलना।

भोला ने कहा–ठीक है हुजूर, एक सवाल का जबाव और दे दें फिर चला जाऊँगा।

डॉक्टर साहब–ने चले जाने की बात सुनकर राहत की साँस ली और कहा–पूँछो क्या बात है?

भोला ने कहा–हुजूर! कैसे पूँछू? पूँछते हुए शर्म आती है।

डॉक्टर ने कहा– शर्म, कैसी शर्म? प्रश्न पूँछने में भी शर्म आती है। ऐसी कौन सी बात है जिसे पूँछने में शर्म आती है।

डॉक्टर को भी कुछ जिज्ञासा हुई कि आखिर प्रश्न क्या है जिसे पूँछने में शर्म......।

भोला ने कहा– हुजूर! दूध अपने हाथ से पिऊँ या मेरी पत्नी अपने हाथों से दूध पिलाये।

यदि पत्नी अपने हाथों से पिलाये तो कोई हर्ज नहीं?

डॉक्टर के चेहरे पर कुछ हास्य उभरा तुरंत हँसी को दबाकर क्रोध में **बोला**–कोई हर्ज नहीं और हाँ, अब बहुत हो गई।

लाओ मेरी फीस के बीस रुपये और यहाँ से जल्दी फूट लो। अब पल भर भी रुकना तुम्हारे लिए खतरे से खाली नहीं। निकालो फीस के बीस रुपए और जाओ यहाँ से।

भोला ने कहा–हुजूर! रुपया बंधे दूँ या फुटकर दूँ?

डॉक्टर ने अपना सिर पकड़कर दीवार से दे मारा। फिर डंडा उठाकर भोला की तरफ लपका। डॉक्टर चिल्लाया, भागता है या नहीं? कम्बख्त सुबह से सताने आ गया, जान खाने आ गया।अब जल्दी से भाग जा वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। डॉक्टर ने भोला

का हाथ पकड़ा और धक्का मारकर क्लीनिक से बाहर करने लगा तभी–

भोला ने कहा–हुजूर! आपकी फीस?

डॉक्टर ने कहा–रहने दो, कोई जरूरत नहीं फीस–बीस की। उल्टे मुझसे बीस रुपये पकड़ो और मेरा पिंड छोड़ो। डॉक्टर ने दस–दस के दो नोट पकड़ा दिये।

भोला ने दोनों नोट लिए और क्लीनिक से बाहर हो गया।

इधर डॉक्टर ने अपना पसीना पोंछा, सिर दर्द की दो गोलियाँ खाई और मन ही मन सोचा झंझट मिटी, बला टली लेकिन दो मिनिट ही हुए होंगे कि भोला फिर लौट आया और डॉक्टर से बोला–हुजूर! गुस्सा मत होना। मैं ठहरा गाँव का अनपढ़, निरक्षर, गँवार दरअसल मैं सारी बात विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहता हूँ ताकि बाद में.......। अतः एक बात और बता दीजिए बड़ी कृपा होगी आपकी। सिर्फ इतना बता दें कि कौन सा नोट रिक्शे वाले को देना है और कौन से नोट की दवा लेनी है? डॉक्टर ने नौकर से फाटक बंद करने को कहा फिर चैन की साँस ली। भोला गाते हुए बढ़ चला।

हम तो चले निज देश, गाँव को जाने वाले हैं।

डॉक्टर का आदेश, गोलियाँ खाने वाले हैं।

इसके बाद क्या हुआ नहीं पता। वह कहाँ गया उसने क्या किया परमात्मा जाने?

बच्चे की जिद

पात्र– दुबला सेठ, मोटी सेठानी

बच्चा, अन्य बच्चे

गधे पर बच्चा ले जाने वाला गधेरा

प्रथम दृश्य

दुकान पर बैठे हुए सेठजी ग्राहकों को सामान बेच रहे हैं तभी पीठ पर एक बस्ता टाँगे उनका बेटा आया।

पप्पू–पिता जी आज परीक्षा है मैं पेपर देने जा रहा हूँ, रुपया दीजिए।

सेठ जी–नहीं बेटे, रुपया नहीं टॉफी ले जाओ।

पप्पू–नहीं पापा, रुपया चाहिए और टॉफी भी चाहिए।

सेठ जी–टॉफी देते हुए/ जाओ यहाँ से।

पप्पू–नहीं रुपया चाहिए नहीं तो हम पेपर देने नहीं जाएंगे।

सेठ जी–मजबूर होते हुए/ ले रुपया ले जा, जल्दी पेपर देने जा।

कुछ दिनों बाद रिजल्ट आया सभी बच्चे परीक्षा फल लेने जाते हैं साथ ही पप्पू भी जाता है और हँसते–खेलते घर आता है।

सेठ जी–बेटा पप्पू तेरा रिजल्ट आया कि नहीं।

पप्पू–हाँ पापा आ गया।

सेठ जी–तू पास हो गया कि नहीं।

पप्पू–हाँ पास हो गया।

सेठ जी–कितने नंबर आये।

पप्पू–300 में से 300 ।

सेठ जी–वाह! बेटा वाह! हमें गर्व है अपने बेटे पर, लेकिन बेटा हमने तो कभी नहीं सुना है कि 300 में से 300 अंक किसी को मिलते हैं तुझे कैसे मिल गये?

पप्पू–पापा सीधी सी बात है पहला पेपर हिंदी का था उसमें 3, दूसरा गणित का पेपर था उसमें 0, तीसरा भूगोल+विज्ञान का पेपर था उसमें 0 मिला। तो 300 में से 300 हुए कि नहीं। ही–ही–ही–ही हँसते हुए।

सेठ जी–माथा पीटते हुए अबे नालायक! ऐसे 300 में 300 अंक आये तो फेल हो गया है और तू है कि नालायक पास भी नहीं हुआ। शर्म नहीं आती ऊपर से हँसता है, हट जा मेरे सामने से!

पप्पू–पुनः हँसते हुए अगली साल हो जाएंगे।

सेठ जी–खीजते हुए चुप रह नालायक कहीं का। अगली साल की बात करता फिर अगली साल की बात करेगा। अरे! देख जवाहरलाल नेहरू हमारे बराबर थे तो देश के प्रधानमंत्री थे। और तुम उनके चपरासी भी नहीं बन सके। हंसी

दूसरा दृश्य

सुबह का वक्त सेठजी द्वार पर बैठकर अखबार पढ़ रहे थे। पास ही 4 वर्ष का बेटा पप्पू भी खिलौने से खेल रहा था। उसी समय गधे वाला अपने बच्चे को गधे पर बिठाए जंगल को निकला। पप्पू ने बच्चे को गधे पर बैठे देखा तो कहा–पापा यह क्या है?

सेठ जी–गधा है।

पप्पू–उस पर कौन बैठा है?

सेठ जी–बच्चा बैठा है।

पप्पू–हम भी गधे पर बैठेंगे।

सेठ जी–नहीं गधे पर नहीं बैठते।

पप्पू–रोते हुए/ नहीं हम तो बैठेंगे और रोते–रोते सो जाता है।
सोते–सोते रात्रि में उठकर पुनः रोने लगता है। तभी सेठानी जी सेठजी से उठकर पूँछती है।

सेठानी–पप्पू क्यों रो रहा है?

सेठ जी–गधे पर बैठने की जिद कर रहा है।

सेठानी–तो बन जाईये न थोड़ी देर के लिए गधा।

सेठ जी–चुप रह जाते पप्पू फिर रोता है।

सेठानी–उठकर चिल्लाते हुए क्या बात बन क्यों नहीं जाते गधा?

पप्पू–पुनः रोते हुँ,हुँ गधे पर बैठना है।

सेठानी–सेठ से कहती है बन जाइये ना थोड़ी देर को बच्चा जिद करता है तो मजबूर होकर सेठ जी गधा बन जाते हैं।

पप्पू गधा बने सेठजी की पीठ पर बैठकर हँसने लगा एक मिनिट बाद पुनः रोना प्रारंभ कर दिया। मम्मी हुँ, हुँ, हुँ.....

सेठानी–अब क्या बात है?

पप्पू–मम्मी, तुम भी बैठो न गधे पर, अच्छा लग रहा है।

सेठानी–नहीं, हम नहीं बैठते। पापा को भारी लगेगा।

पप्पू– हुँ, हुँ नहीं बैठो मम्मी बैठो न।

पप्पू–जिद करने लगा पप्पू की जिद पूरी करने को मम्मी को भी बैठना पड़ा।

सेठानी–चुप हो जाओ, हम भी बैठते हैं और इस तरह सेठानी भी गधे पर बैठती है। सेठ जी से पूँछती है–

तुम नन्हें हम भारी हैं,

सजन कछु दुख तो नहीं रओ है।

सेठ जी–चढ़ी रहो चढ़ी रहो, बड़ो नोनो लग रओ है।

फूल से हल्को वजन, तुम्हारो बड़ो नोनो लग रओ है।।

विशद वाणी

वह घर घर नहीं जो जलने लग जाए।
उस सूर्य से क्या लाभ जो ढलने लग जाए।।
रंग बदलने में तो गिरगिट माहिर होता है।
वह इंसान क्या जो रंग बदलने लग जाए।।
दीप का प्रकाश अंधकार का नाश करता है।
सरल शुद्ध हृदय में धर्म अपना वास करता है।।
जहाँ पर इंसान और देवों की पहुँच नहीं हैं।
वहाँ पर सम्यक् ज्ञान अपना प्रकाश करता है।।

सेठ जी–चढ़ी रहो चढ़ी रहो, बड़ो नोनो लग रओ है।
फूल से हल्को वजन, तुम्हारो बड़ो नोनो लग रओ है।।

* * * * * * *

वह घर घर नहीं जो जलने लग जाए।
उस सूर्य से क्या लाभ जो ढलने लग जाए।।
रंग बदलने में तो गिरगिट माहिर होता है।
वह इंसान क्या जो रंग बदलने लग जाए।।

* * * * * * *

पंच पाप त्याग नाटक

पात्र– अध्यापक,छात्र–रामू, मुनिराज, श्रावक

प्रथम दृश्य

ग्राम के वातावरण में, विद्यालय में अनेकों छात्र का पढ़ना

पास ही ग्रामोद्यान में मुनिराज का आगमन सुनकर नगरवासी दर्शनार्थ पहुँचते हैं–सभी मुनिराज से कुछ न कुछ नियम लेते हैं।

स्कूल से निकलकर रामू दृश्य देखकर वहाँ जाकर बैठ जाता है और वहाँ लोगों से पूछा ये कौन हैं?

लोग–बेटा! ये मुनिराज हैं, गुरुजी हैं।

रामू–ये ऐसे क्यों हैं?

लोग–इनने सब कुछ त्याग दिया है।

रामू–क्यों त्याग किया है?

लोग–ये भगवान बनना चाहते हैं।

रामू–आप लोग क्या कर रहे हैं?

लोग–हम अपने कल्याण के लिए नियम ले रहे हैं।

रामू–मैं ब्राह्मण का पुत्र हूँ तो मैं भी नियम ले सकता?

लोग–हाँ अवश्य नियम ले सकते हैं।

रामू–गुरु जी से क्या कहना चाहिए?

लोग–गुरु जी को नमोस्तु बोलते हैं।

रामू–गुरु जी नमोस्तु,नमोस्तु,नमोस्तु।

गुरुजी– वत्स तुम्हारा कल्याण हो।

रामू–मैं भी कोई नियम लेना चाहता हूँ मुझे भी........

गुरु जी– क्या नियम लेना चाहते हो।

रामू–मैं तो कुछ भी नहीं चाहता हूँ।

गुरुजी–ठीक है तो तुम हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह पाँच पाप का नियम ले लो ।

रामू–ठीक है गुरुजी नमोस्तु–3

गुरुजी–रामू नियम का पूरा पालन करना यदि न कर सको तो हमारा नियम हमको वापस दे जाना यों ही नहीं छोड़ना।

रामू–जी गुरुजी, हम ध्यान रखेंगे कहकर अपने घर की ओर प्रयाण कर गया।

घर पहुँचकर माँ पिता से खुश होकर बोला पिताजी उद्यान में मुनिराज आए हैं सभी उनसे नियम ले रहे थे तो मैंने भी पंच पाप न करने का नियम लिया है।

पिताजी– नहीं रामू ये नियम नहीं चलेगा तू मुनिराज से यह नियम क्यों लाया?

रामू– डरते हुए रुआँसे होकर पिताजी गुरुजी कह रहे थे यदि नियम न पाल सको तो यूँ ही नहीं छोड़ना हमारे पास हमारा नियम वापस करके जाना।

ठीक है चलो सारे नियम वापस करके आओ तब चल देते हैं उद्यान की ओर।

रास्ते में डकैत के हाथ में हथकडी पैरों में बेड़ियाँ डली थी, चल नहीं पा रहा था। पाँच बंदूकधारी सिपाही साथ चल रहे थे उसे देखकर रामू ने पूछा इसको क्यों बंदी बना रखा है। तब लोगों ने कहा–इसने हिंसा की है अतः इसको फाँसी पर चढ़ाया जाना है।

रामू– हिंसा करने पर बंदी बनाया जाता और फाँसी होती है तो मैंने हिंसा न करने का नियम लिया है इसमें क्या परेशानी?

पिताजी– ठीक है हिंसा न करने का नियम रख ले शेष वापस कर दें।

रामू– ठीक है और आगे बढ़ने पर देखा एक व्यक्ति को पीट रहे थे और राजा ने उसकी जीभ काटने का आदेश दे रखा है।

रामू–यह क्या हो रहा है?

लोग–इसने झूठ बोलकर लोगों को ठगा है तो जीभ काटी जा रही है।

रामू– झूठ बोलने पर जीभ काटी जाती है तो मैंने यही नियम लिया इसमें क्या दोष?

पिता–ठीक है यह भी नियम रख लो बाकी वापिस कर दो।

रामू– ठीक है आगे बढ़ने पर देखा एक व्यक्ति को लोग बाँधकर पीट रहे थे और नारा लगा रहे थे चोरी करना पाप है पुलिस हमारी बाप है बच्चे ने पूछा यह क्यों कर रहे हैं?

लोग–इसने चोरी की है इसलिए लोग पीट रहे हैं , पुलिस पीट रही है।

रामू–अरे! मैंने यही तो नियम लिया है कि चोरी नहीं करूंगा इसमें क्या परेशानी है?

पिता जी–ठीक है यह भी नियम करले शेष तो छोड़ दे। आगे बढ़ने पर देखा एक स्थान पर लोग एक व्यक्ति को त्रास दे रहे,पीट रहे थे उसे देखकर रामू ने पूछा ये क्या कर रहे हैं?

लोग–इस व्यक्ति ने दुराचार किया है इसलिए सजा दी जा रही है, परस्त्री से संबंध बनाए हैं।

रामू–अरे! मैंने तो यही नियम लिया है।

पिताजी–ठीक है यह भी रख ले शेष तो वापिस कर आ।

रामू–ठीक है आगे बढ़ने पर देखा एक स्थान पर छापामार छापामारी कर रहे थे यह दृश्य देखकर पूछा ये क्या हो रहा?

लोग–इसने बेईमानी कर बहुत परिग्रह जोड़कर रखा है तो सरकार के द्वारा छापा डाला जा रहा है। तब लड़के ने कहा मैंने यही तो नियम लिया है परिग्रह संग्रह नहीं करूंगा।

पिताजी–ठीक है ये भी नियम रख ले, अब गुरु जी के पास तो चल।

रामू–ठीक है गुरुजी के पास जाकर गुरुजी नमोस्तु–3

गुरुजी–कहो रामू क्या बात है?

पिता जी–गुरुजी नमोस्तु–3

मेरे बेटे ने जो नियम लिए थे वही नियम मुझे भी दे दीजिए।

गुरु जी–तथास्तू साथ ही अनेक लोगों ने पांच पाप त्याग का नियम ग्रहण किया।

उपदेश का अभाव

पात्र- अध्यापक,छात्र-मोहित,डिग्री बेचने वाला,दुकान, नौकर,विद्यालय का प्रागंण,अनेक कक्षाओं में पढ़ रहे छात्र

प्रथम दृश्य

परीक्षा होने पर मोहित से पिता जी पूछते हैं अरे! मोहित तुम्हारा रिजल्ट आ गया।

मोहित-लापरवाही से, हाँ हो गये पास।

पिताजी- कितने नंबर आए।

मोहित-300 में से 300

पिताजी-अच्छा वह कैसे?

मोहित-हमारे तीन पेपर हुए थे उसमें पहले में 3,दूसरे में 0, तीसरे में 0 ,लगाओ हिसाब 300 हुए कि नहीं।

पिताजी-अबे नालायक पास तो हुआ नहीं और 300 में 300 की बात करता है देख तेरे बराबर जब जवाहरलाल नेहरु थे तो क्लास में फस्ट क्लास आते थे।

मोहित-हाँ-हाँ हमको पता है जब हमारे बराबर थे तो फस्ट क्लास पास होते थे और जब तुम्हारे बराबर थे तो देश के प्रधानमंत्री थे और तुम उनके पी.ए. भी नहीं बन पाए।

मोहित कुछ समय बाद घोड़े पर बैठकर शहर से गुजर रहा था तब एक व्यक्ति चौराहे पर बैठकर आवाज लगा रहा था 200 रुपये में बी.ए.की डिग्री जो भी लेना चाहे ले सकता है।

मोहित-भाई! हमको एक डिग्री दे दीजिए।

व्यक्ति-ठीक है ये लीजिए।

मोहित-थोड़ी दूर जाकर सोचता है इतनी सस्ती मिल रही अगर पढ़कर बी.ए.करेंगे तो 14 वर्ष लग जायेगा। लाखों रुपया खर्च होगा एक और ले लेना चाहिए।

मोहित-भाई! हमको एक डिग्री दे दीजिए तब डिग्री वाले ने कहा अभी आप एक डिग्री लेकर गये न!।

मोहित-डरते हुए हाँ-हाँ मैंने अपने लिए तो डिग्री ले ली है। अब ये डिग्री अपने घोड़े को दिलाना चाहता हूँ।

व्यक्ति-हमारे यहाँ जो डिग्री जाती है घोड़ों को नहीं दी जाती। गधों को दी जाती है।

मोहित-शर्मिदा होकर आगे बढ़ा और देखता है एक दुकान पर लिखा था हमारी दुकान पर शादी का सभी सामान मिलता है।

मोहित-दुकान पर खड़ा होकर देखता है।

नौकर-बताइये भाई आपको क्या दिखाएँ? सूट दिखाएँ, पेंट दिखाएँ, टोपी दिखाएँ बताइये भाई साहब शूज दिखाएँ,कटार दिखाएँ.....

मोहित-अरे भाई! ये सब छोड़ो पहले लड़की तो दिखाओ।

नौकर-दुत्कारते हुए अबे हट पागल कहीं का यहाँ सामान मिलता है कि लड़की मिलती है? मोहित दुखी होकर अपने घर पहुँचता है।

मोहित-स्कूल जाने पर गुरुजी प्रणाम मेरे लिए कोई सेवा

गुरुजी-नहीं बेटा! तुमने पूँछ लिया यही काफी है। पुनः मोहित एक दिन स्कूल नहीं गया।

अध्यापक-मोहित कल स्कूल क्यों नहीं आए?

मोहित-गुरुजी नहीं आ पाए।

गुरुजी-क्यों नहीं आए?

मोहित-शर्म लगती है।

गुरुजी-हम शर्म वर्म कुछ नहीं जानते बताओ स्कूल क्यों नहीं आए?

मोहित-सिर झुकाकर गुरु जी सगाई हो रही थी।

गुरुजी-आज से तू मेरा नहीं रहा।

मोहित–घर जाकर माँ माँ कहाँ है भूख लग रही खाना दे। पुनः कुछ समय बाद फिर मोहित दो दिन स्कूल नहीं गया।

अध्यापक– मोहित दो दिन से स्कूल क्यों नहीं आए?

मोहित–नहीं आ पाए।

गुरुजी–क्यों नहीं आए?

मोहित–शर्माते हुए गुरु जी शादी हो रही थी।

गुरुजी–अब से तू अपने माँ बाप का भी नहीं रहा।

मोहित–कुछ समय पश्चात पुनः तीन चार दिन स्कूल नहीं गया।

गुरुजी–स्कूल क्यों नहीं आए?

मोहित–नहीं आ पाए।

गुरुजी–क्यों नहीं आए?

मोहित–डिलेवरी हो रही थी तो अस्पताल चले गये थे।

गुरुजी–आज से तू अपना भी नहीं रहा।

मोहित–गुरुजी आपसे पूछना चाहता हूँ।

गुरुजी–बोलो क्या पूछना चाहते हो?

मोहित–जब सगाई हुई थी तब कहा था आज से मेरा नहीं रहा। जब शादी हुई तो कहा था माँ बाप का नहीं रहा और जब बच्चा हुआ तो कहा कि अब अपना नहीं रहा।

गुरुजी– 1.मोहित सगाई के पहले तू हमेशा हमारे आगे पीछे घूमता था। हमारे लिए सोचता था किंतु सगाई होते हमको भूलकर लड़की के बारे में खो गया। 2. शादी होने के पहले कहीं से आते ही द्वार से आवाज देता था माँ कहाँ हो भूख लग रही खाना दो किंतु शादी के बाद चुपचाप कब घर आता और कब चला जाता माँ को पता ही नहीं चल पाता। 3. और अब पुत्र होने पर अब अपने से अधिक पुत्र की चिंता रहेगी तो अपना भी नहीं रहा।

****

सत्यनारायण की कथा

पात्र– पंडित जी,पंडिताइन,बुढ़िया माँ,यजमान,यजमान की पत्नी,प्रधान,मुनादी वाला,ठेकेदार।

नगर का वातावरण.. पंडिताइन ने पंडित जी को आवाज देते हुए कहा–अजी सुनते हो,कहाँ चले गये देखो कल के लिए न तो घर में आटा दाल है, न सब्जी के लिए पैसे, बच्चे दूध के लिए परेशान हैं।

कैसे घर का काम चले आप कुछ काम के लिए जाइये न...।

सेठ जी के पास जाकर सेठ जी कुछ काम मिलेगा।

सेठ जी–कहाँ तक पढ़े हो।

पंडित जी–पढ़े..हा किताब पढ़ लेते हैं, टूटी फूटी गलती पढ़ने लगते।

सेठ जी–कितनी दर्जा तक पढ़े,कौन सी कक्षा तक पढ़े।

पंडित जी–रुहासे होकर इकउ कक्षा नहीं पढ़े।

सेठ जी–जाओ यहाँ से तुम क्या काम कर सकोगे?

पंडित जी आगे बढ़कर किसी ठेकेदार से कोई काम मिलेगा?

ठेकेदार–कितनी कक्षा पढ़े।

पंडित जी–उदास होकर पढ़े नहीं हैं।

ठेकेदार–मजदूरी करोगे।

पंडित जी–हाँ,दो घंटे काम करके पसीने–पसीने होकर बैठ जाते हैं, हमसे नहीं होगी मजदूरी....।

ठेकेदार–जाओ यहाँ से ,घर जाके हारे–थके दुखी मन से बैठ जाते।

पत्नी–अरे! क्या हुआ इतने थके–हारे से क्यों हो रहे?

पंडित जी–कोई काम नहीं मिला मजदूरी की तो चक्कर आने लगे।

पत्नी–पिताजी कथा वाचन करते थे आप भी......।

पंडित जी–ठीक कहा।

नगर में आवाज देते हुए, कथा वाचन कराओ, कथा वाचन कराओ...।

शाम को वापस आकर कोई भी नहीं मिला।

पत्नी–शहर में नहीं मिला कोई बात नहीं कोई गाँव में....।

पंडित जी–गाँव में जाकर चौपाल पर बैठते हुए जाप करने लगे।

नगरवासी–आप कौन है? कहाँ से आए हैं?

पंडित जी–देख नहीं रहे पंडित जी हैं।

ग्रामवासी–क्यों आए यहाँ पर ?

पंडित जी–यजमानों की याद आ गई तो चले आए।

ग्रामवासी–आप क्या करते है?

पंडित जी–कथा वाचन करते हैं।

ग्रामवासी–यहाँ कथा वाचन हो सकती।

पंडित जी–अवश्य हो सकती है सभी लोग एक साथ।

ग्रामवासी–चौकीदार गाँव में सरपंच जी को बुलाओ। और नगर में मुनादी कर दे कि कथा वाचन होगी।

चौकीदार–ठीक है, ग्राम में मुनादी सुनो! सुनो! सुनो! नगर में काशी से पंडित जी पधारे हैं उनके द्वारा कथा वाचन किया जाएगा।

कथा वाचन के मुख्य पात्र ग्राम के जमींदार जी होंगे।

सभी नगरवासी नगर के मध्य सभा स्थल पर एकत्र हो जाते हैं एक स्थान पर चौक पूरा गया। पंडितजी का आसन लगाया तथा यजमान जमींदार का आसन लगा दिया गया।

पंडित जी–यजमान हम जो कहें वही तुम कहना और हम जो करें वही तुम करना।

यजमान–ठीक है पंडितजी।

पंडित जी–यजमान बैठ जा चौकी पर।

यजमान–पंडितजी से–बैठ जा चौकी पर।

पंडित जी–हम तोसें कह रहे।

यजमान– हम तोसें कह रहे।

पंडित जी–यजमान का कंधा पकड़कर चौकी पर बैठाते हैं।

यजमान–पंडितजी को पकड़कर बैठाते हैं और नीचे दोनों लिपड़ते हुए आगे तक लुड़कते जाते हैं।

तब सभी तालियाँ पीटते हुए हँसते हैं वाह! क्या कथा हुई? तभी यजमान की पत्नी जोर–जोर से रोने लगती है।

लोग–अरे भाई! क्या बात है? तू रोकर अशुभ कर रही है देख जिंदगी में पहली बार ऐसी कथा देखी सुनी है।

यजमान की पत्नी–हा भैया हमें ऐसा पता होता कि इतनी लंबी कथा होना है तो हम पूरे में चौक पूर देते जो हमने थोड़े स्थान पर चौक पूरा है 'ठहाका'......।

कृति - **बिन खिले मुरझा गये**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज

संस्करण - तृतीय-2024 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनिश्री विशालसागर महाराज, मुनिश्री विभोरसागर जी
मुनिश्री विलक्ष्यसागर महाराज, मुनिश्री विपिनसागर जी

सहयोग - आर्यिका भक्तिभारती माता जी, क्षु.वात्सल्य भारती माता

संपादन कंपोजिंग - ब्र. आस्था दीदी 9660996425

ब्र. प्रदीप भैया-7568840873

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन पी 958, शांतिनगर जयपुर 94113336017

2. श्री नीरज जैन लखनऊ 9451251308
3. विशद साहित्य केन्द्र रेवाड़ी-9812502062
4. हरीश जैन विश्वासनगर दिल्ली 9136248971
5. नीरज जैन लखनउ 9451251308
6. राजेश जैन खकरोट वाले अंजनीनगर इंदौर 9425316970

पुण्यार्जक

श्री रमेश कुमार, महेश कुमार
संतोष कुमार
भामाशाह परिवार, बिलहरा वाले सागर
मो. 9425171232